रत्नमाला

का

व्याकरण ।

बाकी विद्या और लोगों

भारत वर्षियों के उपकार

के निमित्त लिखा ।

सं. १८७४

मुन्शी [illegible]

ओरछा [illegible]

नरसी [illegible]

सूची पत्र।

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१३	अनस्वार	अनुसार
२०,	१	अङ्गीकार	अनङ्गीकार
२२	१८	युग	युज्
२४	११	उन्मत	उन्मत्त
२६	१७	ΣΤΕΑ	ΣΤΕΛ
"	१९	खोंच	खींच
२७	८	ΤΙΔ	ΤΙΛ
४१	६	ΟΙΚ	ΟΙΧ
४६	४	α	α से
..	१०	πλυ	πλυθ
४७	५	में	में अभ्यास
५२	२	῾ΡΓ	῾ΡΑΓ
५४	११	γνυ	ννυ
५७	२	ΚΑΑΤ	ΚΛΑΥ
५८	१०	σ	α
६२	१	तीन	चार
७२	८	χεχρῦφων	χεχρύφθων
७७	८	के	के वार्त्ता
७९	१२	εμιγινυτην	εμιγνύτην
८१	१५	διδοσον	διδοσθον

८६	१३	न्यनाधिकं	न्यूनाधिक
८५	१०	ζῆν	ζῆν
८६	१५	θανετ	θανεῖ
८८	४	ΒΛΑ	ΒΑΛ
१०१	४	ποιήσσται	ποιήσεται
१०६	१२	σπερησομενο	σπαρησόμενο
११२	१५	γεγοναν	γεγονοτ
११८	१३	λελουμενο	λελυμενο
१२३	१०	εληλυθοντ	εληλυθοτ
१२८	४	ἔχτον	ἔχετον
१४४	६	ενεχειη	ενεχθείη
१५४	१२	θνε	θνα
"	१३	παρθ	πραθ
१५६	१	ἐδειται ई-	ἐδειται ईत्या-
१६०	७	βασνο	βασανο
१६१	२	διχο	διχα
..	३	कर्म्य	कर्म्मे
१६२	४	घमएड	घमराड
१६५	६	πενεθες	πενθες
"	७	घटान्	चटान
१६६	३	σχευος	σχευες

"	१२	σεηθος	στηθες
"	२०	σφε अपना(त्व)-	कुछ नहीं
१६७	९	मसल	नसल
१६८	२१	गाहिरा	गहिरा
१७२	१	न वरन	वरन
१७३	२	मतवाल	मत वा न
"	११	अधिक्य	आधिक्य
१७८	५	की	को
१८१	२	βασιλεσ-	βασιλισσα
१८२		यह आय से	(वह आय) से
१८३	१२	σωματιχ	σωματιχο
१८६	३	से	में
१८७	१०	छूछ	इछ
१८८	१६	χλλιον	χαλλιον
१९९	१५	वरिष्ट	वरिष्ठ
१९१	९	ἀγδοηχον-	ὀγδοηχοντα
१९५	१५	अल्प प्रणान्वित	अल्पप्राणान्वित
२०५	१	समाव	अभाव
२१३	४	के	को ८
"	५	होता	होना
"	६	अवश्यक	आवश्यक

२१६	५	तव	सव
२२३	१५	ό (सो)	ὁ
२२६	१५	ὁδατ	ὕδατ
२३०	१३	χρείτους	χρείττους
२३५	२	ἀπλόη ἀπλῆ	ἁπλόην ἁπλῆν
२५४	१	सम्पूर्णानां	सम्पूर्णता
"	१०	और	ओर
२५८	१०	विरारित	विचारित
२६०	१३	और	ओर
"	१५	प्रत्येके	प्रत्येक
२६१	२	τα κατ' εμε	कुछ नहीं
"	१७	और	ओर
२७०	१४	आन्त	आता
२७६	१५	साध्य नहीं	साध्य
२७७	३	γένεται	γένηται
२८१	८	दारिद्र	दरिद्र

यवनभाषा
का
व्याकरण

प्रथम अध्याय । अक्षरों का वर्णन

१। यवनभाषा में २४ अक्षर हैं। यथा ।

मूर्त्ति।		नाम।	उच्चारण।
A	α	ऑल्फॉ	आ वा ऑ
B	β	बेतॉ	ब
Γ	γ	गॉम्मॉ	ग वा ङ
Δ	δ	देल्तॉ	द
E	ε	एप्सीलौन	ऍ
Z	ζ	ज़ेतॉ	ज़
H	η	एतॉ	ए
Θ	θ	थेतॉ	थ
I	ι	योतॉ	इ वा ई वा य
K	κ	कॉप्पॉ	क

Λ λ	लॉम्ब्डॉ	ल
Μ μ	म्नू	म
Ν ν	न्नु	न
Ξ ξ	क्सी	क्स
Ο ο	ऑमीक्रॉन्	ऑ
Π π	पी	प
Ρ ρ	ह्रों	र
Σ σ ς	सिग्मॉ	स
Τ τ	तॉउ	त
Υ υ	उप्सीलोन्	उ वा ऊ
Φ φ	फी	फ
Χ χ	खी	ख
Ψ ψ	प्सी	प्स
Ω ω	ओमेगॉ	ओ

२। पहिली पंक्ति में जो प्रथम २ मूर्ति लिखी हुईहैं सो वाक्य के पहिले शब्द के आदि में ओर मनुष्य वा स्थान के विशेष

नाम के आदि में आती हैं द्वितीय २ मूर्ति और सब कहीं आती हैं और अक्षारहवें अक्षर की द्वितीय और तृतीय मूर्तिमें य- ह अन्तर है कि तृतीय जो है सो शब्द के अन्तही मे और द्वितीय मूर्ति और स ब कहीं आती है जहां प्रथम मूर्ति के आने का नियम नहीं है।

३। हिन्दी में आ ए ओ इन तीन स्वरों का ह्रस्वत्व नहीं होता है परन्तु यवनभाषा में होताहै और इस ह्रस्वत्व का चिह्न हम ने स्वर के ऊपर लिख दिया। यथा ऑ ऍ ऑ। यदि कोई कहे कि आ का ह्रस्वत्व अ है तो यह ठीक नहीं है क्योंकि अ का उच्चारण आ के उच्चारण से भिन्नहै और A का उच्चारण अ नहीं है बरन् ह्रस्व ऑ है।

४। फिर Y का उच्चारण हिन्दी में कभी नहीं होता है पर गुरुके मुख से सीखना आवश्यक है। यह इ वा उ के उच्चारण से कुछ थोड़ा सा मिलताहै। हमने नीचे के

चिह्न से उस को बनाया । यथा उ ऊ ।

५ । Γ का उच्चारण χ वा γ वा दूसरे γ के पहिले ङ होता है और सब कहीं ग ।

६ । Ι का उच्चारण शब्द के आदि में दूसरे स्वरके पहिले य होता है और सब कहीं इ वा ई ।

७ । Ζ का ठीक उच्चारण महाराष्ट्रों से होता है उत्तरदेशीयों से नहीं ।

८ । इन २४ अक्षरों से अधिक पुराने समय में और एक था सो छठवां था और उस की मूर्ति F Ϝ था । उस का उच्चारण व से मिलता था । परन्तु पीछे से उस का उच्चारण और तब उसका लेखन भी छोड़ दिया गया और अब केवल ६ छः का अंक समझा जाता है ।

९ । फिर और दो मूर्ति हैं जो अक्षर नहीं कहलाते हैं पर उच्चारण के लिये आवश्यक है सो अल्पप्राण और महाप्राण कहलाते हैं । महाप्राण का उच्चारण ह है और

अल्पप्राण केवल गले के खोलने को बताता है। अल्पप्राण की मूर्ति ᾿ और महाप्राण की ῾ है। ये स्वरकी बड़ी मूर्ति की बाईं ओर और उसकी छोटी मूर्ति के ऊपर लिखे जाते हैं पर संयुक्त स्वर में दूसरे स्वरके ऊपर लिखे जाते हैं। यथा Ἀ Ἁ ἀ ἁ εὐ εὑ केवल शब्द के आदिही में ये आते हैं।

१०। महाप्राण की मूर्ति ρ के साथ भी आता है जब कि वह शब्द के आदि में अथवा दूसरे ρ के पीछे आताहै। यथा ῥω πυῤῥο। इस दशा में ρ का उच्चारण अधिक बलसे होताहै।

११। इन से अधिक और तीन मूर्ति हैं जो बल कहलाते हैं इस लिये कि शब्द के जिस अङ्ग को बलके साथ पढ़ना है उसी अङ्ग के स्वरके ऊपर लिखेजाते हैं सो ये हैं तीक्ष्ण ˊ गुरु ˋ प्लुत ˜। इन का सकल भेद हम यहां नहीं लिखसकते हैं

केवल इतनाही कहते हैं कि प्रश्नवाचक शब्दों में तीव्र बल और जहां दो स्वर आपस में मिल गये तहां प्राय स्नुतबल आताहै । यथा ἄνθρωπος πότε καὶ δὲ τῶν ἧς ।

१२ । इनसे अधिक स्थितिसूचक प्रश्नसूचक और विस्मयसूचक भी मूर्ति हैं । स्थितिसूचक मूर्ति तीन हैं अर्थात् . जो περιοδο कहलाताहै और · जो κωλο कहलाताहै और , जो κομματ कहलाताहै । Περιοδο अधिक विलम्बकी स्थिति κωλο उस से न्यून और κομματ सब से थोड़े विलम्ब की स्थिति को बताता हैं । प्रश्नसूचक मूर्ति ; और विस्मयसूचक मूर्ति ! है ।

१३ । फिर और एक मूर्ति है सो शब्द के अन्तिम स्वर के लोप को बताताहै । यथा ἐπι के स्थाने ἐπ' और ἀνα के स्थाने ἀν' इस को अल्पमात्रा की मूर्ति

कभी नहीं समझना चाहिये ।

१४ । A ι υ ये तीन स्वर कब दीर्घ और कब ह्रस्व हैं यह लेखन से प्रगट नहीं होता है । एक एक शब्द में उन का दीर्घत्व वा ह्रस्वत्व सीखने होगा ।

१५ । निरे स्वरों से अधिक यवनभाषा में कई एक संयुक्त स्वर कहलाते हैं सो ये हैं ।

मूर्त्ति ।	उच्चारण	मूर्त्ति ।	उच्चारण ।
αι	आँइ	αυ	आँउ
ει	ऐ	ευ	औ
οι	औइ	ηυ	एउ
υι	उइ	ου	ऊ

जब किसी स्वर के नीचे ι लिखा जाता तब उसका उच्चारण नहीं होता है । यथा Aι ᾳ Hι ῃ Ωι ῳ ।

जब दो स्वर एक साथ आते हैं पर संयुक्त नहीं वरन् उनका पृथक २ उच्चारण होता है तब दूसरे के ऊपर ¨ ऐसे

दो बिन्दु लिखी जाती हैं। यथा αϊ ηϋ।

१८। व्यंजनों के कई एक गण हैं सो निम्नलिखित चक्र से समझ पड़ेंगे।

	अघोष।	घोष।	महाप्राणान्वित।	सानुनासिक।	संयुक्त।
कण्ठस्थ।	κ	γ	χ	γ	ξ
दन्त्य।	τ	δ	θ	ν	ζ
ओष्ठस्थ।	π	β	φ	μ	ψ
तालव्य।	λ ρ ς				

इति अक्षरों का वर्णन।

अभ्यास पत्र।

Δεῦτε πρός με πάντες οἱ κοπιῶντες καὶ πεφορτισμένοι, κἀγὼ ἀναπαύσω ὑμᾶς. Ἄρατε τὸν ζυγόν μου ἐφ' ὑμᾶς, καὶ μάθετε ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι πρᾷος εἰμι

καὶ ταπεινὸς τῇ καρδίᾳ· καὶ εὑρήσετε ἀνάπαυσιν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν. Ὁ γὰρ ζυγός μου χρηστός, καὶ τὸ φορτίον μου ἐλαφρόν ἐστιν.

द्वितीय अध्याय —— संधिका वर्णन।

१७। संस्कृत में जितनी संधि होती है उस से बहुत थोड़ी यवनभाषा में होती है तो भी इस थोड़ी सी संधि को जानना अतिआवश्यक है।

अथ व्यंजनों की संधि।

१८। जब एक शब्द के अन्तमें कोई अघोष आवे और दूसरा शब्द महाप्राण से आरम्भ हो तब उक्त अघोष महाप्राणान्वित होगा। यथा ἀπ' (जो ἀπο से निकला देखो १३) और οὗ मिलके ἀφ' οὗ होगा। वैसाही κατ' (जो κατα

से निकला) और ὁλου मिलके καθ' ὁλου होगा। समासों में भी वैसाही होता है। यथा δεκα और ἡμερα बहुव्रीहि समास होके δεχημερο होगा।

१९। जब धातु दुहराया जाता है (जैसा संस्कृत में लिट् और जुहोत्यादि गण में होता है) तब महाप्राणान्वित अक्षर अघोष में बदला जाता है। यथा ΘΕ धातु से θιθημι नहीं बरन् τιθημι और ΦΥ धातु से φεφυκα नहीं बरन् πεφυκα होता है।

२०। जब धातु अथवा किसी मूलशब्द के आदि में अघोष है और उस के अन्त में महाप्राणान्वित अक्षर है और किसी कारण से उस का महाप्राण निकल जाता है तब वह आदि का अघोष महाप्राणान्वित होता है। यथा ΤΡΕΦ धातु के पीछे जब σ लगे तब φ उस से

मिलके ψ होगा और नव θ होजावेगा। यथा $\theta\rho\epsilon\psi$। वैसा ही $\tau\rho\iota\chi$ के पीछे जब σ लगे तब $\theta\rho\iota\xi$ होगा।

२१। समासों को छोड़के और २ शब्दों में तीन व्यंजन एक साथ प्राय नहीं रह सकते हैं वरन् उन में से एक छूट जाता है। यथा $\dot{\epsilon}\sigma\phi\alpha\lambda$ और $\sigma\theta\alpha\iota$ मिलके $\dot{\epsilon}\sigma\phi\alpha\lambda\theta\alpha\iota$ होगा।

२२। जब दो असम व्यंजन मिलते हैं तब प्राय पहिला बदलके दूसरे के समान होता है। यथा ΓΡΑΦ धातु τo प्रत्यय से मिलके $\gamma\rho\alpha\pi\tau o$ और $\delta\eta\nu$ प्रत्यय से मिलके $\gamma\rho\alpha\beta\delta\eta\nu$ होता है। वैसाही ΛΕΓ धातु $\theta\epsilon\nu\tau$ प्रत्यय से मिलके $\lambda\epsilon\chi\theta\epsilon\nu\tau$ और $\tau\alpha\iota$ प्रत्यय से मिलके $\lambda\epsilon\kappa\tau\alpha\iota$ होगा। परन्तु $\dot{\epsilon}\kappa$ उपसर्ग का κ कभी नहीं बदलता है।

२३। जब दो अघोषों में दूसरा किसी कारण से बदलता है तब पहिला भी वैसा

ही बदलता है। यथा ἑπτα से ἑβδομο निकलता है और νυκτ' और ἡμεραν अव्ययीभाव समास होके νυχθημερον होता है।

२४। जब शब्द के निर्माण में निरे स्वर (अर्थात् जो संयुक्त स्वर न हो) के पीछे ρ आता है तब ρ दुहराया जाता है। यथा ἀ और ῬΑΦ धातु से ἀῤῥαφο और περι और ῬΕ धातु से περιῤῥο होगा। देखो १०।

२५। जब β वा φ के पीछे σ आता है तब वह π होके ψ बन जाता है और वैसाही जब γ वा χ के पीछे σ आताहै तब वह κ होके ξ बन जाताहै। यथा Ἀραβ और σι मिलके Ἀραψι और ὀνυχ और σι मिलके ὀνυξι होता है। देखो २०।

२६। M से पहिले πβφ प्रायः μ और κχ प्रायः γ और τδθζ प्रायः σ होते हैं।

यथा ΤΥΠ धातु से τετυμμενο और ΤΥΧ धातु से τετυγμαι और ᾈΔ धातु से ᾀσματ और βαπτιζ से βαπτισματ होते हैं।

२७ ।Tδθζ इनसे τ वा θ के पहिले σ होते हैं और σ के पहिले प्राय छूट जाते हैं। यथा ΠΙΘ धातु से πειστεο और ΦΡΑΔ धातुसे φρασι और σωματ से σωμασι होते हैं।

२८ ।N कण्ठस्थ अक्षरों के पहिले γ (अर्थात् ङ) और ओष्ठस्थ अक्षरों के पहिले μ और λ μ ν ρ के पहिले इन्हीं के सदृश और प्रत्ययों के σ के पहिले प्राय लुप्त होजाता है। यथा συν और γενες मिलके συγ-γενες और συν और ΦΕΡ मिलके συμφερ और ἐν और ΜΕΝ मिलके ἐμμεν और δαιμον और

σι मिलके δαιμοσι होते हैं। परन्तु εν उपसर्ग ρ और σ के पहिले प्राय नहीं बदलता है।

२५। जब ντ νδ νθ के पीछे σ आताहै तब उनका लोप होता है और अग्रस्थ ह्रस्व α ι υ दीर्घ और अग्रस्थ ε वा ο यथाक्रम ει वा ου हो जाता है। यथा παντ से πασι और ζευγνυντ से ζευγνυσι और τυπτοντ से τυπτουσι और λεχθεντ से λεχθεισι और ΠΕΝΘ से πεισομαι होते हैं।

अथ स्वरों की संधि।

२०। बहुत ह्रस्वस्वरान्त शब्द ऐसे हैं कि

जब दूसरे शब्द के आदि में कोई स्वर आता है तब वह अन्तिम स्वर लुप्त होता है। देखो १६ और १८ ॥

३१। थोड़े शब्द ऐसे हैं कि इन का अन्तिम स्वर वा संयुक्त स्वर अगिले शब्द के आदिम स्वर से मिल जाता है। यथा καὶ ἐγὼ मिलके κἀγὼ और τὸ ἐναντίον मिलके τοὐναντίον होते हैं।

३२। जब एक शब्द के निर्माण में दो स्वर वा संयुक्त स्वर एक साथ आते हैं तब निम्नलिखित चक्र के अनुस्वार मिल जाते हैं। यथा।

		आदिम स्वर									
		α	ε	η	ι	ο	ω	αι	ει	οι	ου
आन्तिम स्वर	α	α	α	α	ᾳ	ω	ω	αι	ᾳ	ῳ	ω
	ε	η वा ει	ει वा η	η	ει	ου	ω	ῃ	ει	οι	ου
	η		η		ῃ						
	ι	ι	ι		ι						
	ο	ω वा ου	ου	ω	οι	ου	ω		ου	οι	ου
	υ	υ	υ								
	ω				ῳ						

जानना चाहिये कि ε α मिलके प्राय ๆ होताहै केवल थोड़े रूपों में ε ι और ε ε मिलके प्राय ε ι केवल कभी २ ๆ होता है और o α मिलके प्राय ω पर थोड़े ही रूपों में o υ होता है। ऊपर के चक्र में जहां जहां कुछ नहीं लिखा गया तहां जानना चाहिये कि संधि नहीं होती है।

इति संधि का वर्णन।

अथ क्रियाओं का वर्णन।

तृतीय अध्याय धातु पाठ।

। क्रियाओं के विषय में तीन बातें समझनी आवश्यकहै अर्थात् १^म धातु २^य प्रत्यय ३^य प्रत्ययों के लगाने के पहिले धातु

के कौन से रूप होते हैं। धातु तो घर की नेव के सदृश है प्रत्ययों के लगाने के निमित्त धातु में जो कुछ लगता है सो घरकी भित्तियों से मिलता है और प्रत्ययों को छप्पर से मिलान कर सकते हैं।

३३। अब मुख्य २ धातु अर्थ समेत नीचे लिखते हैं।

'AΓ ले आ वा ले जा
'AΓ तोड़
'AΓEP इकट्ठा कर
'AEIΔ गा
'AIPE ले
'AIΣΘ जानले
'AITE मांग
'AKOΥ सुन
'AΛ कूद
'AΛEΞ बचा
'AΛIΦ लेप (लिप)
'AΛΛAΓ बदलदे
'AΛO पकड़ा जा
'AMAPT चूक
'AMEIB बदल
'ANΥ पूराकर
'AΠ लगा (आप)
'AP उठा
'AP जोड़
'APE प्रसन्न कर
'APKE रक्षा कर वा बहुत हो

ἈΡΝΕ	अङ्गी कार कर	ΑΣΚΕ	अभ्यास कर
ἈΡΠΑΓ	छीन	ἈΥΞ	बढ़ा
ἈΡΧ	पहिला हो वा आरम्भ कर		
ΒΑ	जा (गा)	ΒΛΕΠ	देख
ΒΑΛ	डाल	ΒΟΣΚ	चरा
ΒΑΠ	डुबो	ΒΟΥΛ	चाह
ΒΑΣΤΑΓ	उठा	ΒΡΕΧ	भिगा
ΒΑΣΤΑΔ	उठा	ΒΡΟ	खा
ΒΛΑΒ	हानि कर	ΒΛΑΣΤ	उग
ΓΑΜ	विवाह कर	ΓΕΝ	हो (जन)
ΓΕΛΑ	हंस	ΓΝΟ	जान (ज्ञा)
ΓΕΜ	भर जा	ΓΡΑΦ	लिख
ΔΑΚ	दान्तसे काट (दंश)	ΔΕΜ	घर बना
ΔΑΜ	वशीभूत कर (दम)	ΔΕΡ	चर्म्म निकाल
ΔΕ	बान्ध	ΔΕΧ	ग्रहण कर
ΔΕ	अभाव हो	ΔΙ	डर
ΔΕΙΚ	दिखा (दिश)	ΔΙΔΑΧ	सिखा

ΔO दे (दा)	ΔPA कर
ΔOK ज्ञान पड़	ΔΥ प्रवेश कर
ΔPA भाग (द्रु)	ΔΥNA सक
ʽE डाल	ʼEΛΠ आशा कर
ʽE पहिन	ʼEΛΥΘ जा वा आ
ʼEA रहन दे	ʼEM पेटमें से फेंक दे (वम)
ʼEΓEP जगा	ʼENEK उठा
ʽEΔ बैठ (सद)	ʼEΠ कह (वच)
ʼEΔ खा (अद)	ʽEΠ पीछे होले
ʼEΘ रीतिकी भान्तिसे कर	ʼEP कह
ʼEIK समान हो	ʼEP पूछ
ʼEIK वशीभूत हो	ʼEPX जा वा आ
ʼEIPΓ बन्द कर	ʼEΣ हो रह (अस)
ʽEΛ ले	ʽEΥΔ सो
ʼEΛA हांक	ʽEΥP ढूंढके पा
ʼEΛEΓX खण्डन कर	ʼEΥX प्रार्थना कर
ʽEΛK घसीट	ʼEXΘ बैर कर
	ZHTE ढूंढ
ZA जी (जीव)	ZΥΓ जोड़ (युग)
ZE उबल	ZΩ कटि बांध

'HΔ आनन्द कर (स्वाद)
'HK आ चुक
'HΣ बैठ (आस)

ΘAN मर
ΘAΥ आश्चर्य कर
ΘE रख (धा)
ΘEA ध्यान से देख
ΘEΛΩ 'EΘEΛ चाह
ΘEΥ दौड़ (धाव)
ΘIΓ छू
ΘPAΥ तोड़ डाल
ΘΥ यज्ञ कर (हु)

'I जा (इ)
'IA चंगा कर
'IΔ देख वा जान (विद)
'IK पहुंच
'IΛA प्रसन्न कर

KAΛE बुला वा नाम रख
KAΛΥΠ ढांप
KAM थक (श्रम)
KAMΠ झुका
KAΥ जला
KEI पड़ा रह
KEP मूंड
KINE चला
KΛA तोड़
KΛAΥ रो
KΛEI बन्द कर
KΛIN झुका
KΛΥ सुन (श्रु)
KOIMA सुला
KOΠ' काट
KOPE तृप्त कर
KOMIZ ले आ वा प्राप्त कर
KPA मिला

KPAΓ चिल्ला
KPEMΛ लटका
KPIN विचार कर
KPΥB छिपा (गुप)
KTA पा
KTEN वध कर
KΥ गर्भिणी हो
KΥΦ झुक

ΛAB पा (लभ)
ΛAΘ छिप
ΛAΛE बोल
ΛAMΠ चमक
ΛAX भाग्य से पा
ΛEΓ कह
ΛIΠ छोड़
ΛOΥ स्नान कर
ΛΥ गांठ आदि खोल

MAN उन्मत्त हो (मद)
MAΘ सीख
MAX लड़
MEΘΥ मतवाला हो
MEΛ चिन्तायमान हो
MEΛΛ करने पर हो
MEN रह (*UV*)
MEP भाग पा
MHNT बता
MIΓ मिला (मिश्र)
MIME नक़ल कर
MNA स्मरण कर (म्ना)
MΥ आंख मूंद

NE कात (नह)
NEM बांट
NEΥ पैर
NEΥ [illegible]
NIΠ [illegible]

’OΔ	गन्धित हो	’ONA	लाभदायक हो
’OI	समझ	’OΠ	देख
’OI	उठा	‘OPA	देख
’OIΓ	द्वार आदि खोल	’OPEΓ	आगे की ओर तन
’OIK	चला जा	’OPTΓ	खोद
’OΛ	नाश हो वा कर	’OPXE	नाच
’OM	किरिया खा	’OΦEΛ	धार

ΠAΓ	दृढता से लगा	ΠIΘ	मना
ΠAΘ	सुखदुःख भोग	ΠΛA	भरदे (पू)
ΠAI	मार	ΠΛAΓ	मार
ΠAIΓ	ठट्ठा कर	ΠΛAΔ	सांचे मे ढाल
ΠAΥ	करने को छोड़	ΠΛEK	मरोड़
ΠEMΠ	भेज	ΠΛEΥ	नाव पर चल (प्लु)
ΠEΠ	पका (पच)	ΠNEΥ	वायु बह
ΠEPΘ	भूमि आदि नाश कर	ΠNIΓ	गला घोट
ΠET	गिर (पत)	ΠO	पी (पा)
ΠET	उड़	ΠOIE	कर वा बना
ΠETA	फैला	ΠOP	चल
ΠI	पी (पा)	ΠPA	जला

ΠΡΑ	बेच	ΠΤΥΧ	लपेट
ΠΡΑΓ	काम कर	ΠΥΘ	हुक
ΠΡΙΑ	कीन	ΠΩΛΕ	बेच
ΠΤΥ	थूक		

ʽΡΑ	छिड़क	ʽΡΙΦ	फेंक (तिप)
ʽΡΑΓ	तोड़	ʽΡΥ	बह
ʽΡΑΦ	सी	ʽΡΥ	छुड़ा
ʽΡΕ	बह	ʽΡΩ	बलवान कर
ʽΡΕΠ	गुरुतर हो		

ΣΑΠ	सड़	ΣΠΕΝΔ	नपावन कर
ΣΒΕ	बुझा	ΣΠΕΡ	बो
ΣΕΒ	पूज	ΣΠΕΥΔ	शीघ्र कर
ΣΕΙ	हिला	ΣΤΑ	खड़ा हो
ΣΕΧ	लिये रह	ΣΤΑΓ	बूंद बूंद होके गिर
ΣΚΕΔΑ	बिथरा	ΣΤΕΓ	ढांपके जल्ला गम्य कर
ΣΚΕΠ	ध्यान से देख		
ΣΚΗΠ	टेक	ΣΤΕΑ	भेज वा ठीक करके रख
ΣΜΑ	पोंछ		
ΣΠΑ	खींच	ΣΤΕΝ	आह मार (स्तन)

ΣΤΕΡΓ	प्रेम कर	ΣΥΡ	घसीट
ΣΤΕΡΕ	हीन कर	ΣΦΑΓ	वध कर
ΣΤΙΓ	गोद	ΣΦΑΛ	ठोकर खिला
ΣΤΡΕΦ	घूमा	ΣΦΙΓΓ	गला घोंट
ΣΤΡΟ	बिछा (स्तृ)	ΣΧΙΔ	छेद (छिद्)
ΣΤΥΓ	बैर कर	ΣΩ	बचा
ΤΑΓ	क्रमसे रख	ΤΙ	बदला दे
ΤΑΡΑΧ	चखा	ΤΙΔ	नोच
ΤΑΦ	कबर दे	ΤΛΑ	डरख उठा
ΤΕΓΓ	भिगो	ΤΡΑΓ	खा
ΤΕΚ	जन	ΤΡΕΠ	फेर
ΤΕΜ	काट	ΤΡΕΦ	पोस
ΤΕΝ	तान (तन)	ΤΡΕΧ	दौड़
ΤΕΡ	घिस (तृ)	ΤΡΩΓ	खा
ΤΕΡΠ	आनन्द दे(तृप)	ΤΥΠ	मार
ΤΗΡΕ	रक्षा कर(त्रा)	ΤΥΧ	अदृष्टसे हो
Υ	बरस	ΥΦΑΝ	बिन
ΦΑ	कह (भा)	ΦΑΓ	खा (भक्ष)

ΦAN चमक
ΦEN वधकर(हन)
ΦEP उठा (भृ)
ΦΘA पहिलेकर वा हो
ΦΘEΓΓ शब्द कर
ΦΘEP बिगड़
ΦΘI घट वा क्षय हो
ΦΛEΓ जल

ΦPAΓ रोक
ΦPAΔ कह
ΦPIK रोमाञ्चित हो
ΦΥ हो (भू)
ΦΥΓ भाग
ΦΥΛAK पहरा दे
ΦΥP सान

XAN जंभा
XAP आनन्द कर(हृष)
XAPAK पत्थर आदि में खोद
XPA ईश्वरवाणी कह

XPI तेल मल
XPA काम में ले आ
XPE आवश्यक हो
XPΩ रंग दे
XΥ उण्डेल

ΨA मल
ΨAΛ वीणा आदि बजा
ΨAΥ छू

ΨEΓ निन्दा कर
ΨEΥΔ झूठ कह
ΨΥX ठण्ढा कर

ὨΘ ढकेल

१४। इन धातुओं से अधिक और बहुत क्रियाएं हैं जो धातुओं वा नामों से प्राय α ε o ευ αδ ιδ υδ αν υν लगाने से बनाये हुए हैं। इन का विभेद दिखाने के लिये हम धातुओं को बड़े २ अक्षरों से लिखेंगे और अन्यान्य क्रियाओं को छोटे २ अक्षरों से।

चतुर्थ अध्याय — क्रियाओं के रूप।

१५। पहिले जानना चाहिये कि क्रिया की भावना जो मन में होती है सो बहुत प्रकारों से हो सकती है परन्तु किसी भाषा में एक २ प्रकार की भावना एक २ रूपसे प्रगट नहीं किई जाती है। क्रिया की भावना विशेष छः भांति के प्रकारों से होती है अर्थात् कर्त्तृत्व-भाव काल पुरुष वचन लिङ्ग

२६। कर्तृत्व तीन प्रकार का है अर्थात् सकर्तृक परकर्तृक आत्मकर्तृक। सकर्तृक क्रिया वह है जो कर्ता के अधीन है यथा मैं बनाऊंगा सिंह आताहै। परकर्तृक क्रिया वह है जो कर्ता के अधीन नहीं हैं चाहे कर्ता गुप्त चाहे प्रगट हो यथा रोटी खाई गई पिता से पुत्र मारा जावे। आत्मकर्तृक क्रिया वह है जिसका कर्ता और कर्म दोनों एकही है यथा वे आप को भुलातेहैं अपने लिये मंगवा लो। सकर्तृक क्रिया भी दो प्रकार की है अर्थात् सकर्म्मक और अकर्म्मक।

२७। भाव बहुत प्रकार का है जैसा वार्त्ता इच्छा शक्ति आज्ञा प्रार्थना अभिप्राय पुनः पुनःकरण हेतुत्व नियम संज्ञा विशेषण इत्यादि।

२८। काल मुख्य जो तीन हैं अर्थात भूत भ-

विष्यत् वर्त्तमान परन्तु इन तीनों के तीन २ प्रकार हैं क्योंकि प्रत्येक काल में तीनों काल का सम्बन्ध और अपेक्षा हो सकती है। और २ वर्त्तमान दो और प्रकार का है अर्थात् व्यवहार-वर्त्तमान और विशेष-वर्त्तमान। सो सब मिलाके बारह प्रकार के काल हैं। यथा।

भूतकाभूत		वर्त्त काभूत		भवि काभूत	
भूत का	व्यव· वर्त्त	वर्त्त· का	व्यव· वर्त्त	भवि· का	व्यव· वर्त्त·
	वि· वर्त्त·		वि· वर्त्त·		वि· वर्त्त·
भूतका भविष्यत्		वर्त्त· का भविष्यत्		भवि·का भविष्यत्	

९। पुरुष तीन हैं अर्थात् प्रथम मध्यम उत्तम।

१०। वचन तीनहैं अर्थात् एकवचन द्विवचन बहुवचन।

४१। लिङ्ग तीन हैं अर्थात् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग क्लीव।

४२। अब कहना चाहिये कि इन मानसिक भावनाओं में किस २ का यवनभाषा में पृथक् २ रूप है।
लिङ्ग क्रिया के रूप से प्रगट नहीं होता है। वचन प्राय रूप से प्रगट होता है सदा नहीं। इसकाभेद पीछे जान पड़ेगा।
पुरुष सर्वदा रूपसे प्रगट होताहै।

४३। क्रिया के जिन रूपों में केवल वचन और २ पुरुष का अन्तरहै और किसी प्रकार का नहीं उन रूपों का समूह लकार कहलाता है। यवन भाषा में सतरह लकार हैं अर्थात् लट् लङ् १ लङ् २ लुङ् १ लृट् २ लृट् १ लच् २ लच् १ लच् २ लच् १लिट् २ लिट् ३ लिट् १ लोङ् २ लोङ् ३ लोङ् लिङ्लृट्। इन लकारों का अर्थ काल से

कुछ २ सम्बन्ध रखताहै सम्पूर्ण नहीं ।

४४। लट् का अर्थ वर्तमान के वर्तमान का है। जैसा वह जाता है।

लङ् का अर्थ भूत के वर्तमान का है।जैसा वह जाता था ।

तीनों लिट् का अर्थ वर्तमान के भूतकाहै। जैसा वह गया है ।

दोनों ल्टट् और दोनों ल्टच् का अर्थ वर्तमान के भविष्यत् का है । जैसा वह जावेगा ।

तीनों लोङ् का अर्थ भूत के भूत का है। जैसा वह गया था ।

लिङ्ट् का अर्थ भविष्यत् के भूत का है। जैसावह जा चुकेगा ।

दोनों लुङ् और दोनों लृच् का अर्थ किसी विशेष कालका नहीं है वरन् यही बताते हैं कि क्रिया का व्यापार किसी विशेष समय

में हुआ वा होनेवाला है। तथापि वार्त्ता और २ विशेषण भावों में उन का अर्थ सदा भूत काल का है।

४५। १ और २ लच् का अर्थ प्राय सदा परकर्त्तृकहै और १ और २ लट् सकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृक है।

१ लिट् और १ लोट् का अर्थ प्राय परकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृकहै और १ और २ लिट् और १ और २ लोट् सकर्त्तृक है।

१ और २ लुच् का अर्थ प्राय परकर्त्तृक है और १ और २ लुट् सकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृक है।

लिङ्ट् का अर्थ परकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृक है।

लट् और लुट् परकर्त्तृक सकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृक है

४६। यवनभाषा में भावों के केवल छः ही

पृथक् रूप हैं अर्थात् वार्त्ता संज्ञा विशेषण लेट् लिङ् लोट् । पहिले तीनों का अर्थ उनके नामों ही से प्रगट है ।
लोट् का अर्थ आज्ञा वा प्रार्थना है ।
लेट् के बहुत अर्थ हैं परन्तु वह प्राय लट् लिट् लृट् लुच् के वार्त्ता भाव के पीछे वाक्य के अधीन अङ्ग में आताहै। यथा मैं आया हूं कि आप से भेंट करूं यहां करूं यवनभाषा में लेट् भावमें होगा ।
लिङ् के भी बहुत अर्थ हैं विशेष कर के आशीर्व्वाद का परन्तु वह प्राय लङ् लुङ् लुच् लोङ् के वार्त्ता भाव के पीछे वाक्य के अधीन अङ्गमें आता है । यथा मैं गया था कि आपसे भेंट करूं यहां करूं यवनभाषा में लिङ् भाव में होगा ।

४७। कर्त्ता भाव के सब लकार मिलतेहैं। संज्ञा विशेषण और लिङ् भावों के लङ् और लोङ् को छोड़ के और सब लकार मिलतेहैं।

लेट् और लोट् में दोनों लट् और दोनों लच और लिङ्ट् नहीं मिलते हैं।

४८। प्रत्यय दो प्रकार के हैं अर्थात् परस्मैपद और आत्मनेपद के प्रत्यय।

लट् लङ् १ लङ् २ लङ् १ लट् २ लट् के प्रत्यय दोनोंपद के होते हैं।

१ लच २ लच १ लिट् २ लिट् १ लोङ् २ लोङ् के प्रत्यय केवल परस्मैपद के होते हैं।

१ लच २ लच ३ लिट् ३ लोङ् लिङ्ट् के प्रत्यय केवल आत्मनेपद के

होतेहैं।

४९।१लच २ लच को छोड़के और सब लकारों में परस्मैपद का अर्थ सकर्त्तृक है और आत्मनेपद का अर्थ परकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृक है।

पञ्चम अध्याय—भित्तियोंका निर्माण।

५०। हम कह आये हैं कि क्रिया का धातु घरकी नेव के समान है और प्रत्यय उस के छप्पर के समान है और इन प्रत्ययों के लगाने से पहिले जो कुछ धातु में लगता है सो उस की भित्ति यों के समान है।

प्रत्यय जो हैं सो पुरुष वचन भाव पद के अनुसार पृथक २ हैं और प्रत्ययों के लगने से पहिले जो धातु के रूप होते हैं सो लकारही के अनुसार पृथक २ हैं ।

सो अब हम लकारों के रूप लिखते हैं ।

५१ १ लट्

थोड़ीही क्रियाओं में मिलताहै । वह धातु से कुछ भी भिन्न नहीं है ।

५२ । १ लङ्

का मध्यस्वर बहुत क्रियाओं में धातु के मध्यस्वर से भिन्न है । यथा ΤΡΕΠ से τρaπ ΣΤΕΛ से σταλ ΚΤΕΝ से χταν । और इससे अधिक वार्त्ता

भाव में उस के आदि में आगम होता है।

अथ आगम का वर्णन।

५३। आगम लङ् १ लुङ् २ लुङ् १ लुच २ लुच १ लोङ् २ लोङ् ३ लोङ् के वाजी भावमें होताहै।

५४। मूल आगम ε है। उस के लगाने में ये नियम स्मरण रखना चाहिये।

१। जब धातु के आदि में ρ है तब ε के लगाने से वह दुहराया जाताहै। यथा 'PAΦ से ἐῤῥαφ।

२। जब धातु के आदि में स्वर वा संयुक्त स्वर है तब संधि के ठीक नियम से नहीं बरन् निम्नलिखित प्रकारों से

इस स्वर का संयुक्त स्वर से ε मिलताहै। यथा।

ε और α मिलके η होते हैं। ἈΜΑΡΤ से ἡμαρτ।

ε और ε मिलके प्रायः η होतेहैं। ΕΛΕΓΧ से ἠλεγχ।

परन्तु कितनी क्रियाओं में ει। ἘΠ से εἰπ।

ε और η मिलके η होतेहैं। ἩΚ से ἡκ

ε और ι मिलके दीर्घ ι होते हैं। ἸΚ से ἱκ।

ε और ο मिलके ω होतेहैं। ΟΛ से ὠλ

ε और υ मिलके दीर्घ υ होतेहैं ὙΓ से ὑ।

ε और ω मिलके ω होताहै। ὨΘ से ὠθ

ε और αυ मिलके ηυ होतेहैं ΑΥΞ से ηὔξ।
ε और αι मिलके ῃ होतेहैं ΑΙΣΘ से ᾐσθ।
ε और ει मिलके ει होतेहैं ΕΙΚ से εἰκ
ε और οι मिलके ῳ होतेहैं ΟΙΚ से ᾠχ।
ε और ευ मिलके ευ वा ηυ होतेहैं ΕΥΡ से εὐρ। ΕΥΧ से ηὔχ।
ε और ου मिलके ου होतेहैं। οὐταδ से οὐταδ।
३। इन स्वरादिक धातुओं का आगम ε से होता है। ΑΓ (तोड़) ΑΛΟ ΕΙΚ ΕΛΠ ΟΡΑ ΩΘ। यथा ἐαγ ἑαλο।
४। ΒΟΥΛ ΔΥΝΑ ΜΕΛΛ का आगम ε से हो सकताहै परन्तु प्राय η से होताहै। यथा ἠβουλ ἠδυνα।

५५। ἈΓ(लेजा) ओर ἈΡ(जोड़) का १ लट् ἀγαγ ἀραρ हैं।

५६। २ लट्

में धातु के अन्त में σ लगताहै। यथा ΤΥΠ से τυψ ΛΕΓ से λεξ ΤΙ से τισ ΠΕΡΘ से περσ ΦΡΑΔ से φρασ।

१। जब धातु के अन्तमें ह्रस्व स्वर है तब वह प्राय दीर्घ होता है अर्थात् ε η होताहै। यथा ΠΟΙΕ से ποιησ। α प्रायः η होताहै ὈΝΑ से ὀνησ। पर कभी २ α रहताहै। ἘΑ से ἐασ। ο ω होताहै। ΓΝΟ से γνωσ।

२। इन धातुओं के २ लट् में मध्यस्वर दीर्घ होता है। ΛΑΧ से ληξ ΛΑΒ से ληψ ΛΑΘ से λησ ΠΑΓ

से πηξ ῾PΥ(बह) से ῥευσ ῾PAΓ से ῥηξ TPX से τευξ ΦPΓ से φευξ ΠΙΘ से πειθ ΔΙ से δειθ । ᾿ΟΦΕΛ ΧΑΡ ।

३। इन धातुओं का २ लूट σ के लगाने के पहिले अपने अन्त में ε लगाना है सो η बन जाता है ।

AIΣΘ ᾿ΑΛΕΞ ῾ΑΜΑΡΤ ᾿ΑΥΞ ΒΛΑΣΤ ΒΟΣΚ ΒΟΥΛ ᾿ΕΜ ῾ΕΥΔ ῾ΕΥΡ ΘΕΛ ΜΑΘ ΜΑΧ ΜΕΛ ΜΕΛΛ ᾿ΟΔ ᾿ΟΙΧ ᾿ΟΙ (समझ) ᾿ΟΦΕΛ ΧΑΡ ᾿ΩΘ ᾿ΟΔ का δ ζ होता है ।

४। ΔΑΜ δαμα होके और ῾ΕΛΚ ἑλκυ होके σ लगाते हैं ।

५। कितनी अनेकाक्षरान्वित ε अन्त क्रियाओं

का σ निकलभी सकता है। यथा KOMIΔ से χομι βιβαδ से βιβα।

५७। २ लुङ्

में प्राय वैसाही σ लगता है और ऊपर के ५८।१।२।३।४ में जो कुछ २ लट् के विषय में लिखा है सो २ लुङ् में भी घटता है। यथा ΛΕΓ से λεξ ΠΟΙΕ से ποιησ ʽΡΥ से ῥευσ ʼΟΦΕΛ से ὀφειλησ।

१। परन्तु जिनधातुओं के अन्त में λ μ ν ρ हैं उन में σ नहीं लगता है वरन् धातु का मध्यस्वर दीर्घ होताहै। यथा MEN से μειν ΣΤΕΛ से στειλ।

२। ʽΕ (डाल) ΘΕ ΔΟ में σ के स्थाने χ लगताहै। यथा ἧχ ἐθηχ ἐδωχ बानी भाव में होते हैं।

५८। १ लच

में धातु का मध्यस्वर वैसाही बदलताहै जैसा १ लुङ् में और अन्त में कुछ नहीं लगताहै। यथा τρaπ

५९। १लच

में भी धातु का मध्यस्वर वैसाही बदलता है और अन्तमें ησ लगताहै। यथा τρaπησ।

६०। २लच

में क्रिया के अन्त में θ लगता है। यथा ΛΕΓ से λεχθ।

१।५८।१में जो कुछ २ लुङ् के विषय में लिखाहै सो २ लच में भी घटता है। यथा ΠΟΙΕ से ποιηθ। ΠΡΑ (बेच) से πραθ।

२। कितनी स्वरान्त क्रियाओं में σ बीच

में लगता है। यथा τελε से τελεσθ ΆΚΟΥ से ἀκουσθ।

३। जिन धातुओं के अन्त में ἐλ ερ εμ ἐν है वे २ लच् में ε को α बदल देते हैं। यथा ΣΤΕΛ से σταλθ ΣΠΕΡ से σπαρθ।

४। ΚΡΙΝ ΚΛΙΝ ΤΕΝ ΚΤΕΝ ΠΛΥΝ का ν २ लच् में छूट जाता है। यथा κριθ κλιθ ταθ κταθ πλυ।

५। इन धातुओं का २ लच् ε लगाके θ लगाते हैं। ΒΟΥΛ ΓΑΜ ΜΕΛ ΝΕΜ ΟΙ (समझ) यथा βουληθ γαμηθ οἰηθ।

६१ २लच्

में क्रिया ठीक २ लच् के अनुसार बदलना है और अन्त में θησ लगता है यथा

ποιηθησ πραθησ τελεσθησ σπαρθησ κριθησ νεμηθησ।

६२। १ लिट्

के अन्त में κ वा महाप्राण लगता है और आदि में होता है।

अथ अभ्यास का वर्णन।

६३। अभ्यास तीनों लिट् और तीनों लोट् और २ लिङ्ट् के सब भावों में होताहै।

६४। उसका अर्थ यह है कि क्रिया का प्रथम अक्षर दुहराया जाता है और जब प्रथम अक्षर व्यंजन है तब दोनों के बीच में ε आ जाता है।

१। जब क्रिया के आदि में ρ है तब ε दोनों ρ के पहिले ही आता है। यथा ῬΙφ से ἐῤῥιφ।

२। जब क्रिया के आदि में संयुक्त व्यंजन है तब यह दुहराया नहीं जाता है केवल ε उस के पहिले आता है। यथा ΨΑΛ से ἐψαλχ।

३। जब क्रिया के आदि में दो व्यंजन है तब प्राय वैसाही होताहै सदा नहीं यथा ΣΠΕΡ से ἐσπαρ। किन्तु ΓΡΑΦ से γεγραφ।

४। ΛΑΒ ΛΑΧ ΜΕΡ ΨΕ में प्रथम अक्षर नहीं दुहराया जाताहै बरन् ει आदि में लगताहै। यथा ΛΑΒ से εἰληφ।

५। जब क्रिया के आदि में स्वर वा संयुक्त स्वर है तब अभ्यास प्राय ठीक ऊपरि लिखित आगम के समान होता है।

६। इन स्वरादिक धातुओं का अभ्यास पहिले स्वर और पहिले व्यंजन के दुह·

गने से होता है तब दूसरा स्वर दीर्घ होता है ।

ΕΓΕΡ से εγηγερχ ΕΛΑ से εληλαχ ΕΛΥΘ से εληλυθ 'ΟΛ से ὀλωλ ΕΝΕΚ से ενηνοχ 'ΟΜ से ὀμωμοχ 'ΟΔ से ὀδωδ 'ΑΛΙΦ से ἀληλιφ 'ΟΡΥΓ से ὀρωρυγ ϑΙΣΤΑ से ἑστα होता है।

८५।'जब क्रिया के अन्तमें दन्त्य अथवा तालव्य व्यंजन अथवा स्वर वा संयुक्त स्वर है तब χ १ लिट में लगताहै और जब उसके अन्तमें कण्ठस्थ अथवा ओष्ठस्थ व्यंजन है तब महाप्राण लगता है अर्थात् अन्त्य व्यंजन महाप्राणान्वित होता है। यथा ΨΑΛ से ἐψαλχ ΠΝΕΥ से πεπνευχ ΤΥΠ से τετυφ ΛΕΓ से λελεχ।

१। χ से पहिले δ θ छूट जाते हैं। यथा ΦPAΔ से πεφραχ।

२। जो कुछ ५८।१ में २ लट् के विषय में लिखा है सो १ लिट् में भी घटता है। यथा ΓNO से ἐγνωχ।

३। इन धातुओं के १ लिट् में मध्यस्वर दीर्घ होता है। ΛAX से εἰληχ ΛAΘ से λεληθ ΛAB से εἰληφ TYX से τετευχ ΠΙΘ से πεπειχ ΔΙ से δεδοιχ।

४। इन धातुओं का १ लिट् ε लगाके χ लगाते हैं। AMAPT से ἡμαρτηχ MAΘ से μεμαθηχ MEN से μεμενηχ NEM से νενεμηχ XAP से κεχαρηχ ὈΛ से ὀλωλεχ

५। जो कुछ ६०।१३ में २ लङ् के विषय

में लिखाहै सो २ लिट में भी घटना है। यथा ΣΠΕΡ से ἐσπαρχ।

८। जो कुछ ६०।४ में २ लुङ् के विषयमें लिखा है सो २ लिट में भी घटना है। यथा ΚΡΙΝ से κεκριχ।

८८। २लिट

के अन्तमें कुछ नहीं लगता है परन्तु मध्यस्वर प्राय किसी न किसी प्रकार से बदलता है अर्थात् ।

१। जब मध्यस्वर ε है तब ο होताहै। यथा ΦΘΕΡ से ἔφθορ ΓΕΝ से γεγον।

२। जब ι है तब οι होता है। यथा ΛΙΠ से λελοιπ।

३। जब और कोई ह्रस्व स्वर है तब प्राय बढ़ाया जाताहै। यथा ΦΥΓ से πεφευγ ΟΔ से ὀδωδ।

४। ΛΑΧ से λελογχ ΠΑΘ से πεπονθ ̔ΡΓ से ἐῤῥωγ।

६७। ३लिट्

के अन्तमें प्राय कुछ नहीं लगताहै परन्तु ।

१।५८।२ में जो कुछ लिखाहै सो ३लिट् में भी वर्त्तता है यथा πεποιη।

२।६०।२ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी वर्त्तताहै यथा ΧΡΙ से κεχριο ΓΝΟ से ἐγνωσ।

३।६०।३ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी वर्त्तता है। यथा ΣΤΕΛ से ἐσταλ।

४।६०।४ में जो कुछ लिखा है सो ३लिट् में भी वर्त्तता है। यथा ΤΕΝ से τετα।

५। ΤΡΕΠ ΤΡΕΦ ΣΤΡΕΦ का ε α होता है। यथा ἐστραφ।

६। ΒΟΥΛ ΜΑΧ ̓ΟΙΧ ΧΑΡ के

३ लिट में ε लगताहै। यथा μεμαχη।

६८। १ २ ३ लोङ्-

यथाक्रम १ २ ३ लिट के ठीक समान हैं केवल उनके आदि में आगम लगता है। यथा ἐπεπνευκ ἐλελεχ ἐπεποιηκ ἐπεφευγ ἐλελοιπ ἐχεχριο ἐμεμαχη।

११ जब लिट का पहिला अक्षर स्वरवा संयुक्त स्वर है तब लोङ् उससे कुछ भी भिन्न नहीं है यथा ἑσταλ εἰληφ ἐληλυθ।

६९। लिट्लट

३ लिट के ठीक समान है केवल उसके अन्तमें σ लगता है। यथा πεποιησ ἐστραψ।

७०। लट

थोड़ी क्रियाओं में धातु के समान है पर

४। ΛΑΧ से λελογχ ΠΑΘ से
πεπονθ ῬΓ से ἐῤῥωγ।

६७। ३लिट

के अन्तमें प्राय कुछ नहीं लगताहै प-
रन्तु ।

१।५६।२ में जो कुछ लिखाहै सो ३लि-
ट में भी घटना है यथा πεποιη।

२।६०।२ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट
में भी घटताहै यथा ΧΡΙ से κεχριο,
ΓΝΟ से ἔγνωσ।

३।६०।३ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट
में भी घटना है। यथा ΣΤΕΛ से ἔσταλ।

४।६०।४ में जो कुछ लिखा है सो ३लिट
में भी घटना है। यथा ΤΕΝ से τετα।

५। ΤΡΕΠ ΤΡΕΦ ΣΤΡΕΦ का ε
α होता है। यथा ἔστραφ।

६। ΒΟΥΛ ΜΑΧ ΟΙΧ ΧΑΡ के

३ लिट में ε लगताहै। यथा μεμαχη।

६८।   १ २ ३ लोङ्

यथाक्रम १ २ ३ लिट के ठीक समान हैं केवल उनके आदि में आगम लगता है। यथा ἐπεπνευκ   ἐλελεχ ἐπεποιηκ ἐπεφευγ ἐλελοιπ ἐχεχριο ἐμεμαχη।

१। जब लिट का पहिला अक्षर स्वरवा संयुक्त स्वरहै तब लोङ् उससे कुछ भी भिन्न नहीं है यथा ἑσταλ εἰληφ ἐληλυθ।

६९।   लिङ्लृट

३लिट के ठीक समान है केवल उसके अन्तमें σ लगता है।यथा πεποιησ ἐστραψ।

७०।   लट

थोड़ी क्रियाओं में धातु के समान है पर

न्त प्राय उसमें धात किसी न किसी प्रकारसे बढ़ाया जाताहै चाहे मध्यमें कुछ मिला देने से चाहे अन्तमें कुछ लगा देने से चाहे दोनों प्रकार से । बहुत थोड़ी क्रियाओं में लट् धातसे छोटा भी है ।

१। इन धातुओं का लट् अन्तमें νυ लगाता है । ἈΓ (तोड़) ΔΕΙΚ ἘΙΡΓ ΖΥΓ ΜΙΓ ὈΙΓ ὈΜ ΠΑΓ ῬΑΓ। ΠΑΓ πηγνυ ῬΑΓ ῥηγνυ होते हैं।

२। ὈΛ λ को दुहराके ὀλλυ होताहै।

३। इनधातुओं का लट् अन्तमें γνυ लगाताहै ।

Ἑ (पहिन) ΖΩ ΚΡΑ ΚΟΡΕ ΚΡΕΜΑ ΠΕΤΑ ῬΩ ΣΒΕ ΣΚΕΔΑ ΣΤΡΟ ΧΡΩ।

ΚΡΑ κεραννυ और ΣΤΡΟ στορεννυ वा στρωννυ होतेहैं।

४। इन धातुओं का लट् अन्त में αν लगता है। ΑΙΣΘ ἉΜΑΡΤ ΒΛΑΣΤ ἘΧΘ ἈΤΞ ΘΙΓ ΛΑΧ ΛΙΠ ΛΑΒ ΛΑΘ ΜΑΘ ΠΤΘ ΤΥΧ।

ΘΙΓ से लेके ΤΥΧ तक इन सभों के मध्यस्वर के पीछे सानुनासिक व्यंजन लगता है। यथा θιγγαν λαμβαν λανθαν τυγχαν।

५। इन धातुओं का लट् अन्त में ιν लगता है।

ΒΑ ῬΑ। यथा βαιν ῥαιν।

६। इन धातुओं का लट् अन्त में σκ लगता है।

ἈΡΕ ΒΡΟ ΓΝΟ ΔΙΔΑΧ ΔΡΑ(भाग) ΘΑΝ ἹΛΑ ΜΕΘΥ ΜΝΑ ΠΙΡΑ(बेच)। ΘΑΝ θνα होता है और वह और ΒΡΟ ΓΝΟ ΜΝΑ के स्वर दीर्घ होते हैं। यथा

φυλασσ वा φυλαττ ΠΤΥΧ
से πτυσσ वा πτυττ ΦΡΑΓ
से φρασσ वा φραττ।
१६। ΘΕΥ ΝΕΥ ΠΛΕΥ ΠΝΕΥ
ΡΥ (बह) ΧΥ लट् में अपना २ स्वर
वा संयुक्त स्वर ε बनाते हैं अर्थात् θε
νε πλε πνε ρε χε होतेहैं।
१७। ΓΑΜ ΔΟΚ ΈΜ ΏΘ ΣΤΥΓ
का लट् अन्तमें ε लगाता है।
१८। ΔΑΜ का लट् अन्तमें σ लगाता
है।
१९। ΈΛΚ का लट् अन्तमें υ लगा-
ता है।
२०। इनधातुओं का लट् आदि में अभ्या-
स पाता है और उसके साथ ι पड़ता है।
ΓΕΝ से γιγν ΓΝΟ से γιγνωσκ
ΔΟ से διδο ΔΡΑ(भाग)से διδρασκ

ʽΕ (डाल) से ἱε ΘΕ से τιθε ʼΟΝΑ से ὀνινα ΠΛΑ से πιμπλα ΠΡΑ (जला) से πιμπρα ΠΡΑ (बेच) से πιπρασκ ΠΕΤ (गिर) से πιπτ ΤΕΚ से τικτ ΜΝΑ से μιμνησκ ΣΤΑ से ἱστα। जब ΓΕΝ और ΓΝΟ का मूल γ निकल भी सकताहै। यथा γιν γινωσκ।

२१। बहुत ν-अन्त और ρ-अन्त क्रियाओं का लट् मध्यस्वर को संयुक्तस्वर कर देते हैं। यथा ΚΤΕΝ से κτειν ΜΑΝ से μαιν। सब बनाई हुई αν-अन्त क्रियाओं का लट् वैसाही होताहै।

२२। प्राय λ-अन्त क्रियाओं का लट् λ को दुहरताहै। यथा ΣΤΕΛ से στελλ। किन्तु ʼΟΦΕΛ ὀφειλ होताहै।

२३। ʼΕΔ का लट् ἐσθι है।

२४ ΠΑΘ का लट् πασχ है।

२५। NE का लट् $\nu\eta\theta$ है।

७१। लङ्

ठीक लट् के समान होता है। यथा ἐδακν ἐλειπ।

इति भित्तियों का निर्माण।

षष्ठ अध्याय—कृदन्त का लगन।

७२। पहिले हम प्रत्ययों को लिखेंगे वे नहीं जैसे पदनमाला में मिलते हैं वरन् ऐसे जैसे प्रथम काल में ये जहां तक अनुमान से जाना जाता है।

रूप	पुरुष	परस्मै पद			आत्मने पद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम रूप	प्र॰	τι	τον	ντι	ται	σθον	νται
	म॰	σι	τον	τε	σαι	σθον	σθε
	उ॰	μι		μεν	μαι	μεθον	μεθα
द्वितीय रूप	प्र॰	τ	την	ντ	το	σθην	ντο
	म॰	σ	τον	τε	σο	σθον	σθε
	उ॰	μ		μεν	μην	μεθον	μεθα
लोट्	प्र॰	τω	των	ντων	σθω	σθων	σθων
	म॰	θι	τον	τε	σο	σθον	σθε
संज्ञा		ναι			σθαι		
विशेषण		ντ			μενο		

७३। इस चक्र के विषय में पाठक लोग नीन बातें देखेंगे।

१। लोट में उत्तम पुरुष नहीं है।

२। परस्मैपद में उत्तम पुरुष का द्विवचन नहीं है।

३। संज्ञा भाव और विशेषण भावमें पुरुष नहीं और संज्ञाभावमें वचनभी नहीं होता है। क्रिया के विशेषण में तो और २ विशेषणों की नाई लिङ्ग वचन कारक होते हैं पर इसका वर्णन पीछे होगा।

४। ऊपरि लिखित प्रत्ययों के देखने से जान पड़ेगा कि उनमें बहुत सम्बन्ध है। उत्तम पुरुष सदा µ से आरम्भ होता है।

प्रथम पुरुष के एकवचन से उसका बहुवचन प्राय ৮ के आदि में लगाने से बनता है।

आत्मनेपद का प्राय प्रत्येक रूप परस्मैपद के उसी रूप से उसे कुछ बढ़ाने से बना है। यथा τι से ται μεν से μεθα τω से σθω।

५। पण्डितों को स्पष्ट देख पड़ेगा कि यवन क्रिया संस्कृत क्रिया से कितना मिलता है।

७४। ये प्रत्यय इसी प्रकार से सब क्रियाओं के १ लिट् और १ लोट् में और थोड़ी क्रियाओं के थोड़े और लकारो में भी लगते हैं। अवशिष्ट सब लकारों में प्रत्यय के पहिले कोई सम्बन्धी स्वर आ जाता है।

७५। अब बतावेंगे कि ऊपरिलिखित चक्र के किस २ रूप के प्रत्यय किस २ लकार में लगते हैं।

७६। जिसको हम ने प्रथम रूप कहा है उस रूप के दोनों पद के प्रत्यय इन ल-

कारों में लगते हैं।
लट् के वार्त्ता और लेट भावमें।
१ और २ लट् के वार्त्ता भावमें।
१ और २ लुङ् के लेट भाव में।
७७। उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।
१ और २ लिट् के वार्त्ता और लेट भाव में।
१ और २ लच् के लेट भावमें।
७८। उसी रूप के आत्मनेपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।
३ लिट के वार्त्ता भाव में।
१ और २ लच् के वार्त्ता भावमें।
लिट्ट के वार्त्ता भावमें।
७९। जिसको हमने द्वितीय रूप कहा है उस रूप के दोनों पद इन लकारों में लगते हैं।

लङ् में ।
लट के लिङ् मे ।
१ और २ लुङ् के वार्त्ता और लिङ् भावमें ।
८०। उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।
१ और २ लिट के लिङ् में ।
१ और २ लुङ् के वार्त्ता और लिङ् में ।
१ और २ लट के लिङ् में ।
१ और २ लोङ् में ।
८१। उसी रूप के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।
२ लोङ् में ।
लिट के लिङ् भावमें ।
१ और २ लुङ् के लिङ् भावमें ।
८२। लोट के दोनों पद के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।
लट के लोट भावमें ।

१ और २ लुङ् के लोट् भावमें।

८३। उस के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के लोट् भावमें।

१ और २ लृच् के लोट् भावमें।

८४। उस के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगतेहैं।

१ लिट् के लोट् भावमें।

लिङ्ट् के लोट् भावमें।

८५। संज्ञा और विशेषण के दोनों पदके प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

लट् के स और वि भावों में।

१ और २ लुङ् के स और वि भावों में।

१ और २ लट् के स और वि भावों में।

८६। उन के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के स और वि भावों में।

१ और २ लच के स॰ और वि॰ भावों में ।

८७। उनके आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

इ लिङ्के स॰ और वि॰ भावों में ।

लिङ्ट के स॰ और वि॰ भावों में ।

१ और २ लच के स॰ और वि॰ भावों में ।

अथ ३ लिट और ३ लोट्-का वर्णन ।

८८। ऊपरिलिखित चक्र के अनुसार आत्मनेपदही के प्रत्यय लगते हैं। केवल बहुवचन का σθων σθωσαν भी हो सकता है। और प्रत्ययों के पहिले इनदो लकारों का अन्तभाग संधि के नियमों से बदलता है। यथा τετυπ और μαι मिलके τέτυμμαι और ἐλελεγ और

σο मिलके ἐλέλεξο और ἐπεφραδ और μην मिलके ἐπεφράσμην और πεπλεχ और μενο मिलके πεπλεγμενο होतेहैं। और व्यंजनान्त क्रियाओं में प्रत्यय के σθ. का σ लुप्त होजाताहै। यथा τετυπ और σθω मिलके τετύφθω और πεπειθ और σθαι मिलके πεπεῖσθαι होतेहैं। इस से अधिक इन ३ बातों को जानरखो।

१। प्रत्यय के μ के पहिले दो γ में से एक निकल जाताहै। यथा ΣΦΙΓΓ से ἐσφιγμην।

२। प्रत्यय के μ के पहिले दो μ में से एक निकलताहै। यथा ΚΑΜΠ का π संधि के नियम के अनुसार μ होजाताहै पर μεθα से मिलके κεκαμμεθα होजाताहै।

३। व्यंजनान्त क्रियाओं में और उन स्वरान्त क्रियाओं में भी जो σ लगाते हैं प्रथम और द्वितीय रूप के प्रथम पुरुष का बहुवचन नहीं होता है और किसी क्रिया के लेट् और लिङ् का कोई रूप नहीं होता है। इन का अर्थ अन्यप्रकार से प्रगट किया जाता है।

८९। अब इन दो लकारों के उदाहरण देते हैं।

१। स्वरान्त धातु ΠΟΙΕ।

३ लिट्

वाच्य भाव।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰	πεποίηται	πεποίησθον	πεποίηνται
म॰	πεποίησαι	πεποίησθον	πεποίησθε
उ॰	πεποίημαι	πεποιήμεθον	πεποιήμεθα

लोट् भाव ।

प्र· πεποιήσθω	πεποιήσθων	πεποιήσθων वा σθωσαν
म· πεποίησο	πεποίησθον	πεποίησθε

संज्ञा भाव ।

πεποιῆσθαι

विशेषण भाव ।

πεποιημενο

३ लोट्

प्र· ἐπεποίητο	ἐπεποιήσθην	ἐπεποίηντο
म· ἐπεποίησο	ἐπεποίησθον	ἐπεποίησθ
उ· ἐπεποιήμην	ἐπεποιήμεθον	ἐπεποιήμεθ

२। σ लगाने वाला स्वरान्त धातु ΣΕΙ

ৼলিট্।

সাৰ্ব্ব ভাব।

প্ৰ·σέσεισται	σέσεισθον	
ম·σέσεισαι	σέσεισθον	σέσεισθε
উ·σέσεισμαι	σεσείσμεθον	σεσείσμεθα

লোট্ ভাব।

প্ৰ·σεσείσθω	σεσείσθων	σεσείσθων-বা σεσείσθωσαν
ম·σέσεισο	σέσεισθον	σέσεισθε

সংজ্ঞা ভাব।

σεσεῖσθαι

বিশেষণ ভাব।

σεσεισμενο

ৼলোট্।

প্ৰ·ἐσέσειστο	ἐσεσείσθην	
ম·ἐσέσεισο	ἐσέσεισθον	ἐσέσεισθε
উ·ἐσεσείσμην	ἐσεσείσμεθον	ἐσεσείσμεθα

४। ओष्ठस्थवर्णं जनान्त धात KPTB

१ लिट

वाच्ये भाव।

प्र·κέκρυπται	κέκρυφθον	
म·κέκρυψαι	κέκρυφθον	κέκρυφθε
उ·κέκρυμμαι	κεκρύμμεθον	κεκρύμμεθα

लोट् भाव।

प्र·κεκρύφθω	κεκρύφθων	κεκρύφθων वा φθωσαν
म·κέκρυψο	κέκρυφθον	κέκρυφθε

संज्ञा भाव।

κεκρύφθαι

विशेषण भाव।

κεκρυμμενο

३ लङ्

प्र·ἐκέκρυπτο	ἐκεκρύφθην	
म·ἐκέκρυψο	ἐκέκρυφθον	ἐκέκρυφθε
उ·ἐκεκρύμμην	ἐκεκρύμμεθον	ἐκεκρύμμεθα

४ काण्डस्थ जन्यान्त धातु ἈΛΛΑΓ।

१ लिट्

वाच्य भाव।

प्र·ἤλλακται	ἤλλαχθον	
म·ἤλλαξαι	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε
उ·ἤλλαγμαι	ἠλλάγμεθον	ἠλλάγμεθα

लोट् भाव।

प्र·ἠλλάχθω	ἠλλάχθων	ἠλλάχθων वा χθωσαν
म·ἤλλαξο	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε

संज्ञा भाव।

ἠλλᾶχθαι

विशेषण भाव।

ἠλλαγμενο

२ लोङ्

प्र·ἤλλακτο	ἠλλάχθην	
म·ἤλλαξο	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε
उ·ἠλλάγμην	ἠλλάγμεθον	ἠλλάγμεθα

५। दन्त्यव्यंजनान्त क्रिया σκευαδ।

२ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἐσκεύασται	ἐσκεύασθον	
म· ἐσκεύασαι	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ· ἐσκεύασμαι	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα.

लोट् भाव।

प्र· ἐσκευάσθω	ἐσκευάσθων	ἐσκευάσθων वा σθωσαν
म· ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε

संज्ञा भाव।

ἐσκευάσθαι

विशेषण भाव।

ἐσκευασμενο

२ लोङ्

प्र· ἐσκεύαστο	ἐσκευάσθην	
म· ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ· ἐσκευάσμην	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα

इति २ लिट् और २ लोङ् का वर्णन।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि १ लिट और १ लोङ् को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट लङ् १ लुङ् २ लिट हैं परन्तु केवल वाणी लोट संज्ञा विशेषण भावों मे सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लेट और लिङ् में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लुङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'E (डाल) 'AΛO BA ΓNO ΔO TΛA ΘE ΔPA (भाग) ΔY ΣBE ΣTA ΦΘA ΦY और बनाई हुई क्रिया βιο भी। और केवल लोट भाव में ΠI धातु की भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि ३ लिट् और ३ लोङ् को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट् लङ् १ लुङ् २ लिट् हैं परन्तु केवल वार्त्ता लोट् संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लेट् और लिङ् में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लुङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'E (डाल) 'AΛO BA ΓNO ΔO TΛA ΘE ΔPA (भाग) ΔY ΣBE ΣTA ΦΘA ΦY और बनाई हुई क्रिया βιο भी। और केवल लोट् भाव में ΠI धातु की भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट् और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

५। दन्त्यव्यंजनान्त क्रिया σχευαδ ।

३ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र·	ἐσχεύασται	ἐσχεύασθον	
म·	ἐσχεύασαι	ἐσχεύασθον	ἐσχεύασθε
उ·	ἐσχεύασμαι	ἐσχευάσμεθον	ἐσχευάσμεθα

लोट् भाव।

प्र·	ἐσχευάσθω	ἐσχευάσθων	ἐσχευάσθων वा σθωσαν
म·	ἐσχεύασο	ἐσχεύασθον	ἐσχεύασθε

संज्ञा भाव।

ἐσχευάσθαι

विशेषण भाव।

ἐσχευασμενο

३ लोङ्

प्र·	ἐσχεύαστο	ἐσχευάσθην	
म·	ἐσχεύασο	ἐσχεύασθον	ἐσχεύασθε
उ·	ἐσχευάσμην	ἐσχευάσμεθον	ἐσχευάσμεθα

इति ३ लिट् और ३ लोङ् का वर्णन।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि ३ लिट और ३ लोङ को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट लङ १ लङ २ लिट हैं परन्तु केवल वार्ता लोट संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लेट और लिङ में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लङ विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'E (डाल) 'AΛO BA ΓNO ΔO TΛA ΘE ΔPA (भाग) ΔΥ ΣBE ΣTA ΦΘA ΦΥ और बनाई हुई क्रिया βιο भी। और केवल लोट भाव में ΠI धातु की भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट और लङ विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

५६ उदाहरण।

१। νυ लगाने वाला धातु ΜΙΓ।

लट्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.	μίγνυσι	μίγνυτον	μιγνῦσι वा νύασι
म.	μίγνυς	μίγνυτον	μίγνυτε
उ.	μίγνυμι		μίγνυμεν

आत्मनेपद।

प्र.	μίγνυται	μίγνυσθον	μίγνυνται
म.	μίγνυσαι	μίγνυσθον	μίγνυσθε
उ.	μίγνυμαι	μιγνύμεθον	μιγνύμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र.	μιγνύτω	μιγνύτων	μίγνυντων वा νύτωσαν
म.	μίγνυθι	μίγνυτον	μίγνυτε

आत्मनेपद।

प्र·μιγνύσθω	μιγνύσθων	μιγνύσθων वा σθωσαν
म·μίγνυσο	μίγνυσθον	μίγνυσθε

संज्ञाभाव।

पर· μιγνύναι
आ· μίγνυσθαι

विशेषण भाव।

पर· μιγνύντ
आ· μιγνυμενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र·ἐμίγνυ	ἐμιγνύτην	ἐμίγνυσαν
म·ἐμίγνυς	ἐμίγνυτον	ἐμίγνυτε
उ·ἐμίγνυν		ἐμίγνυμεν

आत्मनेपद।

प्र·ἐμίγνυτο	ἐμιγνύσθην	ἐμίγνυντο
म·ἐμίγνυσο	ἐμίγνυσθον	ἐμίγνυσθε
उ·ἐμιγνύμην	ἐμιγνύμεθον	ἐμιγνύμεθα

प्र·διδότω	διδότων	διδόντων वा τωσαν
म·δίδοθι	δίδοτον	δίδοτε

आत्मनेपद।

प्र·διδόσθω	διδόσθων	διδόσθων वा σθωσαν
म·δίδοσο	δίδοσθον	δίδοσθε

संज्ञाभाव।

पर· διδόναι

आ· δίδοσθαι

विशेषणभाव।

पर· διδοντ

आ· διδομενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र·ἐδίδω	ἐδιδότην	ἐδίδοσαν
म·ἐδίδως	ἐδίδοτον	ἐδίδοτε
उ·ἐδίδων		ἐδίδομεν

आत्मनेपद।

प्र·ἐδίδοτο	ἐδιδόσθην	ἐδίδοντο
म·ἐδίδοσο	ἐδίδοσθον	ἐδίδοσθε
उ·ἐδιδόμην	ἐδιδόμεθον	ἐδιδόμεθ

३। ΣΤΑ

(लङ्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔστη	ἐστήτην	ἔστησαν
म· ἔστης	ἔστητον	ἔστητε
उ· ἔστην		ἔστημεν

आत्मनेपद।

प्र· ἔστατο	ἐστάσθην	ἔσταντο
म· ἔστασο	ἔστασθον	ἔστασθε
उ· ἐστάμην	ἐστάμεθον	ἐστάμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· στήτω	στῆτων	στάντων वा στῆτωσαν
म· στῆθι	στῆτον	στῆτε

आत्मनेपद।

प्र· στάσθω	στάσθων	στάσθων वा σθωσαν
म· στάσο	στάσθον	στάσθε

প্র· διδότω	διδότων	διδόντων বা τωσαν
ম· δίδοθι	δίδοτον	δίδοτε

আত্মনেপদ।

প্র· διδόσθω	διδόσθων	διδόσθων বা σθωσαν
ম· δίδοσο	δίδοσθον	δίδοσθε

সংজ্ঞাভাব।

পর· διδόναι

আ· δίδοσθαι

বিশেষণভাব।

পর· διδοντ

আ· διδομενο

লঙ্

পরস্মৈপদ।

প্র· ἐδίδω	ἐδιδότην	ἐδίδοσαν
ম· ἐδίδως	ἐδίδοτον	ἐδίδοτε
উ· ἐδίδων		ἐδίδομεν

আত্মনেপদ।

প্র· ἐδίδοτο	ἐδιδόσθην	ἐδίδοντο
ম· ἐδίδοσο	ἐδίδοσθον	ἐδίδοσθε
উ· ἐδιδόμην	ἐδιδόμεθον	ἐδιδόμεθα

१। लट् लङ् १ लङ् २ लट् १ लट् २ लृ-
ट् लिङ् के प्रथम पुरुष के बहुवचन और
उत्तम पुरुष के तीनों वचन में ० लगता है
और उत्तम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद
में यह० ω होता है।
२। उन्हीं लकारों के अवशिष्ट रूपों में ε
लगता है।
३। १ लट् में वैसेही ० ω ε लगते
हैं और इन के पहिले ε भी लगता है औ-
र संधि से ε० ०υ और εω ω और
εε ει होते हैं।
४। २ लङ् और १ और २ लिट् के सब रू-
पों में पूर्वकालमें α लगता था परन्तु अ-
ब प्रथम पुरुष के एकवचन के परस्मैप-
द में ε लगता है और सब रूपों में α
५। १ और २ लोट् के सब रूपों में ει
लगता है।

इतिसम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं कावर्णन ।

अथ सम्बन्धी स्वर का वर्णन ।

८७। पूर्वोक्त क्रियाओं को छोड़के और सब क्रियाओं के १ लिट् और १ लोट् को छोड़के और सब लकारों मे प्रत्ययों के पहिले कोई न कोई सम्बन्धी स्वर लग जाताहै। कहीं α कहीं ε कहीं η कहीं o कहीं ω कहीं αι कहीं ει कहीं οι और कहीं २ इन में से दो साथ २ लगतेहैं अर्थात् οιε οιη ειη εε εο εω αιε αιη ειε ειω εοιε εοι। और इन से अधिक इन लकारों में ऊपरि लिखित चक्र में के प्रत्यय न्यूनाधिक बदलके लगतेहैं।

८८। अब बतावेंगे कि किस २ प्रत्यय के पहिले कौन २ सम्बन्धी स्वर लगताहै।

वार्ता भावमें

१। लट् लङ् १ लङ् २ लट् १ लट् २ लृ-
ट् लिङ्ट् के प्रथम पुरुष के बहुवचन और
उत्तम पुरुष के तीनों वचन में ० लगता है
और उत्तम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद
में यह० ω होता है ।
२। उन्हीं लकारों के अवशिष्ट रूपों में ε
लगता है ।
३। १ लट् में वैसेही ० ω ε लगते
है और इन के पहिले ε भी लगता है औ-
र संधि से ε० ०υ और εω ω और
εε ε‹ होतेहैं ।
४।२ लङ् और १ और २ लिट् के सब रू-
पों मे पूर्वकालमें α लगता था परन्तु अ-
ब प्रथम पुरुष के एकवचन के परस्मैप-
द में ε लगताहै और सब रूपों में α
५।१ और २ लोङ् के सब रूपों मे ε‹
लगताहै ।

२।(और ५ लुङ् के सब रूपों में ग ल-
गता है ।

९९ । लेट् भाव में

१। वाच्यी भाव का ० ७ और उस का ६
ग हो जाता है और उसका ५ ज्यों का त्यों
रहता है ।

१०० । लिङ् भाव में

१। जिन क्रियाओं के वाच्यी भाव में सम्ब-
न्धी स्वर नहीं लगता है उन में से ८-
अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ०।ग
लगता है और ६- अन्त क्रियाओं के लिङ्
के परस्मैपद में ६।ग लगता है और ०- अन्त
क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ०।ग लग-
ता है परन्तु द्विवचन में और बहुवचन के
मध्यम और उत्तम पुरुषों में इन का ग
छूट भी सकता है और उन के बहुवचन
के प्रथम पुरुष में ग ६ हो सकता है ।

यथा ।

φA के लट् के लिङ् का परस्मैपद।

प्र· φαίη	φαιήτην	φαίησαν
म· φαίης	φαίητον	φαίητε
उ· φαίην		φαίημεν

अथवा

प्र· φαίη	φαίτην	φαῖεν
म· φαίης	φαῖτον	φαῖτε
उ· φαίην		φαῖμεν

इस रूप को छोड़के और सब क्रियाओं और इस के आत्मनेपद में भी लगते हैं।

२। लट् २ लङ् १ लृट् २ लृङ् लिङ् १ लिट् २ लिङ् के परस्मैपद के प्रथम पुरुष के बहुवचन में οιε परन्तु और सब रूपों के दोनों पद में οι लगता है।

३। १ लृट् में εοι और εοιε लगते हैं परन्तु संधिसे ये οι और οιε होते हैं।

८।१ और २ लुङ् के सब रूपों में ण ल-
गता है ।

९९ । लोट् भाव में

१। वर्त्त भाव का ० ८ और उस का ६
ण हो जाता है और उसका ७ ज्यों का त्यों
रहता है ।

१०० । लिङ् भाव में

१। जिन क्रियाओं के वर्त्त भाव में सम्ब-
न्धी स्वर नहीं लगता है उन में से ५-
अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ५।ण
लगता है और ६-अन्त क्रियाओं के लिङ्
के परस्मैपद में ६।ण लगता है और ०-अन्त
क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ०।ण लग-
ता है परन्तु द्विवचन में और बहुवचन के
मध्यम और उत्तम पुरुषों में इन का ण
लूट भी सकता है और उन के बहुवचन
के प्रथम पुरुष में ण ६ हो सकता है ।

यथा ।

φA के लङ् के लिङ् का परस्मैपद।

प्र· φαίη	φαιήτην	φαίησαν
म· φαίης	φαίητον	φαίητε
उ· φαίην		φαίημεν

अथवा

प्र· φαίη	φαίτην	φαῖεν
म· φαίης	φαῖτον	φαῖτε
उ· φαίην		φαῖμεν

अब इन को छोड़के और सब क्रियाओं और इन के आत्मनेपद को भी जानहै ।

२। लट् २ लङ् १ लृट् २ लृङ् लिङ्ट १ लिट् २ लिङ् के परस्मैपद के प्रथम पुरुष के बहुवचन में οιε परन्तु और सब रू पों के दोनों पद में οι लगता है।

३। १ लट् में εοι और εοιε लगते हैं परन्तु संधि से οι और οιε होते हैं।

किन्तु अथेना नगर की भाषा में oिη सबरूपों में लगता है ।

४।२ लुङ् के प्रथम पुरुष के बहुवचन के परस्मैपद में αιε परन्तु और सब रूपों में αι लगता है । किन्तु अथेना नगरवासियों की भाषा में प्रथम पुरुष के एकवचन में ειε लगता है और प्रथम पुरुष के बहुवचन और मध्यम पुरुष के एकवचन में ειαν लगता है।

५।१ और २ लट् और IΔ के २ लिङ् के सब रूपों में ειη लगता है परन्तु प्रथम पुरुष के बहुवचन में ειε भी और मध्यम और उत्तम पुरुषों के बहुवचन में ει भी लग सकता है ।

२०१। लोट् भाव में

१। लट् १ लङ् १ लिट् २ लिट् लिङ् के ντων प्रत्यय के पहिले ο और सब रूपों में ε लगता है ।

३। २ लुङ् के सब रूपों में ८ लगता है।

३। १ लच् २ लच् के सब रूपों में ७ लगता है।

१०२। संज्ञा भावमें

१। लट् १ लुङ् २ लट् १ लिट् २ लिट् १ लच् २ लच् लिङ्लट् के प्रत्ययों के पहिले ६ लगता है।

२। २ लट् में ६६ लगता है सो ६८ होताहै।

३। २ लुङ् में ८ लगता है।

४। १ और २ लच् में ७ लगताहै।

१०३। विशेषण भावमें

१। लट् १ लुङ् २ लट् १ लिट् २ लिट् लिङ्लट् १ लच् २ लच् में ० लगताहै।

२। १ लट् के प्रत्ययों के पहिले ६० लगताहै सो ०८ होताहै।

३। २ लुङ् मे ८ लगता है

४। १ और २ लच् में ६ लगता है।

१०४। अब बतावेंगे कि इन सम्बन्धी स्वरों से मिलके ऊपरिलिखित चक्र में के प्रत्यय किस प्रकार से बदलतेहैं।

१। १ और २ लिङ्ग के ετι में का τι लुप्त होताहै और अवशिष्ट सब लकारों के ετε और ητε में का τ छूटके ει और η होतेहैं।

२। οντι, ουσι और ωντι ωσι और αντι ασι होतेहैं। पर कभी २ αντι αν भी हो सकताहै।

३। εσι εις और ησι ῃς और ασι ας होते हैं। पर कभी २ १ और २ लिङ्ग में यह ας ασθα वा σθα होताहै।

४। εσαι और ησαι का σ छूटके εαι ει वा ῃ होताहै और

५। μι प्रत्यय लुप्त

६। ετ τ ητ

οιητ का τ लुप्त होताहै।

७। εις का ς कभी २ σθα होताहै।

८। ντ का τ सदा लुप्तहोताहै और ν के पहिले σα भी १ लच् २ लच् १ लोङ् २ लोङ् में लगताहै और कभी २ और लकारों में भी।

९। εσο ασο οισο αισο εισο का σ छूटताहै और तब εο ου और αο ω संधि से होते हैं

१०। ομ αμ ειμ ημ ειημ οιημ का μ सदा ν होताहै पर οιμ αιμ के अन्त में ι लगता है।

११। εθι का θι सदा लुप्त होताहै पर αθι ον से बदलजाताहै और ηθι ητι होजाता है।

१२। ντων τωσαν से बदल सकता है और η के उपरान्त सदा ऐसा बदलता

१०४। अब बतावेंगे कि इन सम्बन्धी स्वरों से मिलके ऊपरिलिखित चक्र में के प्रत्यय किस प्रकार से बदलतेहैं।

१। १ और २ लिङ्ग के ετι में का τι लुप्त होताहै और अवशिष्ट सब लकारों के ετι और ητι में का τ छूटके ει और ῃ होतेहैं।

२। οντι ουσι और ωντι ωσι और αντι ασι होतेहैं। पर कभी २ αντι αν भी हो सकताहै।

३। εσι εις और ησι ῃς और ασι ας होते हैं। पर कभी २ १ और २ लिङ्ग में यह ας ασθα वा σθα होताहै।

४। εσαι और ησαι का σ छूटके εαι ει वा ῃ होताहै और ηαι ῃ।

५। μι प्रत्यय लुप्त होता है।

६। ετ ειτ ατ ητ αιτ οιτ ειητ,

οιητ का τ लुप्त होताहै।

७। ειϛ का ϛ कभी २ σθα होताहै।

८। ντ का τ सदा लुप्तहोताहै और ν के पहिले σα भी १ लच् २ लच् १ लोङ्. २ लोङ्. में लगताहै और कभी २ और लकारों में भी।

९। εσο ασο οισο αισο ειοο का σ छूटताहै और तब εο ου और αο ω संधि से होते हैं

१०। ομ αμ ειμ ημ ειημ οιημ का μ सदा ν होताहै पर οιμ αιμ के अन्त में ι लगता है।

११। εθι का θι सदा लुप्त होताहै पर αθι ον से बदलजाताहै और ηθι ητι होजाता है।

१२। ντων τωσαν से बदल सकता है और η के उपरान्त सदा ऐसा बदलता

है। परन्तु इस $\tau\omega\sigma\alpha\nu$ के पहिले o नहीं बरन् उस के स्थाने ϵ लगताहै।

१३। बहुवचन का $\sigma\theta\omega\nu$ $\sigma\theta\omega\sigma\alpha\nu$ भी हो सकता है।

१४। १ और २ लिङ्ग का $\epsilon\nu\alpha\iota$ वैसा ही रहताहै पर और सबलकारों का $\epsilon\nu\alpha\iota$ $\epsilon\iota\nu$ से बदल जाताहै और $\alpha\nu\alpha\iota$ $\alpha\iota$ हो जाता है।

१५। १ और २ लिङ्ग के $o\nu\tau$ का ν छूट जाता है।

१६। जिन क्रियाओं के अन्तमें α ϵ o है उनमें यह स्वर सम्बन्धी स्वर से संधि के नियमानुसार मिलताहै। परन्तु इन चार बातों को जान रखो।

१। o और $\epsilon\iota\nu$ मिलके $o\iota\nu$ नहीं बरन् $o\upsilon\nu$ होता है। यथा $\mu\iota\sigma\theta\acute{o}\epsilon\iota\nu$ से $\mu\iota\sigma\theta o\tilde{\upsilon}\nu$।

२। इन क्रियाओं के लट के लिङ् के परस्मैपद में प्राय οιη सम्बन्धी स्वर लगताहै। यथा τιμα से τιμῴη τιμῴητην τιμῴησαν इत्यादि और φιλε से φιλοίη φιλοίητην φιλοίησαν इत्यादि।

३। ΖΑ ΧΡΑ(काममें लेना)ΣΜΑ ΨΑ πεινα διψα का α ε और ει से मिलके α ᾳ नहीं बरन η ῃ होताहै यथा χράεται से χρῆται और ζαειν से ζῆν।

४। एकाक्षरान्वित धातुओं में केवल ει प्रत्यय के साथ संधि होता है और किसी प्रत्यय के साथ नहीं होताहै। यथा πνέει से πνεῖ परन्तु πνέουσι πνοῦσι नहीं होताहै।

१७। जहां २ प्रथम पुरुष के अन्तमें ε वा ι स्वरादिकशब्दके पहिले आता है तहां २ प्रत्यय के अन्तमें ν लगताहै। यथा

ἔχουσι αὐτο और ἔλεγέ οὗτος
नहीं होगा वरन् ἔχουσιν αὐτο और
ἔλεγεν οὗτος।

अथ सम्बन्धिस्वरान्वित क्रियाओं के उदाहरण

१०५। १ लट्

MEN और ΘAN
वाली भाव।

परस्मैपद।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰	κεγεῖ	κεγεῖτον	[illegible]
म॰	κεγεῖς	κεγεῖτον	[illegible]
उ॰	κεγῶ		[illegible]

आत्मनेपद।

	एकवचन	द्विवचन
प्र॰	[illegible]	[illegible]
म॰	[illegible]	[illegible]
उ॰	[illegible]	[illegible]

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· μενοῖ	μενοίτην	μενοῖεν
म· μενοῖς	μενοῖτον	μενοῖτε
उ· μενοῖμι		μενοῖμεν

अथवा

प्र· μενοίη	μενοιήτην	μενοίησαν
म· μενοίης	μενοίητον	μενοίητε
उ· μενοίην		μενοίημεν

आत्मनेपद।

प्र· θανοῖτο	θανοίσθην	θανοῖντο
म· θανοῖο	θανοῖσθον	θανοῖσθε
उ· θανοίμην	θανοίμεθον	θανοίμεθα

संज्ञाभाव।

पर· μενεῖν

आ· θανεῖσθαι

विशेषण भाव।

प्र· βαλέτω	βαλέτων	βαλόντων वा βαλέτωσαν
म· βάλε	βάλετον	βάλετε

आत्मनेपद।

प्र· λαβέσθω	λαβέσθων	λαβέσθων वा σθωσαν
म· λαβοῦ	λάβεσθον	λάβεσθε

संज्ञाभाव।

पर βαλεῖν

आ· λαβέσθαι

विशेषणभाव।

पर βαλοντ

आ· λαβομενο

---

२ लट्

ФΥΛΑΚ और ΠΟΙΕ।

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· φύλαξει	φυλάξετον	φυλάξουσι
म· φυλάξεις	φυλάξετον	φυλάξετε
उ· φυλάξω		φυλάξομεν

आत्मनेपद।

प्र· ποιήσοται	ποιήσεσθον	ποιήσονται
म ποιήσῃ वा ει	ποιήσεσθον	ποιήσεσθε
उ· ποιήσομαι	ποιησόμεθον	ποιησόμεθα

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· φυλάξοι	φυλαξοίτην	φυλάξοιεν
म· φυλάξοις	φυλάξοιτον	φυλάξοιτε
उ· φυλάξοιμι		φυλάξοιμεν

आत्मनेपद।

प्र· ποιήσοιτο	ποιησοίσθην	ποιήσοιντο
म· ποιήσοιο	ποιήσοισθον	ποιήσοισθε
उ· ποιησοίμην	ποιησοίμεθον	ποιησοίμεθα

संज्ञा भाव।

पर· φυλάξειν

आ· ποιήσεσθαι

विशेषण भाव।

प॰	φυλαξοντ
आ॰	ποιησομενο

१०८। २ लुङ्

ΠΡΑΓ और ΣΤΕΛ

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἔπραξε	ἐπραξάτην	ἔπραξαν
म॰ ἔπραξας	ἐπράξατον	ἐπράξατε
उ॰ ἔπραξα		ἐπράξαμεν

आत्मनेपद।

प्र॰ ἐστείλατο	ἐστειλάσθην	ἐστείλαντο
म॰ ἐστείλω	ἐστείλασθον	ἐστείλασθε
उ॰ ἐστειλάμην	ἐστειλάμεθον	ἐστειλάμεθα

लेट् भाव।

परस्मैपद।

वार्त्ता भाव ।

प्र·σπαρήσεται	σπαρήσεσθον	σπαρήσονται
म·σπαρήσηꞏ εῖ	σπαρήσεσθον	σπαρήσεσθε
उ·σπαρήσομαι	σπαρησόμεθον	σπαρησόμεθα

लिङ्‌ भाव ।

प्र·σπαρήσοιτο	σπαρησοίσθην	σπαρήσοιντο
म·σπαρήσοιο	σπαρήσοισθον	σπαρήσοισθε
उ·σπαρησοίμην	σπαρησοίμεθον	σπαρησοίμεθα

संज्ञा भाव ।

σπαρήσεσθαι

विशेषणभाव ।

σπερησομενο

१११ । २ लुच

ΛΕΓ ।

वार्त्ता भाव ।

प्र· ἐλέχθη	ἐλεχθήτην	ἐλέχθησαν
म· ἐλέχθης	ἐλέχθητον	ἐλέχθητε
उ· ἐλέχθην		ἐλέχθημεν

लेट् भाव।

प्र· λεχθῇ	λεχθῆτον	λεχθῶσι
म· λεχθῇς	λεχθῆτον	λεχθῆτε
उ λεχθῶ		λεχθῶμεν

लिङ् भाव।

प्र λεχθείη	λεχθειήτην	λεχθείησαν वा χθεῖεν
म· λεχθείης	λεχθείητον	λεχθείητε वा χθεῖτε
उ· λεχθείην		λεχθείημεν वा χθεῖμεν

लोट् भाव।

प्र· λεχθήτω	λεχθήτων	λεχθήτωσαν
म· λέχθητι	λέχθητον	λέχθητε

संज्ञा भाव।

λεχθῆναι

विशेषणभाव।

λεχθεντ

২ লৃট।

ZHTE

বার্ত্তা ভাব।

প্র.	ζητηθήσεται	ζητηθήσεσθον	ζητηθήσονται
ম.	ζητηθήσῃ বা σει	ζητηθήσεσθον	ζητηθήσεσθε
উ.	ζητηθήσομαι	ζητηθησόμεθον	ζητηθησόμεθα

লিঙ্ ভাব।

প্র.	ζητηθήσοιτο	ζητηθησοίσθην	ζητηθήσοιντο
ম.	ζητηθήσοιο	ζητηθήσοισθον	ζητηθήσοισθε
উ.	ζητηθησοίμην	ζητηθησοίμεθον	ζητηθησοίμεθα

সংজ্ঞা ভাব।

ζητηθήσεσθαι

বিশেষণ ভাব।

ζητηθησομενο

লিট্ট

ΓΡΑΦ

জ্ঞা ভাব।

প্র· γεγράψεται	γεγράψεσθον	γεγράψονται
ম· γεγράψῃ বা ψει	γεγράψεσθον	γεγράψεσθε
উ· γεγράψομαι	γεγραψόμεθον	γεγραψόμεθα

লিঙ্‌ ভাব।

প্র· γεγράψοιτο	γεγραψοίσθην	γεγράψοιντο
ম· γεγράψοιο	γεγράψοισθον	γεγράψοισθε
উ· γεγραψοίμην	γεγραψοίμεθον	γεγραψοίμεθα

সংজ্ঞা ভাব।

γεγράψεσθαι

বিশেষণ ভাব।

γεγραψόμενο

११४ । १लिट्

KPIN

वार्त्ता भाव।

प्र·κέκρικε	κεκρικάτην	κεκρίκασι
म·κέκρικας	κεκρίκατον	κεκρίκατε
उ κέκρικα		κεκρίκαμεν

लेट् भाव।

प्र·κεκρίκῃ	κεκρίκητον	κεκρίκωσι
म·κεκρίκῃς	κεκρίκητον	κεκρίκητε
उ·κεκρίκω		κεκρίκωμεν

लिङ् भाव।

प्र·κεκρίκοι	κεκρικοίτην	κεκρίκοιεν
म·κεκρίκοις	κεκρίκοιτον	κεκρίκοιτε
उ·κεκρίκοιμι		κεκρίκοιμεν

लोट् भाव।

प्र· κεκρικέτω	κεκρικέτων	κεκρίκωσ
म·κέκρικε	κεκρίκετον	κεκρίκετε

संज्ञाभाव।

κεκρικέναι

विशेषणभाव।

κεκρικοτ

११५। १लोङ्

ΦΥ।

प्र· ἐπεφύκει	ἐπεφυκείτην	ἐπεφύκεισαν
म· ἐπεφύκεις	ἐπεφύκειτον	ἐπεφύκειτε
उ· ἐπεφύκειν		ἐπεφύκειμεν

११६। २लिट्

ΓΕΝ।

वार्त्ता भाव।

प्र· γέγονε	γεγόνατον	γεγόνασι
म· γέγονας	γεγόνατον	γεγόνατε
उ· γέγονα		γεγόναμεν

लेट् भाव।

प्र· γεγόνῃ	γεγόνητον	γεγόνωσι
म· γεγόνῃς	γεγόνητον	γεγόνητε
उ· γεγόνω		γεγόνωμεν

लिङ् भाव।

प्र· γεγόνοι	γεγονοίτην	γεγόνοιεν
म· γεγόνοις	γεγόνοιτον	γεγόνοιτε
उ· γεγόνοιμι		γεγόνοιμεν

लोट् भाव।

प्र· γεγονέτω	γεγονέτων	γεγονόντων वा νέτωσαν
म· γέγονε	γεγόνετον	γεγόνετε

संज्ञाभाव।

γεγονέναι

विशेषणभाव।

γεγονον

११५। २ लोङ्.

ΦΘΕΡ

प्र·ἐφθόρει	ἐφθορείτην	ἐφθόρεισαν
म·ἐφθόρεις	ἐφθόρειτον	ἐφθόρειτε
उ·ἐφθόρειν		ἐφθόρειμεν

११८।

लट्

ΓΝΟ और ΠΥΘ।

वाच्य भाव।

परस्मैपद।

प्र·γινώσκει	γινώσκετον	γινώσκουσι
म·γινώσκεις	γινώσκετον	γινώσκετε
उ·γινώσκω		γινώσκομεν

आत्मनेपद।

प्र·πυνθάνεται	πυνθάνεσθον	πυνθάνονται
म·πυνθάνῃ वा νει	πυνθάνεσθον	πυνθάνεσθε
उ·πυνθάνομαι	πυνθανόμεθον	πυνθανόμεθα

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· γινώσκῃ	γινώσκητον	γινώσκωσι
म· γινώσκῃς	γινώσκητον	γινώσκητε
उ· γινώσκω		γινώσκωμεν

आत्मनेपद।

प्र· πυνθάνηται	πυνθάνησθον	πυνθάνωνται
म· πυνθάνῃ	πυνθάνησθον	πυνθάνησθε
उ· πυνθάνωμαι	πυνθανώμεθον	πυνθανώμεθα

लिट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· γινώσκοι	γινωσκοίτην	γινώσκοιεν
म· γινώσκοις	γινωσκοιτόν	γινώσκοιτε
उ· γινώσκοιμι		γινώσκοιμεν

आत्मने पद।

आत्मनेपद

प्र·πανθάνοιτο	πυνθανοίσθην	πυνθάνοιντο
म·πυνθάνοιο	πυνθάνοισθον	πυνθάνοισθε
उ·πυνθανοίμην	πυνθανοίμεθον	πυνθανοίμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·γινωσκέτω	γινωσκέτων	γινωσκόντων वा σκέτωσαν
म·γίνωσκε	γινώσκετον	γινώσκετε

आत्मनेपद।

प्र·πυνθανέσθω	πυνθανέσθων	πυνθανέσθων वा σθωσαν
म·πυνθάνου	πυνθάνεσθον	πυνθάνεσθε

संज्ञा भाव।

पर· γινώσκειν

आ· πυνθάνεσθαι

विशेषण भाव।

पर· γινωσκοντ

आ πυνθανομενο

विशेषणभाव।
ὀντ
लङ्

प्र· ἦν	ἤτην	ἦσαν
म· ἦς वा ἦσθα	ἦτον	ἦτε
उ· ἦν वा ἤμην		ἦμεν

१२१। हम कह आये हैं कि २ लिट् और २ लोट् के प्रथम पुरुषका बहुवचन वात्तौ भाव में और २ लिट् का कोई रूप लेट् और लिङ् भावों में नहीं होता है। सो उन के अर्थ में २ लिट् का विशेषण भावΕΣ धातु के १९ रूप के साथ आताहै। यथा ΛΥ से २ लिट् के वात्तौ भाव के अर्थ में λελύμενο εἰσὶ।उसी के लेट् भाव के अर्थ में λελυμενο ὦ ἦτον ὦσι इत्यादि। उसी के लिङ् भाव के अर्थ में λελυμενο εἴη εἰήτην εἰεν इत्यादि। और २ लो-

उ. के अर्थमें λελυμενο ἦσαν।

१२२ शा.ता.।

यह धातु केवल लट् और लङ् के केवल परस्मैपदमें होता है। लट् के एकवचन के वार्त्ता भाव में और लङ् के तीनों वचन में धातु ει होता है। और लङ् का आगम η है।

लट्

वार्त्ता भाव।

प्र· εἶσι	ἴτον	ἴασι
म· εἶς वा εἶ	ἴτον	ἴτε
उ· εἶμι		ἴμεν

लेट् भाव।

प्र· ἴῃ	ἴητον	ἴωσι	इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ἴοι	ἰοίτην	ἴοιεν	इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἴτω	ἴτων	ἰόντων वा ἴτωσαν
म· ἴθι	ἴτον	ἴτε

संज्ञा भाव।

ἰέναι

विशेषण भाव।

ἰοντ

लङ्

प्र· ᾔει	ᾔείτην	ᾔεισαν
म· ᾔεις	ᾔειτον	ᾔειτε
उ· ᾔειν वा ᾔα		ᾔειμεν

इस धातु के लट के वार्त्ता भाव का अर्थ प्राय वर्त्तमान के भविष्यत का है।

१२३। ३। ἘΛΥΘ और ἘΡΧ।

ΕΡΧ लट् और लङ् में होता है। ἘΛΥΘ और सब लकारों में। ΕΛΥΘ का υ

२ लट् में ६० होता है और १ लङ् में लु-
प्त होताहै।

१ लङ्

वार्त्ता भाव।

प्र·	ἦλθε	ἠλθέτην	ἦλθον	इत्यादि

लेट् भाव।

प्र·	ἔλθῃ	ἔλθητον	ἔλθωσι	इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र·	ἔλθοι	ἐλθοίτην	ἔλθοιεν	इत्यादि

लोट् भाव।

प्र·	ἐλθέτω	ἐλθέτων	ἐλθόντων वा ἐλθέτωσαν
म·	ἔλθε	ἔλθετον	ἔλθετε

संज्ञा भाव।

ἐλθεῖν

विशेषणभाव।

ἐλθοντ

१ लिट्

वार्त्ती भाव।

प्र·ἐλήλυθε ἐληλύθατον ἐληλύθασι इत्यादि

लेट् भाव।

प्र·ἐληλύθῃ ἐληλύθητον ἐληλύθωσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र·ἐληλύθοι ἐληλυθοίτην ἐληλύθοιεν इत्या·

संज्ञाभाव।

ἐληλυθέναι

विशेषणभाव।

ἐληλυθοντ

१ लोङ्

प्र·ἐληλύθει ἐληλυθείτην ἐληλύθεισαν इ·

२ लृट्

वार्त्ती भाव।

प्र·ἐλεύσεται ἐλεύσεσθον ἐλεύσονται इत्या·

लिङ् भाव।

प्र· ἕξει ἕξετον ἕξουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἕξεται ἕξεσθον ἕξονται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἕξοι ἑξοίτην ἕξοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἕξοιτο ἑξοίσθην ἕξοιντο इत्यादि

संज्ञा भाव।

परस्मैपद।

ἕξειν

आत्मनेपद।

ἕξεσθαι

विशेषणभाव।

पर· ἕξοντ

आ· ἑξομενο

लट्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔχει ἔχτον ἔχουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχεται ἔχεσθον ἔχονται इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔχῃ ἔχητον ἔχωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχηται ἔχησθον ἔχωνται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔχοι ἐχοίτην ἔχοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχοιτο ἐχοίσθην ἔχοιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·ἐχέτω ἐχέτων ἐχόντων वा ἐχέτωσαν इ·

आत्मनेपद।

प्र·ἐχέσθω ἐχέσθων ἐχέσθων वा σθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

पर· ἔχειν

आ· ἔχεσθαι

विशेषणभाव।

पर· ἐχοντ

आ· ἐχομενο

लङ्।

परस्मैपद।

प्र·εἶχε εἰχέτην εἶχον इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र·εἴχετο εἰχέσθην εἴχοντο इत्यादि

२५। ५। 'OPA 'OIL 'IΔ ।

'OPA से लट् लङ्‌ १ लिट् ३ लिट् १ लोङ्‌ ३ लोङ्‌ ।

'OIL से २ लिट् ३ लिट् २ लोङ्‌ ३ लोङ्‌ २ लृच् २ लृच् ।

'IΔ से १ लुङ्‌ २ लिट् २ लोङ्‌

१ लुङ्‌ का ८ आगम से मिलके ६८ होता है।

'IΔ के २ लिट् का अभ्यास लेट् लिङ्‌ संज्ञा विशेषण में ६८ से होता है। वा-र्ता भाव के एकवचन में ०८ से। और द्विवचन और बहुवचन में नहीं होता है परन्तु धातु का ô σ से बदल जाता है। ऐसाही लोट् के सब रूपों में भी।

२ लोङ्‌ में ६८ ही में आगम लगके ηι होताहै।

'IΔ के २ लिट् का अर्थ जानने का है

और सब लकारों का अर्थ देखने काहै।

१लङ्

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र॰ εἶδε εἰδέτην εἶδον इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ εἴδετο εἰδέσθην εἴδοντο इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἴδῃ ἴδητον ἴδωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ ἴδηται ἴδησθον ἴδωνται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἴδοι ἰδοίτην ἴδοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἴδοιτο ἰδοίσθην ἴδοιντο इत्यादि

लोट्भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἰδέτω ἰδέτων ἰδόντων वा ἰδέτωσαν इत्या·

आत्मनेपद।

प्र· ἰδέσθω ἰδέσθων ἰδέσθων वा σθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

पर· ἰδεῖν

आ· ἴδεσθαι

विशेषणभाव

पर· ἰδοντ

आ· ἰδομενο

॥ २लिट्

वार्तो भाव।

प्र· οἶδε ἴστον ἴσασι

म· οἶσθα वा οἶδας ἴστον ἴστε

उ· οἶδα ἴσμεν

संज्ञाभाव।

ὀφθῆναι

विशेषणभाव।

ὀφθεντ

२लृट्

वाच्यभाव।

प्र॰ ὀφθήσεται ὀφθήσεσθον ὀφθήσονται इत्या॰

लिङ्भाव।

प्र॰ ὀφθήσοιτο ὀφθησοίσθην ὀφθήσοιντο इत्या॰

संज्ञाभाव।

ὀφθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ὀφθησομενο

२ लिट्

वाच्यभाव।

लिङ् भाव।

प्र॰ ὄψοιτο ὀψοίσθην ὄψοιντο इत्यादि

संज्ञाभाव।

ὄψεσθαι

विशेषणभाव।

ὀψομενο

२ लुङ्

वाच्यभाव।

प्र॰ ὤφθη ὠφθήτην ὤφθησαν इत्यादि

लेट् भाव।

प्र॰ ὀφθῇ ὀφθῆτον ὀφθῶσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र॰ ὀφθείη ὀφθειήτην ὀφθείησαν इत्यादि

लोट् भाव।

प्र॰ ὀφθήτω ὀφθήτων ὀφθήτωσαν इत्यादि

संज्ञा भाव।

ὀφθῆναι

विशेषणभाव।

ὀφθεντ

२लृट

वाच्ची भाव।

प्र· ὀφθήσεται ὀφθήσεσθον ὀφθήσονται इत्या·

लिङ् भाव।

प्र· ὀφθήσοιτο ὀφθησοίσθην ὀφθήσοιντο इत्या·

संज्ञाभाव।

ὀφθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ὀφθησομενο

३ लिट्

वाच्चीभाव।

प्र·ὤπται ὤφθον इत्यादि

लोट भाव।

प्र·ὤφθω ὤφθων ὤφθων वा ὤφθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

ὤφθαι

विशेषणभाव।

ὠμμενο

इलोट.

प्र·ὤπτο ὤφθην इत्यादि

लट

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र· ὁρᾷ ὁρᾶτον ὁρῶσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र·ὁρᾶται ὁρᾶσθον ὁρῶνται इत्यादि

लोट भाव।

परस्मैपद।

प्र· ὁρῷ ὁρᾶτον ὁρῶσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ὁρᾶται ὁρᾶσθον ὁρῶνται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ὁρῴη ὁρῳήτην ὁρῴησαν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ὁρῷτο ὁρῴσθην ὁρῷντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ὁράτω ὁράτων ὁράτωσαν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ὁράσθω ὁράσθων ὁράσθων वा σθω-σαν इत्या·

संज्ञाभाव।

पर· ὁρᾷν

आ· ὁρᾶσθαι

विशेषणभाव।

पर· ὁρωντ

आ· ὁρωμενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र· ἑωρᾶ ἑωράτην ἑώρων इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἑωρᾶτο ἑωράσθην ἑωρᾶντο इत्यादि

१लिट्

वार्त्ताभाव।

प्र· ἑώρακε ἑωράκατον ἑωράκασι इत्या

लेट्भाव।

प्र· ἑωράκῃ ἑωράκητον ἑωράκωσι इत्या·

लिङ्भाव।

प्र· ἑωράκοι ἑωρακοίτην ἑωράκοιεν इ·

लोट्भाव।

प्र·ἑωρακέτω ἑωρακέτων ἑωρακόντων वा ἑωρακέτωσαν

संज्ञाभाव।

ἑωρακέναι

विशेषणभाव।

ἑωρακοτ

१लोङ्

प्र·ἑωράκει ἑωρακείτην ἑωράκεισαν इ·

३लिट्

वाच्चीभाव।

प्र·ἑώραται ἑώρασθον इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἑωρᾶσθαι

विशेषणभाव।

ἑωραμενο

३लोङ्

प्र·ἑώρατο ἑωράσθην इत्यादि

२लिट्

वर्त्तमान।

प्र·ὀπωπε ὀπώπατον ὀπώπασι ३त्ना·

लेट्भाव।

प्र·ὀπώπη ὀπώπητον ὀπώπωσι ३त्ना·

लिङ्भाव।

प्र·ὀπώποι ὀπωποίτην ὀπώποιεν ३त्ना·

लोट्भाव।

प्र·ὀπωπέτω ὀπωπέτων ὀπωπόντων वा πετωσαν

संज्ञाभाव।

ὀπωπεναι

विशेषणभाव।

ὀπωποτ

२लोट्

प्र·ὀπώπει ὀπωπείτην ὀπώπεισαν ३त्ना·

१२६। ἘΡΕΝΕΚ ΌΙ ΦΕΡ

ἘΝΕΚ से १ लुङ् २ लुङ् १ लिट् ३ लिट्

१ लोट् २ लोट् २ लच २ लच् । परन्तु १ लङ् २ लङ् मे χ के पहिले γ आता है और १ लिट् ३ लिट् में दूना अभ्यास होता है ।

ΟΙ से २ लट् ।

ΦΕΡ से लट् और लङ् ।

१ लङ्

वार्त्ताभाव ।

प्र० ἤνεγκε ἠνεγκέτην ἤνεγκον इत्यादि

लेट्भाव ।

प्र० ἐνέγκῃ ἐνέγκητον ἐνέγκωσι इत्यादि

लिङ् भाव ।

प्र० ἐνέγκοι ἐνεγκοίτην ἐνέγκοιεν इत्यादि

लोट् भाव ।

प्र० ἐνεγκέτω ἐνεγκέτων ἐνεγκόντων वा ἐνεγκέτωσαν

संज्ञा भाव ।

ἐνεγκεῖν

विशेषणभाव ।

ἐνεγχοντ

२ लुङ्

वार्त्ता भाव।

प्र॰ ἤνεγκε ἠνεγκάτην ἤνεγκαν इत्या॰

लोट् भाव।

प्र॰ ἐνεγκάτω ἐνεγκάτων ἐνεγκάντων वा ἐνεγκάτωσαν

संज्ञा भाव।

ἐνεγκαι

विशेषणभाव।

ἐνεγκαντ

१ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र॰ ἐνήνοχε ἐνηνόχατον ἐνηνόχασι इ॰

लेट् भाव।

प्र॰ ἐνηνόχῃ ἐνηνόχητον ἐνηνόχωσι इ॰

लोट् भाव।

प्र॰ ἐνηνοχέτω ἐνηνοχέτων ἐνηνοχόντων वा ἐνηνοχέτωσαν

संज्ञा भाव।

ἐνηνοχέναι

विशेषणभाव।

ἐνηνοχοτ

१लोट्

प्र·ἐνηνόχει ἐνηνοχείτην ἐνηνόχεισαν द्वि·

२लिट

वान्तीभाव।

प्र·ἐνήνεκται ἐνήνεχθον इत्यादि

लोट् भाव।

प्र·ἐνηνέχθω ἐνηνέχθων ἐνηνέχθων वा χθωσαν

संज्ञाभाव।

ἐνηνέχθαι

विशेषणभाव।

ἐνηνεγμενο

३लोट्

प्र·ἐνήνεκτο ἐνηνέχθην इत्यादि

२लोट्

वार्त्तीभाव।

प्र·ἠνέχθη ἠνεχθήτην ἠνέχθησαν इत्या·

लेट् भाव।

प्र·ἐνεχθῇ ἐνεχθῆτον ἐνεχθῶσι इत्या·

लिङ् भाव।

प्र·ἐνεχθείη ἐνεχθειήτην ἐνεχθείησαν इ·

लोट् भाव।

प्र·ἐνεχθήτω ἐνεχθήτων ἐνεχθήτωσαν इ·

संज्ञाभाव।

ἐνεχθῆναι

विशेषणाभाव।

ἐνεχθεντ

२लृट

वार्त्तीभाव।

प्र·ἐνεχθήσεται ἐνεχθήσεσθον ἐνεχθήσονται इ·

लिङ् भाव।

प्र·ἐνεχθήσοιτο ἐνεχθησοίσθην ἐνεχθήσοιντο इ·

संज्ञाभाव।

ἐνεχθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ἐνεχθησομενο

२ लृट्

वार्त्ताभाव।

प्र॰ οἴσει οἴσετον οἴσουσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र॰ οἴσοι οἰσοίτην οἴσοιεν इत्यादि

संज्ञाभाव।

οἴσειν

विशेषणभाव।

οἰσοντ

लट्

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र॰ φέρει φέρετον φέρουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ φέρεται φέρεσθον φέρονται इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ φέρῃ φέρητον φέρωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ φέρηται φέρησθον φέρωνται इत्या॰

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ φέροι φεροίτην φέροιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ φέροιτο φεροίτην φέροιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ φερέτω φερέτων φερόντων वा φερέτωσαν इ॰

आत्मनेपद।

प्र· εἰρήσθω εἰρήσθων εἰρήσθων वा σθωσαν

संज्ञाभाव।

εἰρῆσθαι

विशेषणभाव।

εἰρημενο

इत्येवं

प्र· εἴρητο εἰρήσθην εἴρηντο इत्यादि

२लुङ

वार्त्ताभाव।

प्र· ἐῤῥήθη ἐῤῥήθητην ἐῤῥήθησαν इत्यादि

लेट्भाव।

प्र· ῥηθῇ ῥηθῆτον ῥηθῶσι इत्यादि

लिङ्भाव।

प्र· ῥηθείη ῥηθειήτην ῥηθείησαν इत्यादि

लोट्भाव।

प्र· ῥηθήτω ῥηθήτων ῥηθήτωσαν इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἐρεῖν

विशेषणभाव।

ἐροόντ

१ लिट्

वाच्यभाव।

प्र॰ εἴρηκε εἰρήκατον εἰρήκασι इत्यादि

संज्ञाभाव।

εἰρηκέναι

विशेषणभाव।

εἰρηκοτ

१ लोट्

प्र॰ εἰρήκει εἰρηκείτην εἰρήκεισαν इत्या

१ लिट्

कर्म्मभाव।

प्र॰ εἴρηται εἴρησθον εἴρηνται इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· εἰρήσθω εἰρήσθων εἰρήσθων वा σθωσαν

संज्ञाभाव।

εἰρῆσθαι

विशेषणाभाव।

εἰρημενο

इत्ताङ्

प्र· εἴρητο εἰρήσθην εἴρηντο इत्यादि।

२लुङ्

वाह्नीभाव।

प्र· ἐῤῥήθη ἐῤῥήθητην ἐῤῥήθησαν इत्यादि

लेट्भाव।

प्र· ῥηθῇ ῥηθῆτον ῥηθῶσι इत्यादि

लिङ्भाव।

प्र· ῥηθείη ῥηθειήτην ῥηθείησαν इत्यादि

लोट्भाव।

प्र· ῥηθήτω ῥηθήτων ῥηθήτωσαν इत्यादि

।११०। BAΣTAΔ BAΣTAΓ

BAΣTAΓ से २ लच् ।

BAΣTAΔ से और सब लकार ।

।१११। 'EΔ ΦAΓ

ΦAΓ से १ लङ् ।

'EΔ से और सब लकार ।

।११२। ΠI ΠO

ΠI से १ लङ् २ लट् लट् लङ् ।

ΠO से १ लिट् २ लिट् २ लच् ।

।११३। TPAΓ TPΩΓ

TPAΓ से १ लङ् ।

TPΩΓ से लट् लङ् २ लट् ।

।११४। 'EΓEP

का २ लिट् । ἐγρηγορε ἐγρηγόρατον ἐγρηγόρασι

।११५। 'EΔ

का १ लृट्। ἐδεῖται ἐδεῖσθον ἐδοῦνται इत्यादि

१३६। 'ΕΘ

का २ लिट् । εἴωθε εἰώθατον εἰώθασι इत्यादि

१३७। 'ΕΙΚ

का २ लिट् । वार्त्ताभाव । ἔοικε ἐοίκατον ἐοίκασι

विशेषण । εἰκοτ'

१३८। 'ΕΔ और ΠΙ

के २ लृट् विना σ होनेहै । यथा ἔδεται πίεται

१३९। ΠΕΤ (गिर)

का १ लङ् । ἔπεσε ἐπεσέτην ἔπεσον

उसका १ लृट् । πεσεῖται πεσεῖσθον πεσοῦνται इत्यादि

१४०। 'ΡΑΓ

का २ लिट् । ἔῤῥωγε ἐῤῥώγατον
ἐῤῥώγασι इत्यादि

१४१। ΤΑΦ

का लट् । θάπτει θάπτετον θάπτ-
ουσι इत्यादि
३ लिट् τέθαπται τέθαφθον इत्यादि

१४२। ΧΥ

का २ लृट् । पर० χεύσει χεύσετον
χεύσουσι इत्यादि
आ० χέεται χέεσθον χέονται इत्यादि
२ लङ् । ἔχεε ἐχεάτην ἔχεαν इत्यादि

१४३। ΧΡΕ

केवल प्रथम पुरुष में होता है।

लट् । वार्त्ताभाव । χρή
लेट् भाव । χρῇ
लिङ् भाव । χρείη
संज्ञाभाव । χρῆναι

विशेषणाभाव। χρεωντ
लङ् ἐχρῆν वा χρῆν
२ लट् χρήσει

अथ नामों का वर्णन।

नवम अध्याय। मूलनामपाठ।

१४४। १। संज्ञा।

ἀγαπα	प्रेम	ἀγρα	अहेर
ἀγκαλα	सिमटी हुई भुजा	ἀγρο	खेत
ἀγκυρα	लंगर	ἀγων	बलप्रदर्शक युद्ध
ἀγορα	हाट	ἀερ	वायु

ἀετο	गृध्र
Ἀθηνα	सरस्वती
αἰδο	लज्जा
αἱματ	लोहू
αἰνο	प्रशंसा
αἰγ	बकरा
αἰσχες	निन्दा
αἰων	आयुष
ἀκμα	नोक
ἀλγες	दुःख
ἁλ	लवण
ἀλωπεκ	लोमड़ी
ἀμμο	बालू
ἀμνο	मेमना
ἀμπελο	दाखलता
ἀναγκα	आवश्यकता
ἀνακτ	राजा
ἀνεμο	बहता हुआ वायु
ανερ	पुरुष (नर)
ἀνθες	पुष्प
ἀνθρωπο	मनुष्य
ἀντρο	गुफा
ἀπατα	कपट
Ἀπολλων	आदित्य
ἀρα	शाप
ἀργυρο	रूपा
Ἀρες	युद्धकादेव
ἀρθρο	देहका गांठ
ἀριθμο	गिनती
ἀριστο	प्रातःकाल का भोजन
ἀρκτο	भालू(ऋच्छ)
ἁρματ	रथ
ἀρνο	मेमना
ἀρσεν वा ἀῤῥεν	पुलिङ्ग
ἀσκο	मशक
ἀσπιδ	फणी
ἀστερ	तारा (ο,ω)

ἀστυ नगर	γαστερ पेट
ἀστραπα बिजली	γεφυρα पुल
αὐγα ज्योति	γηρατ वृद्धावस्था
αὐλα आंगन	γιγαντ दैत्य
ἀφρο फेन	γλωσσα जीभ
ἀχθο भार	γονατ घुटना
βασνο कसौटी	γονυ घुटना (जानु)
βασιλευ राजा	γραϝ वृद्धा
βια बल	γυναικ स्त्री
βιο जीवन	γωνια कोण
βοα चीत्कार	δαιμον देव
βοϝ बैल वा गाय (गो)	δακρυ आंसू (अश्रु)
βορεα उत्तर दिशा वा वायु	δακτυλο अङ्गुली
βραβευ अङ्गीकृत न्यायी	δανες ऋण
βραχιον बाहु	δαπανα व्यय
βροντα गरज	δειπνο संध्याकाल का भोजन
βυβλο जलकासरपत	δελφυ योनि
βωμο ऊंची वेदी	δενδρο वृक्ष
γα पृथिवी (गो)	δεσποτα स्वामी
γαλακτ दूध	δημο प्रजा
γαληνα नौका	

ΔιF	स्वर्गराज (द्यु)
δικο	न्याय
δικτυο	जाल
διψα	प्यास
δολο	छल
δορυ	दरु (दारु)
δρακοντ	अतिभयानक सर्प
δροσο	ओस
Fεαρ	वसन्त (ـلهـ)
ἐγω	मैं (अहम्)
ἐδαφες	तला
ἐθνες	जाति
εἰρηνα	मेल
ἐλαια	जैतूनकापेड़
ἐλεο	दया
ἐλεφαντ	हाथी (इभ)
ἑλκες	घाव
Ἑλλαδ	यवनदेश
Ἑλλην	यवन
ἐθες	रीति
ἐνο	बरस
ἐπηρεια	दुर्व्यवहार
ἐργο	कार्य्य
ἐριδ	झगड़ा
Ἑρμα	बुधवा गणेश
ἑσπερα	संध्याकाल
ἐτες	बरस
εὐνα	पलंग
εὐρο	पूर्वीदिशाकावायु
ζεα	जव
ζηλο	जयकी इच्छा
ζημια	हानि
ἡβα	युवावस्था
ἡλιο	सूर्य्य
ἡμε	हम
ἡμερα	दिन
ἡπαρ	कलेजा (यकृत्)
ἡρω	आर्य
ἠχο	शब्द
ἠο	और
θαλασσα	समुद्र

θαλπες	उष्णता	καρα	सिर (शिरस)
θαρσες	साहस	καρδια	हृदय
θεο	देव	καρπο	फल
θεμιδ	धर्म	καυχα	घमण्ड
θηρ	वन्य पशु	κεραμο	मट्टी
θορυβο	हुल्लड़	κερατ	सींग (शृङ्ग)
θρονο	आसन	κερδες	लाभ
θυγατερ	पुत्री (दुहितृ)	κεφαλη	सिर
θυμο	जीव	κηπο	वाटिका
θυρα	द्वार	κηρ	मोम
θωραξ	चमास	κηρυξ	प्रचारक
ἱμαντ	तसमा	κιθαρα	वीणा
ἱματιο	वस्त्र	κινδυνο	जोखिम
ἰο	विष वा मोर्चा	κλαδο	शाखा
ἱππο	घोड़ा (अश्व)	κλεες	यश
ἰσχυ	सामर्थ्य	κλειδ	कुञ्जी
ἰχθυ	मत्स्य	κληρο	चिट्ठी (डालनेकी)
καιρο	अवसर	κολακ	चापलूस
καλαμο	सरपत	κολπο	गोदी
καμινο	तन्दूर	κομα	केश
καπνο	धूआँ	κονι	धूलि

κοπρο विष्ठा
κοραχ काक
κορυφα शिखा
κοσμο क्रम वा जगत
κρατες बल
κρεατ मांस
κυδες कीर्ति
κυκλο चक्र
κυν कुत्ता (श्वन्)
κυον कुत्ता (श्वन्)
κυρες अधिकार
κωλο अङ्ग
κωμο चकरवा
λαο प्रजागण
λεοντ सिंह
λιθο पत्थर
λιμεν बन्दर
λιμνα झील
λιμο अकाल
λινο शाण

λυκο भेड़िया
λυπα शोक
λυχνο दीपक
μαρτυρ साक्षी
μαστιγ कोड़ा
μαστο स्तन
μελες अङ्ग
μελιτ मधु
μεταλλο खानि
μετρο मात्र
μην मास
μητερ माता (मातृ)
μηχανα उपाय
μισθο वेतन
μο मुझ
μογο श्रम
μοιχο परस्त्रीगामी
μορφα मूर्ति
μουσα सरस्वतीगण

πολεμο युद्ध
πολι नगर (पुरि)
ποταμο नदी
πτερνα एड़ी
πυλα किवाड़
πυρ आग
πυρο आग
πυργο बुर्ज
ῥαβδο छड़ी
ῥιγες दराड़
ῥιζα जड़
ῥιν नाक
ῥοδο गुलाब
σαλο चञ्चलता
σαρκ मांस
σεληνα चन्द्र
σηματ चिह्न
σθενες शक्ति
σιγα चुपरहना
σιδηρο लोहा
σιτο गोहूं

σιωπα चुपरहना
σκελες जांघ ग्रौरपांव
σκευος पात्रवा समान
σκηνα डेरा
σκια छाया
σκοτες अन्धियारा
σπλαγχνο अन्तड़ी
σο तू
σποδο राख
σταφυλα गुच्छा
σταχυ अनाजकाबाल
στηθος छाती
στοιχο पंक्ति
στοματ मुख
στρατο सेना
στρουθο चिड़िया
συκο अञ्जीर
σφαιρα गेंदा
σφε वेआप
σος अपना (स्व)
σφω तुमदो (वाम

σφω	वे दो आप	ὑδατ	जल
σφραγιδ	मुद्रा	ὑδωρ	जल
σχοινο	रस्सा	ὑιο	पुत्र
σχολα	अवकाश	ὑλα	वन
σωματ	देह	ὑμε	तुम (यूयम्)
ταμια	भण्डारी	ὑμνο	गीत
ταυρο	सांड़	ὑπνο	स्वप्न
τειχες	भित्ति	ὑψες	ऊंचाई
τεκτον	बढ़ई (तक्षन)	φαρμακο	औषध
τελες	अन्त	φεγγες	उंजियाला
τερατ	आश्चर्य की बात	φθονο	डाह
τεχνα	शिल्प	φοβο	भय
τολμα	हियाव	φοιτο	परिभ्रमण
τοξο	धनुष	φρεν	हृदय
τοπο	स्थान	φυλλο	पत्ती
τραγο	बकरा	φωνα	वाणी
τριχ	केश	φωρ	चोर
τυραννο	स्ववशीभूत स्वामी	χαλκο	ताम्बा
		χαριτ	कृपा
ὑ	शूकर	χειλες	ओंठ
ὑβρι	बलात्कार	χειματ	जाड़ा (हिम)

χειρ हाथ (कर)	ὠτ कान
χην हंस	
χθον भूमि	२। विशेषण।
χιον हिम	
χλευα ठट्ठा	ἀγαθο भला
χολα पित्त	ἁγιο पवित्र
χορο नाच	ἁγνο निर्मल
χορτο घास	ἀθροο घन
χρονο समय	ἀκολουθο अनुगामी
χρυσο सोना	ἀκριβες ठीक
χρωτ चमड़ा	ἀκρο उत्तम
χωρα देश	ἀληθες सत्य
ψηφο कङ्कर	ἀλλο अन्य
ψοφο रव	ἀμεινον भद्रतर
ψυχα प्राण	ἀμφο दोनों (उभ)
ψωμο टुकड़ा	ἀξιο योग्य
ὠμο कन्धा	ἀπαλο कोमल
ὠνο मोल	ἀριστερο बायां
ὠο अण्डा	αὐτο वही वा यही
ὡρα } कोई परिमित समय	αὐτο यह
	βαθυ गहिरा

βαρβαρο म्लेच्छ
βαρυ भारी(गुरु)
βελτο अच्छा
βεβαιο स्थिर
βοηθο उपकारक
βραδυ धीरा
βραχυ अदीर्घ
γειτον प्रतिवासी
γεροντ वृद्ध
γλυκυ मीठा
γυμνο नंगा
δειν अमुक
δεκα दस (दश)
δεξιο दहिना(दक्षिण)
δηλο प्रगट
διακονο परिचारक
δουλο सेवक
δυο दो (द्वौ)
ἑ यह (इ)

ἐγγο निकट
εἰκοσι बीस(विंशति)
ἑκα एक
ἑκατον सौ (शतम्)
ἐκεινο वह
ἑκοντ स्ववशीभूत
ἐλαφρο हलका
ἐλαχυ छोटा (लघु)
ἐλευθερο निर्बन्ध
ἑν एक
ἐννεϜα नौ (नव)
ἑξ छः (षष्)
ἑπτα सात(सप्त)
ἐρημο शून्य
ἐρυθρο लाल
ἑταιρο संगी
ἑτοιμο सिद्ध
εὐθυ सीधा
εὐρυ चौड़ा

ἥμερο	नम्रस्वभाव	λευκο	श्वेत
ἤπιο	कोमलस्वभाव	μακαρ	धन्य
ἥσσον वा ἥττον	न्यून	μακρο	लम्बा
ἥσυχο	निश्चल	μαλακο	कोमल
θερμο	उष्ण	μεγα	बड़ा (महत्)
θηλυ	स्त्रीलिङ्ग	μεγαλο	बड़ा
θρασυ	ढीठ	μελαν	काला
ἴδιο	निज	μεσο	मध्य
ἱερο	दैव	μιο	एक
ἱκανο	पात्र	μικρο	छोटा
ἴσο	तुल्य	μονο	अकेला
καθαρο	निर्मल	μυριο	दससहस्र
καινο	नया	μωρο	मूर्ख
κακο	बुरा	νεϝο	नया (नव)
καλο	सुन्दर	νεκρο	मृतक
κενο	सूना	ξανθο	पीला
κοιλο	छूछा	ξενο	परदेशी
κοινο	साधारण	ξηρο	सूखा
κουφο	हलका	ὁ	जो (यत्)
κωφο	गूंगा वा बहिरा	ὁ	सो (स)

ὀκτω	आठ (अष्टौ)
ὀλιγο	थोड़ा
ὁλο	सबका (सर्व)
ὀξυ	तीक्ष्ण
ὀρθο	सीधा
ὀρφανο	हीन
ὁσιο	धर्मी
οὑτο	यह
παντ	सब
παχυ	मोटा
πεντε	पांच (पञ्च)
πικρυ	कड़ुआ
πιον	चर्बी से मोटा (पीवन्)
πλατυ	चौड़ा
ποικιλο	चित्र
πολλο	बहुत
πολυ	बहुत
πραο	कोमलस्वभाव
πραυ	कोमलस्वभाव
πρεσβυ	बुढ़ा
πυκνο	घन
ῥαδιο	सहज
σαφες	स्पष्ट
σκληρο	कठोर
σκολιο	टेढ़ा
σοφο	ज्ञानी
στειρο	ऊसर
στερεο	दृढ़ (स्थिर)
στενο	सकेत
σφοδρο	अत्यन्त
ταυτο	यह
ταπεινο	नीचा
ταχυ	शीघ्र
τερεν	कोमल
τετταρ	चार (चतुर्)
τιν	कौन वा कोई (किम्)
το	सो (तद्)
τουτο	यह
τραχυ	अडबड
τρι	तीन (त्रि)
τυφλο	अन्धा

ὑγιες	स्वस्थ	ἀλλὰ	नवरन
ὑγρο	ओदा	+ἀμφὶ	दोनों ओर
φαυλο	निकम्मा	ἂν	संदेहवाचक शब्द
φιλο	प्यारा	+ἀνὰ	ऊपरकी ओर (अनु)
χαλεπο	कठिन	ἄνευ	विना
χειρον	दुष्टतर	+ἀντὶ	सम्मुख
χηρο	हीन	+ἀπὸ	दूरकी ओर
χιλιο	सहस्त्र	ἄρα	इस कारण
χλωρο	हरा	ἆρα	प्रश्नवाचक शब्द
χωλο	लंगड़ा	+ἄρτι	तत्क्षण
ψιλο	पतला	αὖ	पीछेकी ओर
ὠκυ	शीघ्र (आशु)	αὔριον	आनेवाला कल (श्वः)
ὠμο	कच्चा	ἄχρι	तक
		γὰρ	क्योंकि
३। अव्यय।		γε	निश्चयवाचक शब्द
		δὲ	परन्तु (तु)
ἄγαν	अत्यन्त	δεῦρο	इधर
+ἀγχι	निकट	δὴ	दृढ़तावाचक शब्द
ἀεὶ	सर्व्वदा	+διὰ	विभागवाचक शब्द (द्वि)
ἅλις	बस (अलम्)	εἰ	यदि

+εἰς भीतरकी ओर	μέχρι तक
+ἐκ बाहरकी ओर(उत्)	μή मतवान (मा)
ἐκεῖ वहां	νῦν अब
+ἐν, भीतर (नि)	οὐ नहीं
ἕνεκα निमित्त	ναί हां
ἐπεὶ इसलिये कि	+ὀψὲ विलम्बमें
+ἐπὶ ऊपर (अभि)	+πάλαι पूर्वकालमें(पुरा)
εἶτα तदनन्तर	+πάλιν फिर(पुनर्)
ἔτι अबभी	+παρὰ पास (परा)
+εὖ अच्छीरीतिसे	πέλας निकट
ἤ वा	+περ आधिक्य वाचकशब्द
ἤ से (आधिक्यवाचकशब्द)	περα पार
ἤδη अबतक	+περὶ चारों ओर(परि)
ἵνα जिस्से	+πρὸ आगे की ओर(प्र)
καὶ औरभी (च)	+πρὸς पास (प्रति)
+κατὰ नीचेकी ओर	πω अबतक
λίαν अधिककरके	+συν संग (सम्)
μάλα अत्यन्त	τάχα कदाचित्
μάτην निष्कारण	τε और (च)
μὲν तो	+ὑπὲρ ऊपर (उपरि)
+μετὰ मध्यमें	+ὑπὸ नीचे (उप)

φεῦ	वाह	-βλα	द्रुपणवाचकशब्द
χαμαί	भूँईपर	-δίς	दो (द्वि)
χωρίς	अलग	-δυς	दुःखवाचकशब्द (दुस्)
χθές	गयाकल(ह्यः)	-ἡμι	आधा (सामि)
ὦ	आह	-νη	अभाववाचकशब्द (न)
-ἁ वा ἀ	ऐक्यवाचकशब्द	-τῆλε	दूर
-ἀν	अभाववाचकशब्द		

१४५। इन अव्ययों में से जिन के पहिले — यह चिह्न हम ने लिखा सो अलग कभी नहीं मिलते हैं केवल समासों के आदि में। और जिन के पहिले हमने + यह चिह्न लिखा है सो अलग भी और समासों में भी मिलते हैं। अवशिष्ट सब अव्यय केवल अलगही मिलतेहैं।

दशम अध्याय — नामोंकानिर्माण।

१४६। ऊपरिलिखित मूलनामों से अधिक और

बहुत नाम हैं जो क्रियाओं वा और २ नामों से बनते हैं। इन के बनने की रीतियां अवलिखते हैं।

१। संज्ञाओं का निर्माण।

१। कितनी संज्ञाएं धातुओं से ठीक मिलतीहैं यथा ΦΥΛΑΚ से φυλακ रक्षक। २। कितनी केवल धातु के स्वर को बदल देतीहैं यथा ΦΛΕΓ से φλογ ज्वाला। ३ कितनी ο वा α लगादेतीहैं यथा ἘΥΧ से εὐχα प्रार्थना ΔΙΔΑΧ से διδαχα शिक्षा ΧΑΡ से χαρα आनन्द ΛΕΓ से λογο वचन ΤΥΠ से τυπο मार वा मूर्ति जो मारने से बनती है ΤΡΕΠ से τροπο फेरवा रीति। ये संज्ञाएं प्राय क्रियाही बतातीहैं परन्तु कभी २ कर्त्ता को यथा ΤΡΕΦ से τροφο पालक ἀνθρωπο और

φεῦ	हाय	-βλαα	दूषणवाचकशब्द
χαμαί	भूमिपर	-δι	दो (द्वि)
χωρίς	अलग	-δυσ	दुःखवाचकशब्द (दुर्)
χθές	गयाकल (ह्यः)	-ἡμι	आधा (सामि)
ὦ	अहह	-νη	अभाववाचकशब्द (न)
-ἀ वा ἁ	ऐक्यवाचकशब्द	-τηλε	दूर
-ἀν	अभाववाचकशब्द		

१४५। इन अव्ययों में से जिन के पहिले — यह चिह्न हम ने लिखा सो अलग कभी नहीं मिलते हैं केवल समासों के आदि में। और जिन के पहिले हमने + यह चिह्न लिखा है सो अलग भी और समासों में भी मिलते हैं। अवशिष्ट सब अव्यय केवल अलगही मिलतेहैं।

दशम अध्याय — नामोंकानिर्माण।

१४६। ऊपरिलिखित मूलनामों से अधिक और

बहुत नाम हैं जो क्रियाओं वा और २ नामों से बनते हैं। इन के बनने की रीतियां अवलिखते हैं।

१। संज्ञाओं का निर्माण।

१। कितनी संज्ञाएं धातुओं से ठीक मिलतीहैं यथा ΦΤΛΑΚ से φυλαϰ रक्षक। २। कितनी केवल धातु के स्वर को बदल देतीहैं यथा ΦΛΕΓ से φλογ ज्वाला। ३ कितनी ο वा α लगादेतीहैं यथा ʼΕΤΧ से εὐχα प्रार्थना ΔΙΔΑΧ से διδαχα शिक्षा ΧΑΡ से χαρα आनन्द ΛΕΓ से λογο वचन ΤΤΠ से τυπο मार वा मूर्ति जो मारने से बनती है ΤΡΕΠ से τροπο फेरवा रीति। ये संज्ञाएं प्राय क्रियाही बतातीहैं परन्तु कभी २ कर्त्ता को यथा ΤΡΕΦ से τροφο पालक ἀνθρωπο और

KIEN से ἀνθρωποκτονο मनुष्यघाती ।

४। कितनी σα लगाती हैं यथा ΔΟΚ से δοξα मतवामहिमा ।

५। कितनी σι वा σια लगाती हैं यथा λεξι उक्ति βασι गति φυσι भूति अर्थात् स्वभाव वा प्रकृति πραξι कृति θυσια हुति अर्थात् यज्ञ ἀκρασια अशक्ति । ये प्रत्यय संस्कृत ति से ठीक मिलते हैं और सदा क्रियाही को बनाते हैं ।

६। कितनी μο वा σμο लगाती हैं यथा ΔΕ से δεσμο बन्धन ΣΕΙ से σεισμο भूई कांप ὀδυρμο रोदन । ये भी सदा क्रियाही को बनाते हैं ।

७। कितनी μα लगाती हैं यथा MNA से μνημα स्मृति ΓΝΟ से γνωμα ज्ञान ΤΙ से τιμα मोल वा आदर । ये कभी क्रिया और कभी २ कर्म बनाते हैं ।

८। कितनी ματ लगातीहैं यथा πραγματ कर्म γραμματ जो लिखा हुआ है σπερματ बोयाहुआ बीज। ये संस्कृत मनसे ठीक मिलतेहैं और सदा कर्म को बतातेहैं।

९। कितनी ες लगातीहैं यथा ΓΕΝ से γενες जाति।

१०। कितनी το वा ετο वा ατο लगातीहैं यथा ΠΟ से ποτο पानी ΥΓ से υετο वृष्टि ΘΑΝ से θανατο मृत्यु।

११। कितनी τα वा τηρ वा τορ लगाती हैं यथा ΜΑΘ से μαθητα शिष्य ΚΡΙΝ से κριτα विचारक ΣΩ से σωτηρ त्राता ΡΕ से ρητορ वक्ता। ये संस्कृत तृ से ठीक मिलते हैं और सदा कर्त्ता को बताते हैं।

१२। कितनी उसी अर्थमें ευ लगातीहैं यथा γραφευ लेखक।

१३। कितनी τρο वा τρα वा τηριο लगाती

हैं यथा λουτρο स्नानपात्र δικαστηριο (जो δικαδ क्रियासे बनाहै और यह δικα से) न्यायालय। ये संस्कृत त्र से ठीक मिलतेहैं और क्रिया के स्थान वा पात्र की बताते हैं।

१४। कितनी संज्ञाएं विशेषणों अ और २ संज्ञाओं से ια के लगाने से बनती हैं यथा ἀνερ से ἀνδρια पौरुष। इसके पहिले विशेषण का अन्त्य स्वर लुप्त होताहै यथा σοφο से σοφια पाण्डित्य κακο से κακια बुराई ἀνοο से ἀνοια मूढ़ता। और विशेषण के अन्त का το σια होताहै यथा ἀθανατο से ἀθανασια अमरता। और ες और ευ प्राय ειαहोतेहैं यथा ἀληθες से ἀληθεια सत्यता βασιλευ से βασιλεια राज्य। किन्तु ἀμαθες से ἀμαθια शिक्षाहीनता और πενητ दरिद्र से

πενια दरिद्रता होतेहैं।

१५। कितनी τητ लगातीहैं यथा ἰσο से ἰσοτητ तुल्यता θεο से θεοτητ देवता। यह संस्कृत ता से मिलताहै।

१६। कितनी συνα लगातीहैं यथा δικαιο निर्दोष से δικαιοσυνα निर्दोषता। इसके पहिले से विशेषण का अन्त्य ν लुप्त होताहै यथा σωφρον जितेन्द्रिय से σωφροσυνα जितेन्द्रियता। और जब ο-अन्त विशेषणों के ο के पहिले ह्रस्व स्वर है तब अन्त्य ο ω होता है यथा ἁγιο से ἁγιωσυνα पवित्रता।

१७। कितनी ες लगाती हैं और इस से पहिले से विशेषण का अन्त्य υ लुप्त होता है यथा βαθυ से βαθες गम्भीरता ταχυ से ταχες शीघ्रता।

१८। संख्यावाचक विशेषणों से संज्ञाएं बनती है जिनका अर्थ है संख्याका समूह। यथा

μοναδ पैका δυαδ द्वय τριαδ त्रय τετραδ समूह ἑβδομαδ सप्त δεκαδ दशन् ἑκατονταδ सौका समूह ।

१९। कितनी संज्ञाएं और २ संज्ञाओं से τα के लगाने से बनती हैं यथा πολι से πολιτα नगरवासी।

२०। कितनी ευ वा ιευ लगाती हैं यथा ἱερο से ἱερευ याजक ἀλ से ἀλιευ मछुवा।

२१। कितनी ων लगाती हैं यथा ἐλαια से ἐλαιων जैतून के पेड़ों की वारी ἀμπελο से ἀμπελων द्राक्षाक्षेत्र।

२२। स्त्रीलिङ्ग के बनाने के लिये α-अन्त पुंलिङ्ग संज्ञाएं ιδ लगाती हैं यथा δεσποτα से δεσποτιδ स्वामिनी। οντ-अन्त संज्ञाएं αινα लगाती हैं यथा λεοντ से λεαινα सिंहकीस्त्री। ευ-अन्त

संज्ञाएं εια वा ισσα लगाती हैं यथा βασιλεια वा βασιλεσσα रानी ।

२३। देशवासी के बनाने के लिये कितने देशों के नाम ιο वा αιο लगाते हैं यथा Ἀθηνα से Ἀθηναιο Κορινθο से Κορινθιο कितने ανο ηνο ινο लगाते हैं यथा Ἀσια से Ἀσιανο कितने ιτα ητα ατα ιωτα लगाते हैं यथा Ἱεροσολυμα से Ἱεροσολυμιτα Ἰσχαρα Ἰσχαριωτα और कितने ευ लगाते हैं ।

२४। पुलिङ्ग सन्तान के बताने के लिये पितरों के नाम ιδα αδα ιαδα और स्त्रीसन्तान के बताने के लिये ιδ αδ लगाते हैं ।

२५। लघुता के बताने के लिये कितनी संज्ञाएं ιο ιδιο αριο ισχο ισχα लगाती हैं यथा παιδ से παιδιο छोटा

लड़का θηρ से θηριο छोटा पशु πλοιο नावसे πλοιαριο छोटी नाव πιναx से πιναxιδιο छोटी पाटी παιδ से παιδισxα छोटी लड़की।

२। विशेषणों का निर्म्माण।

२४७। MO से ἐμο मेरा σο से σο तेरा ἡμε से ἡμετερο हमारा ὑμε से ὑμετερο तुम्हारा ὁ वह आप से ὁ उस· का अपना σφε से σφετερο उनका अपना बनते हैं।

२४८। १। कितने विशेषण और २ नामों से ιο वा αιο वा ειο के लगाने से बनते हैं और इन के पहिले से अन्त्य स्वर कभी२ निकलता है कभी २ नहीं और कभी २ अ· न्त्य ες भी निकलता है। यथा οὐρανο से οὐρανιο स्वर्गीय φιλο से φιλιο

प्यारकरनेवाला κυρες से κυριο अधिकारी वा प्रभु θεο से θειο दैव ἀγορα से ἀγοραιο हाटवाला πατερ से πατριο पैत्र γυναιχ से γυναιχειο स्त्रीसम्बन्धी। το σιο होता है यथा πλουτο से πλουσιο धनी।

२। कितने εο लगाते हैं यथा χρυσο से χρυσεο सोनहला। ये विशेषण उस वस्तु को बताते हैं जिससे कोई पदार्थ बना है।

३। कितने ιχο वा τιχο वा αχο लगाते हैं यथा ΚΡΙΝ से χριτιχο विचारक σωματ से σωματιχ शारीरिक Ἑλλην से ἑλληνιχ। ये प्रत्यय संस्कृत इक से मिलते हैं।

४। कितने ινο लगाते हैं यथा ἀνθρωπο से ἀνθρωπινο मानुष λιθο से λιθινο पत्थर का πεδο से πεδινο

चोड़स ὀρες से (ὀρεσινο कीसन्ती) ὀρεινο पहाड़ी।

५। कितने λο वा ηλο वा ωλο लगाते हैं यथा ΔΙ से δειλο भीरु ἉΜΑΡΤ से ἁμαρτωλο पापी।

६। कितने ιμο वा σιμο लगाते हैं यथा ὀφελες से ὠφελιμο लाभदायक ΧΡΑ से χρησιμο कामके योग्य।

७। कितने ρο वा ερο लगाते हैं यथा οἰκτο से οἰκτρο करुणायोग्य ΣΑΠ से σαπρο सड़ा νοσο से νοσερο रोगी ΦΑΝ से φανερο प्रकाशित।

८। कितने εντ वा οεντ लगाते हैं यथा χαριτ से χαριεντ शोभायमान αἱματ से αἱματοεντ लहूलुहान।

९। कितने ωδες लगाते हैं यथा γυναικωδες स्त्रीयोग्य।

१०। कितने μον लगाते हैं यथा ἐπι और ΣΤΑ से ἐπιστημον बुद्धिमान ἐλεο से ἐλεημον दयावान ΜΝΑ से μνημον स्मरण करनेवाला। यह संस्कृत मत् वत् से मिलता है।

११। कितने υ लगाते हैं यथा ʽΗΔ से ἡδυ सुखदायक।

१२। कितने αν लगाते हैं यथा ΤΛΑ से τα-λαν, दुःखी।

१३। कितने τιο लगाते हैं यथा ʼΑΡ(जोड़) से ἀρτιο ठीक।

४९। सह क्रियाओं से दो प्रकार के विशेषण बन सकते हैं। दोनों क्रिया के उस रूप से बनते हैं जो २ रूप में उत्तम होता है।
१। पहला τεο के लगाने से बनता है। इस का अर्थ ठीक संस्कृत तव्य से मिलता है यथा ποιητεο कर्तव्य λεκτεο वक्तव्य

φερτεο भरणीय।

२। दूसरा प्राय το के लगाने से परन्तु थोड़ी क्रियाओं से νο के लगाने से बनता है। इस का अर्थ ठीक संस्कृत त वा न से मिलता है यथा βατο गत γραπτο लिखित δοτο दत्त θετο हित χλυτο श्रुत ἰτο इत ληπτο लब्ध στυγνο हिष्ट ΔΙ से δεινο भीत भ- यीन् डरावना ΣΕΒ से σεμνο पूजित।

अथ तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक विशेषणों का वर्णन।

१५०। सब गुणवाचक विशेषणों और बहुत अव्ययों के तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक रूप होते हैं।

१५१। तरवर्थवाचक का अर्थ यह है कि जिस गुण वा गुणों के अभाव का चर्चा है सो एक में दूसरे से वा कितने विशिष्ट दूसरों

से अधिक मिलताहै।

१५२। तमवर्थवाचक का अर्थ यह है कि जिस गुण वा गुण के अभाव का वर्त्ता है सो एक में और सभों से अधिक मिलताहै।

१५३। तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक दो प्रकार से बनते हैं। कितने विशेषण तरवर्थवाचक के लिये τερο(तर) और तमवर्थवाचक के लिये τατο(तम) लगाते हैं और कितने विशेषण तरवर्थवाचक के लिये ιον(ईयन) और तमवर्थवाचक के लिये ιστο(इष्ठ) लगाते हैं।

१५४। जो विशेषण τερο और τατο लगाते हैं उनमें से जिनके अन्तमें ς को छोड़कै और कोई व्यंजन है सो अपने और τερο τατο के बीचमें εσ लगाते हैं यथा σωφρον से σωφρονεστερο σωφρονεστατο। और जितने ο—अन्त विशेषण हैं यदि इस ο से पहिले जो स्वर है

के तरवर्थवाचक के अर्थ में ἐλασσον वा ἐλαττον और ἡσσον वा ἡττον का और μιχρο ही के तमवर्थवाचक के अर्थ में ἐλαχιστο का प्रयोग होता है।

३। χαχο के तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक के अर्थ में न केवल χαχιον χαχιστο वरन χειρον χειριστο और ἡσσον वा ἡττον ἡχιστο का प्रयोग होता है।

१५९। ἑχα के केवल तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक का प्रयोग होता है। ἑχατερο का अर्थ है दोनों में प्रत्येक। ἑχαστο का अर्थ है बहुत में प्रत्येक।

१६०। ἑ (यह) के तरवर्थवाचक ही का प्रयोग होता है। ἑτερο का अर्थ है इतर अर्थात दोनों में दूसरा।

अथ संख्यावाचक विशेषणों का वर्णन

१८१। ऊपरिलिखित संख्यावाचक विशेषणों से ये भी बनते हैं।

१। ἑνδεκα ग्यारह δωδεκα बारह τρισκαιδεκα तेरह τεσσαρες καιδεκα चौदह πεντε καιδεκα पन्द्रह ἑκκαιδεκα सोलह इत्यादि।

२। τριακοντα तीस τεσσαρακοντα चालीस πεντηκοντα पचास ἑξηκοντα साठ ἑβδομηκοντα सत्तर ὀγδοηκοντα अस्सी ἐνενηκοντα नब्बे।

३। διακοσιο दोसौ τριακοσιο तीनसौ τετρακοσιο चारसौ πεντακοσιο पांच सौ इत्यादि।

१८२। क्रमप्रकाशक संख्यावाचक विशेषण ऊपरिलिखित संख्यावाचक विशेषणों से प्रायः το के लगाने से बनते हैं यथा τριτο तीसरा τεταρτο चौथा πεμπτο पांचवां

ἕκτο छठवां ἔνατο नौवां δεκατο दस-
वां εἰκοστο बीसवां τριακοστο ती-
सवां πεντηκοστο पचासवां ἑκατο-
στο सौवां διακοσιοστο दो सौवां
χιλιοστο हजारवां μυριοστο दस-
हजारवां इत्यादि ।

१६३ । परन्तु प्रथम का नाम ἕν से नहीं ब-
ना है वरन προ कालमध्यवाचक है। और
द्वितीय का नाम δυο कालान्तरार्थवाचक है
अर्थात् δευτερο । और सप्तम का नाम
ἑβδομο और अष्टम का नाम ὀγδ-
οο है ।

१६४ । πλοο के लगाने से गुणन वाचक
विशेषण होते हैं यथा ἁπλοο एकगु-
ण διπλοο दोगुण τετραπλοο
चारगुण इत्यादि ।

३। अव्ययों का निर्माण।

१८५। १। कितने अव्यय क्रियाओं से δην के लगाने से बनते हैं यथा ΚΡΥΒ से κρύβδην गुप्तरीतिसे ΑΜΕΙΒ से ἀμοιβδην बारी बारी।

२। कितने क्रियाओं से τι लगाने से बनते हैं यथा ὀνομασ से (ὀνομαστι की सन्धी) ονομαστι नाम लेके Ἑλλην से ἑλληνιδ यवनभाषाबोलना और इस से ἑλληνιστι यवनभाषामें।

३। कितने संज्ञाओं से ι वा ει के लगाने से बनते हैं यथा πανοικι समस्त घर सेहत πανδημει समस्त लोगसमेत।

४। कितने ις लगाते हैं यथा μογο से μογις वा μολις श्रम वा कठिनता से।

५। कितने अव्यय और २ अव्ययों से बनते हैं। यथा

αὐ से αὖθις फिर । ἀνά से ἄνω ऊपर।
δι से δίχα दो टुकड़े में ।
ἐν से ἔνδον भीतर ।
ἐκ से ἔξω और ἐκτός बाहर ।
εἰς से ἔσω भीतर ।
κατά से κάτω नीचे ।
μετά से μεταξύ मध्यमें ।
περί से πέριξ चारों ओर ।
πέρα से πέραν पार ।
πρό से πρωί भोरको πρώην
गया परसों πρίν पहिले ।
εἰ और ἄν मिलके ἐάν यदि होताहै ।

२८६। Tό और ἡμέρα मिलके σήμερον आज होताहै ।

२८७। Δεῦρο का अर्थ क्रिया के मध्यमपुरुष के एकवचन के लोट भाव सरीखा है अर्थात् इधर आ। इस कारण से इसका

बहुवचन δεῦτε अर्थात् इधर आओ भीहोताहै।

१९८। सबनरवर्णवाचक विशेषणों के क्लीवलिङ्ग के कर्त्ता वा कर्म्म के एकवचन और सब नमवर्णवाचक विशेषणों के उसी लिङ्ग के उन्हीं कारकों के बहुवचन का प्रकारवाचक अव्यय के अर्थ में प्रयोग होताहै यथा κρεῖττον और अच्छीरीतिसे ἥκιστα सबसे न्यूनरीति से अर्थात् किसी रीतिसेनहीं ।

१९९। आवृत्तिसूचक संख्यावाचक अव्यय प्राय मूल संख्यावाचक विशेषणों से κις के लगाने से बनते हैं यथा τετράκις चार वार ἑκατοντάκις सौ वार । परन्तु तीनवार का नाम τρι से केवल ς के लगाने से बना है। दोवार δίς एकवार ἅπαξ है।

२००। Οὐ अल्पप्राणान्वित स्वरों के पहिले οὐκ और महाप्राणान्वित स्वरों के पहिले οὐχ होताहै ।

२०१। Λ का λ संस्कृत ल से ठीक मिलता

१) एकट्ठा निकलें

एक साथ और

और $\acute{o}\mu o \iota o$ समान

व्यंजनके पहिले α होता

न्त में अन् व्यंजनके पहिले

$\dot{\alpha}\nu$

एकादश अध्याय — संज्ञाओं के रूप।

१७६ । संज्ञा और विशेषणों के रूप लिङ्ग वचन कारक के अन्तर को प्रगट करते हैं संज्ञा और विशेषण का अन्तर यह है कि प्रत्येक संज्ञा किसी विशेष लिङ्ग की है और प्रत्येक विशेषण तीनों लिङ्ग का हो सकताहै । जब हम नामों के रूपों का नाम लेंगे तब संज्ञा और विशेषणों के रूप समझना चाहिये क्यों कि अव्ययों के रूप नहीं हैं ।

१७७ । कारक तो मन की भावना में अति बहुत वरन कदाचित् अगण्य हो सकते हैं परन्तु यवन भाषा में इन के पांचही पृथक २ रूप हैं अर्थात् कर्त्ता कर्म्म सम्बन्ध अधिकरण सम्बोधन ।

१७८ । सम्बन्ध कारक में अपादान का भी अर्थ है वरन जानपड़ता है कि यही इस

२८५। कर्म्म का एकवचन प्राय α से होता है ν से बहुत नहीं।

२८६। σι प्रत्यय स्वरादिक शब्दों के पहिले आ के σιν होता है।

२८७। क्लीवलिङ्ग नामों के विषयमें दो बातें स्मरण रखो।

१। कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन प्रत्येक वचनमें समान होतेहैं।

२। बहुवचन में इन तीन कारकों के अन्तमें α है।

अथ उदाहरण।

२८८। पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ἀλ।

कर्त्ता	ἅλς	ἅλε	ἅλες
कर्म्म	ἅλα	ἅλε	ἅλας
सम्ब॰	ἁλός	ἁλοῖν	ἁλῶν
अधि॰	ἁλί	ἁλοῖν	ἁλσί
सम्बो॰	ἅλς	ἅλε	ἅλες

१८९। उलिङ्ग संज्ञा χοραχ।

क॰	χόραξ	χόραχε	χόραχες
क॰	χόραχα	χόραχε	χόραχας
स॰	χόραχος	χόραχαιν	χόραχων
अ॰	χόραχι	χόραχοιν	χόραξι
स॰	χόραξ	χόραχε	χόραχες

१९०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा σαρχ।

क॰	σάρξ	σάρχε	σάρχες
क॰	σάρχα	σόρχε	σάρχας
स॰	σαρχὸς	σαρχοῖν	σαρχῶν
अ॰	σάρχι	σαρχοῖν	σαρξὶ
स॰	σάρξ	σάρχε	σάρχες

१९१। क्लीव लिङ्ग संज्ञा ναπυ।

क॰	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα
क॰	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα
स॰	νάπυος	ναπύοιν	ναπύων
अ॰	νάπυϊ	ναπύοιν	νάπυσι
स॰	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα

१९२। कर्त्ता के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन को छोड़के और सब रूपों में ये प्रत्यय प्रायः इसी नियम के अनुसार लगते हैं परन्तु इनसे रूपों में आगन्तुक कुछ नियमविरुद्धता होतीहै। इस के तीन कारण हैं।

१। इनसे प्रत्ययों के आदि में σ है और यह अक्षर थोड़े ही व्यंजनों से मिलसकता है प्राय व्यंजनों के उपरान्त आवे चाहे वह आप लुप्तहोताहै चाहे वह रहके दूसरे व्यंजन को छुड़ाताहै। अधिकरण के बहुवचन में सदा यही दशा होतीहै पर कर्त्ता के एकवचन में किसीनाम की यह दशा होती है किसी की वह।

२। यवन भाषा में व्यंजनों में से केवल σ ν ρ शब्द के अन्त में रह सकते हैं इसकारणसे जब नाम के अन्तमें चाहे प्रत्यय के

स्भाव के कारण से चाहे ς के लुप्त होने से और कोई व्यंजन है तक चाहे लुप्त होता है चाहे इन तीनों में से एक बन जाता है।
३। पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के कर्त्ता के एकवचन का स्वर प्राय दीर्घ होता है।

१९३। पुलिङ्ग संज्ञा θηρ का ς प्रत्यय कर्त्ता के एकवचन में लुप्त होता है।

क॰ θὴρ	θῆρε	θῆρες
क॰ θῆρα	θῆρε	θῆρας
स॰ θηρὸς	θηροῖν	θηρῶν
अ॰ θηρὶ	θηροῖν	θηρσὶ
स॰ θὴρ	θῆρε	θῆρες

१९४। क्लीवलिङ्ग संज्ञा σωματ का अन्त व्यंजन कर्त्ता और कर्म के एकवचन में और अधिकरण के बहुवचन में लुप्त होता है।

क॰ σῶμα	σώματε	σώματα
क॰ σῶμα	σώματε	σώματα
स॰ σώματος	σωμάτοιν	σωμάτων

अ· σώματι σωμάτοιν σώμασι
स· σῶμα σώματι σώματα

१५५। उलिङ्ग संज्ञा δαιμον का स्वर दीर्घ होताहै।

क· δαίμων	δαιμονε	δαίμονες
क· δαίμονα	δαίμονε	δαίμονας
स· δαίμονος	δαιμόνοιν	δαιμόνων
अ· δαίμονι	δαιμόνοιν	δαίμοσι
स· δαῖμον	δαίμονε	δαίμονες

१५६। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा φρεν की वही दशा होतीहै।

क· φρὴν	φρένε	φρένες
क· φρένα	φρένε	φρένας
स· φρενὸς	φρενοῖν	φρενῶν
अ· φρενὶ	φρενοῖν	φρεσὶ
स· φρὲν	φρένε	φρένες

१५७। क्लीबलिङ्ग संज्ञा φωτ τ को जब अन्त्य होता है तब ς से बदल देता है।

क·	φῶς	φῶτε	φῶτα
क·	φῶς	φῶτε	φῶτα
स·	φωτὸς	φώτοιν	φώτων
अ·	φωτὶ	φώτοιν	φώσι
स·	φῶς	φῶτε	φῶτα

११८। पुलिङ्ग संज्ञा λεοντ कर्त्ता के एकवचनमें τ को छुड़ाताहै और अधिकरण के बहुवचनमें οντ को ουσ करदेताहै।

क·	λέων	λέοντε	λέοντες
क·	λέοντα	λέοντε	λέοντας
स·	λέοντος	λεόντοιν	λεόντων
अ·	λέοντι	λεόντοιν	λέουσι
स·	λέον	λέοντε	λέοντες

११९। पुलिङ्ग संज्ञा ὀδοντ दोनों रूप में οντ को ους करदेताहै।

क·	ὀδοὺς	ὀδόντε	ὀδόντες
क·	ὀδόντα	ὀδόντε	ὀδόντας
स·	ὀδόντος	ὀδόντοιν	ὀδόντων

अ·	ὀδόντι	ὀδόντοιν	ὀδοῦσι
स·	ὀδὸν	ὀδόντε	ὀδόντες

२०० । उलिङ्ग संज्ञा ἱμαντ ντ को छुड़ातीहै ।

क·	ἱμὰς	ἱμάντε	ἱμάντες
क·	ἱμάντα	ἱμάντε	ἱμάντας
स·	ἱμάντος	ἱμάντοιν	ἱμάντων
अ·	ἱμάντι	ἱμάντοιν	ἱμᾶσι
स·	ἱμὰν	ἱμάντε	ἱμάντες

२०१ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा νυχτ इन दो रूपों में τ को छुड़ातीहै ।

क·	νὺξ	νύχτε	νύχτες
क·	νύχτα	νύχτε	νύχτας
स·	νυχτὸς	νυχτοῖν	νυχτῶν
अ·	νυχτὶ	νυχτοῖν	νυξὶ
स·	νὺξ	νύχτε	νύχτες

२०२ । क्लीवलिङ्ग संज्ञा γαλαχτ कर्त्ता श्रोर कर्म्म के एकवचन में χτ को छुड़ातीहै ।

क·	γάλα	γάλακτε	γάλακτα
क·	γάλα	γάλακτε	γάλακτα
स·	γάλακτος	γαλάκτοιν	γαλάκτων
अ·	γάλακτι	γαλάκτοιν	γάλαξι
स·	γάλα	γάλακτε	γάλακτα

२०३। पुलिङ्ग संज्ञा παιδ कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन में δ को छुड़ाती है।

क·	παῖς	παῖδε	παῖδες
क·	παῖδα	παῖδε	παῖδας
स·	παιδὸς	παιδοῖν	παιδῶν
अ·	παιδὶ	παιδοῖν	παισὶ
स·	παῖ	παῖδε	παῖδες

२०४। पुलिङ्ग संज्ञा ποδ कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन में οδ को ου कर देता है।

क·	πoὺς	πόδε	πόδες
क·	πόδα	πόδε	πόδας
स·	ποδὸς	ποδοῖν	ποδῶν

अ·	ποδί	ποδοῖν	ποσί
स·	ποὺ	πόδε	πόδες

२०५। पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ὀρνιθ इन दो रूपों मे θ को छुड़ाती है।

क·	ὄρνις	ὀρνῖθε	ὀρνῖθες
क·	ὀρνῖθα	ὀρνῖθε	ὀρνῖθας
स·	ὀρνῖθος	ὀρνίθοιν	ὀρνίθων
अ·	ὀρνῖθι	ὀρνίθοιν	ὀρνῖσι
स·	ὄρνις	ὀρνῖθε	ὀρνῖθες

२०६। वङ्गन δ—अन्त और θ—अन्त नामों के कर्म्म के एकवचन में δα θα की सन्ती ν भी होसकता है। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ἐριδ।

क·	ἔρις	ἔριδε	ἔριδες
क·	ἔριν वा ἔριδα	ἔριδε	ἔριδας
स·	ἔριδος	ἐρίδοιν	ἐρίδων
अ·	ἔριδι	ἐρίδοιν	ἔρισι
स·	ἔρις	ἔριδε	ἔριδες

२०७ । πατερ μητερ θυγατερ γαστερ सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में ε को छुड़ाते हैं और अधिकरण के बहुवचन में न केवल ऐसा करते हैं बरन ρ के पीछे α भी ले लेते हैं । यथा

क॰	πατήρ	πατέρε	πατέρες
क॰	πατέρα	πατέρε	πατέρας
स॰	πατρὸς	πατέροιν	πατέρων
अ॰	πατρὶ	πατέροιν	πατράσι
स॰	πατὲρ	πατέρε	πατέρες

२०८ । बहुत नामों का अन्त्य व्यंजन स्वरादिक प्रत्यय के पहिले लुप्त होता है और तब प्राय दोनों स्वर संधि के नियमानुसार मिल जाते हैं ।

२०९ । क्लीबलिङ्ग संज्ञाएं χεραт χρεατ γηρατ τερατ τ को छुड़ाती हैं । यथा

स· ἔθνους ἐθνοῖν ἐθνῶν
श्र· ἔθνει ἐθνοῖν ἔθνεσι
स· ἔθνος ἔθνη ἔθνη

२१३। स्त्रीलिङ्ग संज्ञाएं αἰδο φειδο केवल एकवचन की होतीहैं स्वरादिक प्रत्ययों में संधि होताहै और सम्बोधन में οι होता है। यथा

क· αἰδὼς क· αἰδῶ स· αἰδοῦς
श्र· αἰδοῖ स· αἰδοῖ

२१४। जिन नामों के अन्तमें ι वा υ है उनके केवल कर्त्ता कर्म सम्बोधन के ब[हु]वचन में संधिहोताहै। और उन के कर्म के एकवचन में प्राय ν प्रत्यय लगता है यथा

पुलिङ्ग संज्ञा ἰχθυ।

क· ἰχθὺς ἰχθύε ἰχθῦς
क· ἰχθὺν ἰχθύε ἰχθῦς
स· ἰχθύος ἰχθύοιν ἰχθύων

अ· ἰχθύι ἰχθύοιν ἰχθύσι
स· ἰχθύ ἰχθύε ἰχθύς

२२५। परन्तु साधारण भाषा में इन नामों का ι और υ कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन के एकवचन को छोड़के और सब रूपों में ε बन जाता है और तब अधिकरण के एकवचन में भी संधि होता है। और पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के सम्बन्ध के ος और οιν का ο दीर्घ होता है। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा πολι।

क·	πόλις	πόλεε	πόλεις
क·	πόλιν	πόλεε	πόλεις
स·	πόλεως	πόλεων	πόλεων
अ·	πόλει	πόλεων	πόλεσι
स·	πόλι	πόλεε	πόλεις

क्लीबसंज्ञा ἄστυ।

क·	ἄστυ	ἄστεε	ἄστη
क·	ἄστυ	ἄστεε	ἄστη
स	ἄστεος	ἀστέοιν	ἀστέων

अ· ἄστει ἀστέοιν ἄστεσι
स· ἄστυ ἄστεε ἄστη

२१६। जिन नामों के अन्त में ευ है उन का ευ वैसाही अधिकरण के बहुवचन को छोड़के और सब उक्त रूपों में ε होता है। किन्तु सम्बन्ध के केवल एकहीवचन के प्रत्यय का ο दीर्घ होताहै। और कर्म के बहुवचन में प्राय सन्धि नहीं होता है। और कर्म के एकवचन का प्रत्यय α है। यथा

क· βασιλεύς βασιλέε βασιλεῖς
क· βασιλέα βασιλέε βασιλεῖς वा βασιλέας
स· βασιλέως βασιλέοιν βασιλέων
अ· βασιλεῖ βασιλέοιν βασιλεῦσι
स· βασιλεῦ βασιλέε βασιλεῖς

अथ द्वितीय प्रकार के प्रत्यय।

२१७। द्वितीयप्रकार की सब संज्ञाओं के अन्तमें ο है और उन के प्रत्यय ο से मि·

लके ऐसे होते हैं।

	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
	पु और स्त्री	क्लीव	तीनों लिङ्ग	पु और स्त्री	क्लीव
कर्त्ता	oς	oѷ	ω	oɩ	α
कर्म्म		oν	ω	ouς	α
सम्ब	oυ		oɩν	ων	
अधि	ω		oɩν	oɩς	
सम्बो	ε	oѷ	ω	oɩ	α

२१८। अब विचार करने से देख पड़ता है कि oς ω ω̃ oɩν ouς α ων oɩς और कर्म्म का oν ये प्रत्यय पहिले प्रकार के प्रत्ययों के साथ o मिलने से बने हैं। परन्तु क्लीव लिङ्ग का oν और oυ ε oɩ ये प्रत्यय कहां से आये हैं सो स्पष्ट नहीं है। केवल oυ के विषय में जान पड़ता है कि मूल रूप oɩo था और पीछे oɩ लुप्त हुआ।

अथ उदाहरण।

२१९। पुंलिङ्ग संज्ञा ἀνθρωπο।

क॰	ἄνθρωπος	ἀνθρώπω	ἄνθρωποι
क॰	ἄνθρωπον	ἀνθρώπω	ἀνθρώπους
स॰	ἀνθρώπου	ἀνθρώποιν	ἀνθρώπων
स॰	ἀνθρώπῳ	ἀνθρώποιν	ἀνθρώποις
स॰	ἄνθρωπε	ἀνθρώπω	ἄνθρωποι

२२०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ὁδο।

क॰	ὁδὸς	ὁδὼ	ὁδοὶ
क॰	ὁδὸν	ὁδὼ	ὁδοὺς
स॰	ὁδοῦ	ὁδοῖν	ὁδῶν
स॰	ὁδῷ	ὁδοῖν	ὁδοῖς
स॰	ὁδὲ	ὁδὼ	ὁδοὶ

२२१। क्लीवलिङ्ग संज्ञा φυλλο।

क॰	φύλλον	φύλλω	φύλλα
क॰	φύλλον	φύλλω	φύλλα
स॰	φύλλου	φύλλοιν	φύλλων
स॰	φυλλῷ	φύλλοιν	φύλλοις
स॰	φύλλον	φύλλω	φύλλα

२२२। θεο का सम्बोधन θεε नहीं वरन θεός है।

२२३। जिन नामों के अन्तमें εο और οο है उन में से बहुतों में नियमानुसार संधि होता है किन्तु क्लीबलिङ्ग के कर्त्ता आदि के बहुवचन के εα और οα दोनों α होतेहैं।

पुलिङ्ग संज्ञा νοο।

क॰	νοῦς	νώ	νοῖ
क॰	νοῦν	νώ	νοῦς
स॰	νοῦ	νοῖν	νῶν
अ॰	νῷ	νοῖν	νοῖς
स॰	νοῦ	νώ	νοῖ

क्लीबलिङ्ग संज्ञा ὀστεο।

क॰	ὀστοῦν	ὀστώ	ὀστᾶ
क॰	ὀστοῦν	ὀστώ	ὀστᾶ
स॰	ὀστοῦ	ὀστοῖν	ὀστῶν
अ॰	ὀστῷ	ὀστοῖν	ὀστοῖς
स॰	ὀστοῦν	ὀστώ	ὀστᾶ

क·	μαθητὴν	μαθητὰ	μαθητὰς
स·	μαθητοῦ	μαθηταῖν	μαθητῶν
ञ·	μαθητᾷ	μαθηταῖν	μαθηταῖς
स·	μαθητὰ	μαθητὰ	μαθηταὶ

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ψυχα।

क·	ψυχὴ	φυχὰ	φυχαὶ
क·	ψυχὴν	φυχὰ	φυχὰς
स·	ψυχῆς	φυχαῖν	φυχῶν
ञ·	ψυχῇ	φυχαῖν	φυχᾶις
स·	ψυχῆ	φυχὰ	φυχὰι

२२९। और थोड़ी स्त्रीलिङ्ग α– अन्त संज्ञाएं केवल सम्बन्ध और अधि करण के एकवचन में α को η कर देते हैं और किसी रूप में नहीं। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा δοξα

क·	δόξα	δόξα	δόξαι
	λόξαν	δόξα	δόξας

स॰ δόξηα	δόξαιν	δοξῶν
अ॰ δόξῃ	δόξαιν	δόξαις
स॰ δόξα	δόξα	δόξαι

द्वादश अध्याय। नियमविरुद्ध संज्ञापं।

२३०। ἐγω — μο — νω — ἡμε।

क॰ ἐγω	νῶι वा νὼ	ἡμεῖς
क॰ με वा ἐμὲ	νῶι वा νὼ	ἡμᾶς
स॰ μου वा ἐμοῦ	νῶϊν वा νῷν	ἡμῶν
अ॰ μοι वा ἐμοῖ	νῶϊν वा νῷν	ἡμῖν

२३१। σο — σφω — ὑμε।

क॰	σὺ	σφῶϊ वा σφὼ	ὑμεῖς
क॰	σε	σφῶι वा σφὼ	ὑμᾶς
स॰	σου	σφῶϊν वा σφῷν	ὑμῶν
अ॰	σοι	σφῶϊν वा σφῷν	ὑμῖν

२३२। ὁ (सो) — σφω — σφε।

		पुं वा स्त्री	क्लीव
क॰	σφωέ	σφεῖς	σφέα
क॰ ἑ	σφωέ	σφᾶς	σφέα
स॰ οὗ	σφωΐν	σφῶν	
अ॰ οἷ	σφωΐν	σφίσι	

कर्त्ता का एकवचन नहीं है ।

२३३ । ἀνερ ।

सब स्वरादिक प्रत्ययों के पहिले ε के स्थाने δ रखना है और अधिकरण के बहुवचन में न केवल ऐसा करना है वरन ρ के पीछे α भी लेना है । यथा

क॰ ἀνηρ	ἄνδρε	ἄνδρες
क॰ ἄνδρα	ἄνδρε	ἄνδρας
स॰ ἀνδρὸς	ἀνδροῖν	ἀνδρῶν
अ॰ ἀνδρὶ	ἀνδροῖν	ἀνδράσι
स॰ ἄνερ	ἄνδρε	ἄνδρες

२३४ । क्लीवलिङ्ग संज्ञाएं γονατ—γονυ। δορατ—δορυ। γονὺ और δορυ निष्

न्यप रूपों में होताहै।

$\gamma o \nu \alpha \tau$ और $\delta o \rho \alpha \tau$ और सब रूपों में।

२३५। $\gamma o \nu \alpha \iota \kappa \iota$

कर्त्ता के एकवचन में न केवल ς प्रत्यय को छुड़ाताहै वरन κ को भी छुड़ाके αι को η से बदल देताहै।

२३६। $\Delta \iota F$

एकही वचन में होताहै और कर्त्ता और सम्बोधन में $Z \varepsilon \upsilon$ बन जाता है।

२३७। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा $\kappa \lambda \varepsilon \iota \delta$

के कर्म्म के बहुवचनमें δ छूटके $\kappa \lambda \varepsilon \iota \varsigma$ भी हो सकताहै।

२३८ $\kappa \upsilon \nu - \kappa \upsilon o \nu$।

$\kappa \upsilon o \nu$ कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन में होताहै।

$\kappa \upsilon \nu$ और सब रूपों में।

२३९। $\mu \alpha \rho \tau \upsilon \rho$।

कर्त्ता के एकवचन में μαρτυς होताहै और कर्म्म के एकवचन में μαρτυν भी हो सकताहै।

२५०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ναF के रूप ऐसे होते हैं।

क॰	ναῦς	νῆε	νῆες
क॰	ναῦν	νῆε	ναῦς
ष॰	νεώς	νεοῖν	νεῶν
स॰	νηΐ	νεοῖν	ναυσί
स॰	ναῦ	νῆε	νῆες

२५१। क्लीबलिङ्ग संज्ञा πυρ—πυρο।
πυρ एकवचन में और द्विवचन में होता है।
πυρο बहुवचन में।

२५२। क्लीबलिङ्ग संज्ञा ὁδατ—ὑδωρ
ὑδωρ निम्नाक्षर रूपों में होताहै।
ὑδατ और सब रूपों में।

२४३ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा χεερ

सम्बन्ध और अधिकरण के द्विवचन और अधिकरण के बहुवचन में χεο होता है ।

२४४ । क्लीवलिङ्ग संज्ञा ωτ

निष्प्रत्यय रूपों में oῡς होता है ।

त्रयोदश अध्याय—विशेषणों के रूप ।

---

२४५ । प्रत्येक विशेषण मानों तीन संज्ञाओं का समूह है । कितने विशेषण केवल पहिले प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और कितने पहिले और तीसरे प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं ।

प्रथम भाग ।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो केवल पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं ।

२४६ । अथ उदाहरण।

२४८। जिन तरवर्णवाचक विशेषणों के अन्त में ον है वे कर्म के एकवचन और कर्ता कर्म सम्बोधन के बहुवचन में ν को छुड़ा सकते हैं तब संधि होता है। यथा

κρείττον।

	पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग	क्लीव	तीनों लिङ्ग
क·	κρείττων	-ττον	κρείττονε
क·	κρείττονα वा κρείττω	-ττον	κρείττονε
स	κρείττονος		κρειττόνοιν
अ·	κρείττονι		κρειττόνοιν
स·	κρείττον		κρείττονε

पु० वा स्त्री	क्लीव
κρείττονες वा κρείττους	-ττονα वा ττω
κρείττονας वा κρείττους	-ττονα वा ττω
κρειττόνων	
κρείττοσι	
κρείττονες वा κρείττους	-ττονα वा ττω

द्वितीय भाग।

अथ अन्तविशेषणों का वर्णन जो केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं

२४९। बहुत ο–अन्त विशेषण ऐसे होते हैं। यथा ἥσυχο।

	उभा स्त्री	क्लीव	तीनो लि·	उभा स्त्री	क्लीव
क·	ἥσυχος	ἥσυχον	ἡσύχω	ἥσυχοι	ἥσυχα
क·		ἥσυχον	ἡσύχω	ἡσύχους	ἥσυχα
स·		ἡσύχου	ἡσύχοιν		ἡσύχων
श्र·		ἡσύχῳ	ἡσύχοιν		ἡσύχοις
स·	ἥσυχε	ἥσυχον	ἡσύχω	ἥσυχοι	ἥσυχα

२५०। थोड़े विशेषण ο–अन्त नहीं वरन ο को दीर्घ करके ω–अन्त होते हैं। यथा

ἵλεω प्रसन्न।

	उभास्त्री	क्लीव	तीनो लि	उभास्त्री	क्लीव लिङ्ग
क·	ἵλεως	ἵλεων	ἵλεω		ἵλεω
क·		ἵλεων	ἵλεω	ἵλεως	ἵλεω

स· ἵλεω ἱλεῷν ἵλεων

ष· ἱλεῷ ἱλεῷν ἵλεως

स· ἵλεως ἵλεων ἵλεω ἵλεω

तृतीय भाग।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५१। ये सब विशेषण पुलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग में दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग में तीसरे प्रकार के प्रत्यय।

२५२। इन सबविशेषणों को हम सुबीता के निमित्त ο-अन्त तो कहते हैं परन्तु सच पूछो तो उनके पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग ο-अन्त हैं और उन के स्त्रीलिङ्ग α-अन्त। यथा सचपूछो तो दो विशेषण हैं καλο और καλα किन्तु सुबीता के लिये हम दोनों को καλο कहते हैं मानो एकही होता।

२५३ । इन विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग यदि α के पहिले ρ वा ο को छोड़के और कोई स्वर हो तो α को नहीं बदल देताहै पर यदि ο वा ρ को छोड़के और कोई व्यंजन हो तो समस्त एकवचन में α को η से बदल देता है । यथा

ο – अतिरिक्तस्वरान्वित विशेषण νεο ।

	पुलिङ्ग	क्लीव	स्त्री॰	पुवाक्लीव	स्त्री॰
क॰	νέος	νέον	νέα	νέω	νέα
क॰		νέον	νέαν	νέω	νέα
स॰		νέου	νέας	νέοιν	νέαιν
अ॰		νέῳ	νέᾳ	νέοιν	νέαιν
स॰	νέε	νέον	νέα	νέω	νέα

पुलिङ्ग	क्लीव	स्त्री
νέοι	νέα	νέαι
νέους	νέα	νέας
νέων		νέων
νέοις		νέαις
νέοι	νέα	νέαι

स॰	ἵλεω	ἱλεῷν	ἵλεων
अ॰	ἱλεῴ	ἱλεῷν	ἵλεῳς.
स॰	ἵλεως	ἵλεων ἵλεω	ἵλεω

तृतीय भाग।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५१। ये सब विशेषण पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग में दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग में तीसरे प्रकार के प्रत्यय।

२५२। इन सब विशेषणों को हम सुबीता के निमित्त o– अन्त तो कहते हैं परन्तु सच पूछो तो उन के पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग o–अन्त हैं और उन के स्त्रीलिङ्ग α– अन्त। यथा सच पूछो तो दो विशेषण है καλο और καλα किन्तु सुबीता के लिये हम दोनों को καλο कहते हैं मानों एकही होता।

२५३। इन विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग यदि α के पहिले ρ वा ο को छोड़के और कोई स्वर हो तो α को नहीं बदल देना है पर यदि ο वा ρ को छोड़के और कोई व्यंजन हो तो समस्त एकवचन में α को η से बदल देता है। यथा

ο – अतिरिक्त स्वरान्वित विशेषण νεο।

	पुलिङ्ग	क्लीव	स्त्री॰	पुवाक्लीव	स्त्री॰
क॰	νέος	νέον	νέα	νέω	νέα
क॰	νέον		νέαν	νέω	νέα
स॰	νέου		νέας	νέοιν	νέαιν
अ	νέῳ		νέᾳ	νέοιν	νέαιν
स॰	νέε	νέον	νέα	νέω	νέα

पुलिङ्ग	क्लीव	स्त्री
νέοι	νέα	νέαι
νέους	νέα	νέας
νέων		νέων
νέοις		νέαις
νέοι	νέα	νέαι

बहुवचन

क॰ χρύσεοι χρυσοῖ χρύσεα χρυσᾶ
χρύσεαι χρυσαῖ इत्यादि

चतुर्थ भाग।

अब उनविशेषणों का वर्णन जो पहिले औ
र तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५६। इनमेंसे पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग पहि
ले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग
तीसरे प्रकार के प्रत्यय। और स्त्रीलिङ्ग अप
ने मूलभाग को कुछ न कुछ बदलके वे
प्रत्यय लगाताहै।

२५७। υ-अन्त विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग υ के
ει करदेताहै। यथा

ἡδύ सुखदायक।

	पु	क्ली	स्त्री	पु॰ क्ली॰	स्त्री
क॰	ἡδύς	ἡδύ	ἡδεῖα	ἡδέε	ἡδεία
क॰	ἡδύν	ἡδύ	ἡδεῖαν	ἡδέε	ἡδεία
स॰	ἡδέος		ἡδείας	ἡδέοιν	ἡδείαιν

श्र·	ἡδεῖ	ἡδείᾳ	ἡδέοιν	ἡδείαιν
स·	ἡδὺ	ἡδεῖα	ἡδέε	ἡδεία

पु	क्ली	स्त्री
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδείας
ἡδέων		ἡδειῶν
ἡδέσι		ἡδείαις
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι

२५८। सब ντ-अन्त क्रिया के विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग ντ को σ बनाके पूर्वस्वर को बढ़ाना है अर्थात् αντ को ασ εντ को εισ οντ को ουσ कर देता है। और उस के सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में α η से बदल जाता है। यथा

१ लुङ् के विशेषण अर्थ का प्रयोजक

πραξαντ।

पु	क्ली	स्त्री	पु· क्ली·	स्त्री
πράξας	-ξαν	-ξασα	-ξαντε	-ξασα
πράξαντα	-ξαν	-ξασαν	-ξαντε	-ξασα

बहुवचन

क. χρύσεοι χρυσοῖ χρύσεα χρυσᾶ

χρύσεαι χρυσαῖ इत्यादि

चतुर्थ भाग।

अथ उनविशेषणों का वर्णन जो पहिले और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५६। इनसभों के पुलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग पहिले प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग तीसरे प्रकार के प्रत्यय। और स्त्रीलिङ्ग अपने अन्तभाग को कुछ न कुछ बदलके ये प्रत्यय लगाता है।

२५७। υ-अन्त विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग υ को ει करदेता है। यथा

ἡδύ स्वादायक।

	पु	क्ली		पु०क्ली	स्त्री
क.	ἡδύς	ἡδύ	ἡδεῖα	ἡδέε	ἡδεία
क.	ἡδύν	ἡδύ	ἡδεῖαν	ἡδέε	ἡδεία
ष.	ἡδέος		ἡδείας	ἡδέ...	

प्र· ἡδεῖ ἡδείᾳ ἡδέοιν ἡδείαιν

स· ἡδὺ ἡδεῖα ἡδέε ἡδεία

पु	क्ली	स्त्री
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδείας
ἡδέων		ἡδειῶν
ἡδέσι		ἡδείαις
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι

२५८। सब ντ-अन्त क्रिया के विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग ντ को σ बनाके पूर्वागत स्वर को बढ़ाना है अर्थात् αντ को ασ εντ को εισ οντ को ουσ करदेना है। और उन के सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में α η से बदल जाता है। यथा

१ लुङ् के विशेषण भाव वा परस्मैपद

πραξαντ।

पु	क्ली·	स्त्री·	पु क्ली	स्त्री
πράξας	-ξαν	-ξασα	-ξαντε	-ξασα
πράξαντα	-ξαν	-ξασαν	-ξαντε	-ξασα

ष· πράξαντος -ξάσης	-ξάντοιν -ξάσαιν	
ष· πράξαντι -ξάσῃ	-ξάντοιν -ξάσαιν	
स· πράξαν -ξασα	-ξαντε ξασα	

पु·	क्लीव	स्त्री·
-ξαντες	-ξαντα	-ξάσαι
-ξαντας	-ξαντα	-ξάσας
-ξάντων		-ξασῶν
-ξασι		-ξάσαις
-ξαντες	-ξαντα	-ξάσαι

२ लुङ् का विशेषण भाव λεχθεντ ।

	पु· क्लीव स्त्री·	पु·क्ली· स्त्री·
प्र·	λεχθεὶς -θὲν -θεῖσα	-θέντε -θείσα
द्वि·	λεχθέντα -θὲν -θεῖσαν	-θέντε -θείσα
ष	λεχθέντος -θείσης	-θέντοιν -θείσαιν
च·	λεχθέντι -θείσῃ	-θέντοιν -θείσαιν
स·	λεχθὲν -θεῖσα	-θέντε -θείσα

पु·	क्लीव·	स्त्री
-θέντες	-θέντα	-θεῖσαι

-θεντας -θέντα -θείσαις
θέντων θεισῶν
θεῖσι -θείσαις
-θέντες -θέντα -θεῖσαι

लट् के विशेषणभावका परस्मैपद् βαινοντ

क· βαίνων -νον -νουσα	-νοντε -νούσα
क· βαίνοντα -νον -νουσαν	-νοντε -νούσα
स· βαίνοντος -νούσης	-νόντοιν -νούσαιν
अ· βαίνοντι -νούσῃ	-νόντοιν -νούσαιν
स· βαίνον -νουσα	-νοντε -νούσα

-νοντες -νοντα -νουσαι
-νοντας -νοντα -νούσας
-νόντων -νουσῶν
-νουσι -νούσαις
-νόντες -νοντα -νουσαι

२५५ । αντ-अन्त विशेषण παντ भी वैसाही होता है । यथा

प्र॰	πᾶς πᾶν	πᾶσα	πάντε	πάσα
द्वि॰	πάντα πᾶν	πᾶσαν	πάντε	πάσα
ष॰	παντὸς	πάσης	πάντοιν	πάσαιν
च॰	παντὶ	πάσῃ	πάντοιν	πάσαιν
सं॰	πᾶν	πάσα	πάντε	πάσα

πάντες πάντα πάσαι
πάντας πάντα πάσας
πάντων πασῶν
πᾶσι πάσαις
πάντες πάντα πάσαι

२८०। और οντ-अन्त विशेषण ἐχοντ भी वैसाही होताहै। यथा

प्र॰ ἔχων ἔχον ἔχουσα | ἔχοντε ἐχούσα |
ἔχοντες ἔχοντα ἔχουσαι इत्यादि

२८१। परन्तु εντ-अन्त विशेषणों का जो क्रिया के विशेषण नहीं हैं स्त्रीलिङ्ग εντ को εσσ से बदल देताहै।

यथा αἱματοεντ ।

क॰ αἱματόεις -τόεν-τόεσσα|τόεντε-τοέσσα|-τόεντες-τόεντα-τόεσσαι इत्यादि ।

२९२ । μελαν ταλαν τερεν का स्त्रीलिङ्ग α को αι और ε को ει करदेते हैं । यथा

क॰ μέλας - λαν - λαινα | -λανε -λαίνα
द्वि॰ μέλανα-λαν-λαιναν | -λανε -λαίνα
तृ॰ μέλανος - λαίνης | -λάνοιν-λαίναιν
च॰ μέλανι - λαίνῃ | -λάνοιν-λαίναιν
सं॰ μέλαν - λαινα | - λανε -λαίνα

-λανες - λανα -λαιναι
-λανας- λανα -λαίνας
-λανων -λαινῶν
-λασι - λαίναις
-λανες -λανα - λαιναι

२९३ । οτ-अन्त क्रिया के विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग οτ के स्थानेे υι बना होताहै । यथा

न लिङ्ग का विशेषण भाव εἰδοτ।

क॰	εἰδὼς	εἰδὸς	εἰδυῖα	εἰδότε	εἰδυία
क॰	εἰδότα	εἰδὸς	εἰδυῖαν	εἰδότε	εἰδυία
स॰	εἰδότος		εἰδυίας	εἰδότοιν	εἰδυίαιν
सं॰	εἰδότι		εἰδυίᾳ	εἰδότοιν	εἰδυίαιν
सं॰	εἰδὸς		εἰδυῖα	εἰδότε	εἰδυία

εἰδότες εἰδότα εἰδυῖαι
εἰδότας εἰδότα εἰδυίας
εἰδότων εἰδυιῶν
εἰδόσι εἰδυίας
εἰδότες εἰδότα εἰδυῖαι

चतुर्दश अध्याय— नियमविरुद्ध विशेषण।

२९३। πολυ——πολλο। μεγα——μεγαλο।

πολυ और μεγα पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में होतेहैं। πολλο और μεγαλο

और सब रूपों में । यथा

क॰ πολύς πολὺ πολλή	πολλώ πολλα
क॰ πολὺν πολὺ πολλήν	πολλώ πολλά

πολλοί πολλά πολλαί
πολλους πολλὰ πολλάς इत्यादि

क॰ μέγας μέγα μεγάλη	μεγάλω μεγαλα
क॰ μέγαν μέγα μεγάλην	μεγάλω μεγαλα

μεγαλοι -λα -λαι इत्यादि
- λους -λα -λας

२८५ । ἕν — μια ।

ἕν पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग में होता है ।
μια स्त्रीलिङ्ग में । यथा

क॰	εἷς	ἕν	μια
क॰	ἑνὰ	ἕν	μίαν
स॰	ἑνός		μίας
अ॰	ἑνὶ		μίᾳ
स॰	ἕν		μία

२६९ δυο और ἀμφο

द्विवचनमें केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं। परन्तु इस से अधिक δυο कर्त्ता और कर्म्म में वैसाही रहभी सकता है अर्थात् δύο। और सम्बन्ध और अधिकरण में बहुवचन के पहिले प्रकार के प्रत्यय भी लग सकता है अर्थात् δυῶν δυσί।

२९७। τρι

के पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग कर्त्ता के ιε और कर्म्म के ια दोनों को ει बनातेहैं। यथा

	पु और स्त्री	क्लीव
क॰	τρεῖς	τρία
क॰	τρεῖς	τρία
स॰	τριῶν	
अ॰	τρισί	
स॰	τρεῖς	τρία

२९८ τετταρ

समासों में τετρα होताहै और जब समा

स में नहीं आता है तब साधारण भाषा में τεσσαρ होता है।

२६९। τιν

का ν क्लीबलिङ्ग के निष्प्रत्यय रूपों में लुप्त होता है। यथा

	पुं०और स्त्री	क्ली	पुं०और स्त्री (द्वि०)	पुं०और स्त्री०	क्लीब
क०	τις	τι	τινε	τινες	τινα
क०	τινα	τι	τινε	τινας	τινα
स	τινος		τινοιν	τινων	
अ	τινι		τινοιν	τισι	

२७०। αὐτο ἐκεινο ὅ (जो) το τουτο

ἀλλο के क्लीब लिङ्ग के कर्ता और कर्म के एकवचन में चाहता था कि ν के स्थाने τ प्रत्यय लगे जैसा बहुत संस्कृत सर्वनामों में त् लगता है। परन्तु यह τ लुप्त हुआ है। यथा

क० ἄλλος ἄλλο ἄλλη ἄλλω ἄλλα

क० ἄλλον ἄλλο ἄλλην ἄλλω ἄλλα

ἄλλοι ἄλλα ἄλλαι
ἄλλους ἄλλα ἄλλας इत्यादि

२७१। το——ὁ (सो)।

ὁ पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होता है। το और सब रूपों में। और इस से अधिक पुलिङ्ग का प्रत्यय ς लुप्त होताहै जैसा संस्कृत में सः नहीं किन्तु स होता है। यथा

क॰	ὁ	τὸ	ἡ	τὼ	τὰ	οἱ	τὰ	αἱ
क॰	τον	τὸ	τὴν	τω	τὰ	τοὺς	τὰ	τὰς
स॰	τοῦ		τῆς	τοῖν	ταῖν		τῶν	τῶν
अ॰	τῷ		τῇ	τοῖν	ταῖν		τοῖς	ταῖς

२७२। αὐτο—οὑτο—ταυτο—τουτο।

αὐτο स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होताहै।

ταυτο स्त्रीलिङ्ग के इन रूपों और सम्बन्ध के बहुवचन को छोड़के और सब

रूपों में और क्लीवलिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के बहुवचन में होता है।

οὑτο पुलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होता है।

τουτο पुलिङ्ग के और सब रूपों में और स्त्रीलिङ्ग के सम्बन्ध के बहुवचन में होता है और क्लीवलिङ्ग के उन सब रूपों में जिनमें ταυτο नहीं होता है। यथा

क॰	οὗτος	τοῦτο	αὕτη	τούτω ταύτα
क॰	τοῦτον	τοῦτό	ταύτην	τούτω ταύτα
स॰	τούτου		ταύτης	τούτοιν ταύταιν
अ॰	τούτῳ		ταύτῃ	τούτοιν ταύταιν

οὗτοι ταῦτα αὗται
τούτους ταῦτα ταύτας
τούτων τούτων
τούτοις ταύταις

६७३। δειν

के तीनों लिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के एक॰

वचन में α प्रत्यय लगता है। यथा

क॰ δεῖνα	δεῖνε	δεῖνες δεῖνα
क॰ δεῖνα	δεῖνε	δεῖνας δεῖνα
स॰ δεῖνος	δείνοιν	δείνων
अ॰ δεῖνι	δείνοιν	δεῖσι

२७४। πέντε से ले के ἑκατόν तक सब संख्यावाचक विशेषण और जितने संख्यावाचक विशेषण उन के मिलाने से बने हुए हैं उन सभों के येही रूप रहते हैं और कोई रूप उन का नहीं होता है।

पञ्चदश अध्याय— उपसर्गों का वर्णन।

२७५। उपसर्गों का मूल अर्थ प्राय समासों में मिलता है परन्तु समासों में भी और जब अलग आते हैं तब भी यह अर्थ न्यूनाधिक बदल जाता है।

२७६। ἀμφί

का मूल अर्थ दोनों ओर है यथा ἀμφιλο-
γο जिस की दोनों ओर बात हो सकती है
अर्थात् सन्दिग्ध । परन्तु बहुत शब्दों में उ-
सका अर्थ चारों ओर है यथा ἀμφι ओ-
र E (पहिन) मिलके ἀμφιε होता
है जिसका अर्थ है अपनी चारों ओर पहिन-
ना अर्थात् ओढ़ना ।

ἀμφι अलग होके प्राय कर्म के साथ
आता है और उस का अर्थ है पास वा लग-
भग यथा οἱ ἀμφι τὸν Παῦλον जो
लोग पौल के संग थे वा हैं ।

७७। ἀνα

का मूल अर्थ है ऊपर की ओर यथा
ἀναστα उठना ἀναβα चढ़ना ἀνα-
τελ उगना । इस से फिरने का अर्थ
निकला है क्योंकि इस संसार की दशा
नदी के समान है जो सदा नीचे की ओर

वली जाती है यथा ἀναζα फिर जीना ἀναγεννα फिर से जन्माना । इससे फिर २ करने और इससे अच्छी रीति से करने का अर्थ निकलताहै । यथा ἀνακριν ठीक २ विचार करना ἀναγνο फिर २ जानलेना अर्थात् पढ़ना ।

ἀνα अलगहोके प्रायकर्म्म के साथ आताहै और उसका अर्थ प्राय नीचे से लेके ऊपरतक अर्थात् समस्त किसी देश वा काल में होताहै यथा ἀνὰ χώραν समस्त देश में ἀνα νύκτα समस्त रात में इस से प्रत्येकता का अर्थ निकलता है यथा ἀνὰ ἑκατὸν सौ २ करके ।

२७८। ἀντι

का मूल अर्थ सम्मुख है यथा ἀντι πα ρερχ साम्हने सेचला जाना । इस से बदले का अर्थ निकलता है यथा ἀντι

λυτρο अर्थात् छूटने का मोल । और सादृश्य का अर्थ यथा ἀντιτυπο जो तुल्य मूर्ति का है । परन्तु प्राय उस का अर्थ विरोध का है यथा ἀντιλεγ अर्थात् विरुद्ध कहना ἀντιταγ अर्थात् विरोध में ठहराना। ἀντι अलग होके केवल सम्बन्ध के साथ आता है और उस के उक्त सब अर्थ होते हैं यथा χαριν αντι χαριτος कृपा के तुल्य कृपा ।

२७१ । ἀπό

का मूल अर्थ दूर की ओर है यथा ἀπο-βαλ दूर फेंकदेना ἀποτεμ काटनिकालना । इससे काम को समाप्त करके छोड़ने का अर्थ निकलता है यथा ἀπολαβ पूरा पाना । और फेरने का भी अर्थ यथा ἀπ-οδο फेरदेना । ἀπο अलगहोके सम्बन्धी के साथ आता है और उस का अर्थ से है यथा ἀπ' ἐμοῦ मुझसे ।

ले आना। कभी २ सम्प्रदानी का अर्थ उस में है यथा εἰσαχοῦ ऐसा सुनना कि उसके अनुसार करे भी।

εἰς अलग होके कर्मही के साथ आना है और उस के ये अर्थ हैं

१। स्थान में प्रवेश करना यथा εἰς τὴν οἰκίαν ἦλθεν घरमें गया।

२। काल तक यथा εἰς τὸν αἰῶνα सदा तक।

३। ओर यथा βλέψον εἰς ἡμᾶς हमारी ओर देख।

४। अभिप्राय यथा εἰς τί, किस लिये εἰς τὸ καταβαίνειν उतरने के लिये।

२८२। ἐκ

स्वर के पहिले ἐξ होता है और उस का मूल अर्थ εἰς के विरुद्ध अर्थात

निकलने का है। प्राय यही अर्थ मिलता है यथा ἐκβαλ निकालडालना ἐκκαλε ओरों में से बुलाना ἐξοδο निकलने की यात्रा । कभी २ उस का अर्थ सम्पूर्णता का है यथा ἐξαιτε मांगके प्राप्त करना ।

ἐκ अलग होके सम्बन्धही के साथ आता है और उस के ये अर्थ होते हैं

१। से यथा ἐξ οὐρανοῦ स्वर्ग से ἐξ ἀρχῆς आदि से ἐξ ἀγάπης प्रेमसे ।

२। सम्बन्ध यथा ἐκ τῆς ἀληθείας ἐστι सच्चाता की ओर का है।

२८३ । ἐν

का मूल अर्थ भीतर का है और समासों में प्राय यही अर्थ मिलता है यथा

ἐννυχόν रातको ἐνθε भीतर रखना ἐμβλεπ भीतर देखना ἐνυπνιο जो स्वप्न में देखा जाता है ἐντιμο जो प्रतिष्ठा में है अर्थात् प्रतिष्ठित ἐντυχ मिलके संगति करना ἐνδειχ जो भीतर है सो दिखाना ।

ἐν अलग होके अधिकरणादी के साथ आता है और उस के ये अर्थ हैं ।

१। में यथा ἐν τῷ τόπῳ उस स्थान में ἐν πολλοῖς ἀδελφοῖς बहुत भाईयों में ἐν τιμῇ εἶναι प्रतिष्ठा में हो रहना ।

२। उपाय वा द्वारा यथा ἐν πυρί आगसे।

२८४ । ἐπί

कामूल अर्थ ऊपर का है और समासों में प्राय यही अर्थ मिलता है यथा ἐπισκοπο जो ऊपर होके देखता है ἐπιγειο

पृथिवी परका ἐπιχει किसी के ऊपर पड़े रहना ἐπιτρεπ किसी के ऊपर फेरना अर्थात् उसको सोंपना ἐπιφαν किसी के ऊपर दिखाई देना ἐπιθανατιο जो मारे जाने परहै ।

ἐπι अलग होके कर्म्म सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐπὶ τὴν θαλάσσαν περιπατεῖ वह समुद्र के ऊपर चलता है ।

२। और यथा ἐπὶ τὸν ποταμὸν ἰέναι नदी के पास जाना ।

३। विरोध यथा ἐπαναστῆναι ἐπὶ γονεῖς पितरों के विरुद्ध उठना ।

४। तक यथा ἐφ᾽ ὅσον जहां तक ἐπὶ

χρόνον कुछ काल तक ।

५। अभि साथ ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐπὶ χειρῶν αἴρειν हाथों पर उठाना ἐπὶ τῆς γῆς पृथ्वी पर ἐπὶ τῆς πόλεως ἄρχειν नगर का अधिकार रखना ।

२। साम्हने यथा ἐπ᾽ ἐμοῦ κρίνεσθαι मेरे साम्हने विचारित होना ।

३। समय में यथा ἐπὶ Ποντίου Πιλάτου पन्त पीलात के समयमें ।

४। रीति यथा ἐπ᾽ ἀληθείας सचमुच ।

जब अधिकरण के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐφ᾽ ἱματίῳ कपड़े पर ।

२। पास यथा ἐπ᾽ αὐτοῖς उनके पास ।

३। अधिक यथा ἐπὶ πᾶσι τούτοις इनसबसे अधिक।

४। कारण यथा ἐφ' ᾧ जिसके कारणसे।

२८५। κατα

का मूल अर्थ नीचे की ओर है यथा καταβα उतरना καταγ उतारलेआना। इससे प्रभुत्व का अर्थ निकलताहै यथा κατακαυχα किसी के ऊपर घमण्ड करना। और विरोध काभी अर्थ κατα में बहुतमिलता है यथा κατακριν विरोधमें विचार करना अर्थात् दण्ड के योग्य ठहराना καταμαρτυρε विरोधमें साक्षी देना। और बहुत शब्दों में κατα केवल शब्द के अर्थ को दृढ़ता देताहै यथा καταλυ नाश करना καταρτιζ सम्पूर्ण रूपसे जोड़ना καταδηλο अतिस्पष्ट।

κατα अलग होके कर्म और सम्बन्ध के

साथ आता है। जब कर्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। नीचे और साथ यथा κατὰ ῥόον πλέειν धारा के साथ नावचलाना।

२। ऊपर से नीचे तक अर्थात् समस्त देश में यथा καθ' ὅλην τὴν πόλιν समस्त नगर में।

३। लगभग यथा κατ' ἐκεῖνον τὸν καιρὸν उस समयके लगभग κατὰ τὸν τοπὸν उसस्थान के पास।

४। में यथा κατ' οἶκον αὐτῶν उनके घरमें।

५। और यथा κατὰ μεσημβρίαν दक्षिणकी ओर।

६। प्रत्येक यथा καθ' ἡμέραν प्रतिदिन κατ' οἶκον घर घर κατὰ δύο दो दो।

७। अनुसार यथा κατὰ φύσιν स्वभाव के अनुसार। τὰ κατ᾽ ἐμὲ

८। विषय यथा τὰ κατ᾽ ἐμὲ मेरी दशा।

९। भाव यथा κατὰ σάρκα शरीरके भावसे।

१०। किरिया का साक्षी यथा κατὰ τὸν θεὸν ईश्वर की किरिया।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। से और नीचे यथा κατὰ τοῦ κρημνοῦ ἔδραμον वे कड़ाड़े से नीचे दौड़े।

२। नीचे और पर यथा κατὰ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ἔχεε उसने उसके सिर पर डाला।

३। एक ओर से दूसरी ओर तक यथा καθ᾽

ὅλης τῆς χώρας समस्त देश में।

४। विरोध यथा κατ' ἐμοῦ मेरे विरुद्ध।

५। किरिया का साक्षी। यथा ὤμοσε καθ' ἑαυτοῦ उसने अपनी किरियाखाई।

२८९। μετά

का मूल अर्थ मध्य है जिससे μεσο विशेषण भी निकला है। समासों में उस के ये अर्थ हैं

१। संगित्व। μεταδο सम्भागी करना।

२। पीछे। μεταμελ पश्चात्ताप करना।

३। बदलना। μετανοε मन बदलना μεταμορφο मूर्ति को बदलना।

μετά अलग होके प्राय कर्म्म और सम्बन्ध के साथ आता है।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय पीछे है यथा μεθ' ἑξ ἡμέ-

ρας छः दिन के पीछे *μετὰ τὸ ἐγερθῆναι με* मेरे जगाये जाने के पीछे। जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय साथ है यथा *μετὰ τῶν νεκρῶν* मृतकों के साथ *μετ᾽ ἐμοῦ* मेरे साथ वा मेरी ओर ।

२८७ । *παρά*

का मूल अर्थ पास है यथा *παραστα* पास खड़ा होना *παραῤῥυ* पास से बह जाना *παρακλητο* जो किसी के पास बुलाया गया । इससे सौंपदेने का अर्थ निकलता है यथा *παραθε* वा *παραδο* सौंप देना *παραλαβ* किसी के पास से पाना । और उसी मूल अर्थ से सीमा के उधर जाने का भी अर्थ निकलता है यथा *παραβα* वा *παραπετ* अपरा-

थ करना παραχου आज्ञालङ्घन करना। इस से विरोधका भी अर्थ निकलता है यथा παραιτε विरोध में मांगना वा अनङ्गीकार करना।

παρα अलग होके कर्म्म सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। पास जाना। ἔρριψαν παρὰ τοὺς πόδας αὐτοῦ उन्हों ने उसके पांवों पर डाल दिया।

२। पास पास। यथा παρὰ θάλασσαν ἦλθε वह समुद्र के तीरे २ गया।

३। अधिक। ἁμαρτωλοὶ παρὰ πάντας सबसे बड़े पापी।

४। छोड़के। यथा παρ' ὃ παρελάβετε उस को छोड़के जो तुम ने पाया।

५। विरोध। παρὰ φύσιν स्वभाव के वि-
रुद्ध।

६। कारण। παρὰ τοῦτο इस कारण से।
जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके दो
अर्थ हैं

१। पास से। παρ' αὐτοῦ ἀκηκόαμ-
εν हमने उस से सुना है।

२। पास। οἱ παρ' αὐτοῦ उसके पास
के अर्थात् घरकेलोग। जब अधिकरण के सा-
थ आता है तब उस का अर्थ केवल निकट
ही है यथा παρ' ἐμοὶ मेरे निकट वामेरी
समझमे।

२८८। περί

का मूल अर्थ चारों ओर है यथा περιβ-
λεπ चारों ओर देखना περιχωρο चारों
ओर का देश। इस से अधिक का अर्थ
निकलता है यथा περιεργο जो अधिक·

काम करनेवाले περιλυπο अतिशोकित περικλυτο अतिश्रुत अर्थात् बहुत कीर्तिमान् ।

περι अलग होके कर्म और सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है।

जब कर्म वा अधिकरण के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं।

१। चारों ओर। τοὺς περὶ αὐτὸν καθημένους उन को जो उसके चारों ओर बैठे थे οἱ περὶ ἐμὲ मेरे संगी लोग τὸ περὶ ἐμὲ मेरी दशा।

२। लगभग। περὶ τὴν τρίτην ὥραν तीसरे घण्टे के लगभग।

३। विषय में। περὶ πάντα सब बातों के विषय में।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसका अर्थ प्राय विषय में है यथा περὶ οὗ γε-

γραπται जिसके विषय में लिखा है।
२८९। πρὸ
का मूल अर्थ आगे है। आप उस का अर्थ है आगे की ओर यथा προβα आगे जाना (इससे προβατο भेड़ निकलता है) προφα कढ़ निकालना। कभी २ अगले समय का अर्थ उस से है यथा προεπ आगे से कहना। कभी २ अधिक का अर्थ है यथा προαιρε एकवस्तु को दूसरे से अधिक लेना अर्थात् चुनना। कभी २ साम्हने का अर्थ है यथा προφαι नौ साम्हने दिखाई देता है। इस से उपकार का भी अर्थ निकलता है यथा προμαχ किसी के लिये लड़ना।
πρὸ अलग होके सम्बन्धी के साथ आता है और उसका अर्थ आगे है चाहे देश में यथा πρὸ προσωπου σου मेरे मुं-

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके आगे अर्थ हैं

१। निमित्त। ὑπέρ τινος προσεύχεσθαι किसी के लिये प्रार्थना करना।

२। स्थाने। ὑπέρ τινος ἀποθνήσκειν किसी की सन्ती मरना।

२९३। ὑπο

का मूल अर्थ नीचे है यथा ὑποταγ नीचे ठहराना वा वशीभूत करना ὑπομεν नीचे रह जाना अर्थात् भार को सह लेना। इससे गोपन का अर्थ निकलता है यथा ὑποκριν कपट करना ὑποβαλ गुप्तमें उभाड़ना। इस से धीरे २ करने का अर्थ निकलता है यथा ὑποπνευ धीरे २ बहना।

ὑπο अलग होके कर्म और सम्बन्ध और २ अधिकरण के साथ आता है।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय नीचे है यथा ὑπὸ τὴν συκῆν अंजीर के पेड़ तले। कभी २ समय यथा ὑπὸ τὸν ὄρθρον भोर को।
जब सम्बन्ध के साथ आता है तब प्राय परकर्त्तृक और अकर्म्मक क्रियाओं के कर्त्ता के साथ आता है यथा τὰ εἰρημένα ὑπὸ σου जो बातें तुझ से कही गयी हैं πάσχω ὑπ' αὐτοῦ मैं उस से दुःख उठाता हूं।
जब अधिकरण के साथ आता है तब उस का अर्थ नीचे है।

२९४। उपसर्गान्वित क्रियाओं का आगम प्राय उपसर्ग और क्रिया के मध्यही में आता है यथा ὑπετάγη वह वशीभूत किया गया। केवल जब निरे धातु का प्रयोग नहीं होता है तब आगम उपसर्ग

के पहिले ही आता है यथा ἐκάθευ-δον वे सोते थे।
अभ्यास सदा उपसर्ग और क्रिया के मध्य में आता है यथा διαμεμενηκότες लगातार रहे हुए।

षोडश अध्याय—और कितने अव्ययों का वर्णन।

२९५। १। ἅμα अधिकरण के साथ आता है।
२। ἄνευ ἄχρι μέχρι πέρα सम्बन्ध के साथ आते हैं।
३। ἄγχι πέλας सम्बन्ध वा अधिकरण के साथ आते हैं।
२९६। γάρ γέ δέ δή μέν τε वाक्य या उस के किसी अङ्ग के आदि में नहीं रा

सकते हैं। प्राय उस के पहिले ही शब्द के पीछे आते हैं।

२१८। Ἄν के विशेषकरके दो प्रकारके प्रयोग हैं।

१। वह सम्बन्धवाचक शब्दों के साथ आके उन को अधिक सँदेह वा अनिश्चयता का अर्थ देता है। यथा ὅς ἄν ἔχῃ वा ὅστις ἄν ἔχῃ जिस किसी के पास हो ὅταν ἔρχῃ जब कभी तू आवे οὗ ἄν ὦ जहां कहीं मैं होऊं ὡς ἄν βουλεύωμεν जिस किसी प्रकार से हम ठानें। इस प्रकार से ἐάν का भी कभी २ प्रयोग होता है।

२। वह लङ् वा १ वा २ लङ् वा लोङ् के कर्मभाव के साथ आके यह बताता है कि उक्त क्रिया होती वा होने नहीं

परन्तु यदि और कुछ होता तो वह भी होती यथा εἰ χθὲς ἤκουον τοῦτο, οὐκ ἂν ἐποίουν οὕτως यदि मैं कल यह सुनता तो ऐसा न करता ।

२९८। Ἤ सदा तरवर्थवाचक विशेषणों के पीछे आता है यथा οὐδὲν ἕτερον ἢ λέγειν τι कुछ कहने से कुछ भिन्न नहीं अर्थात् केवल कुछ कहना । इसी अर्थ में संज्ञा के सम्बन्धकारक का भी प्रयोग हो सकता है यथा σὺ εἶ δικαιότερος ἢ ἐγώ वा σὺ εἶ δικαιότερος ἐμοῦ तू मुझसे अधिक धर्मी है।

२९९। Καί के दो अर्थ हैं अर्थात् और। भी। जब उसका अर्थ है भी तब सदा उस शब्द के पहिलेही आता है जिससे विशेष सम्बन्ध रखता है यथा ἦμεν γάρ ποτε καὶ ἡμεῖς ἀνόητοι क्योंकि हम भी

हमी निर्देशिये ।

जब दो καὶ पास २ आते हैं तब उन का अर्थ है दोनों यथा καὶ ἡμεῖς καὶ ὑμεῖς हमभी और तुमभी।

३०० । Μὲν का प्रयोग केवल तबही होता है जब पीछे δέ आता है वा उस्का के म-न में है यथा τότε μὲν ἐδουλεύσατε εἰδώλοις· νῦν δὲ γνόντες Θεὸν κ. τ. λ. तब तो तुमने मूर्त्तिन की सेवा किई परन्तु अब ईश्वरको पहिचा-नके इत्यादि ।

३०१ । Μὴ और οὐ का केवल यही अन्त-र नहीं है जो मत और नहीं के बीच में है अर्थात् μη न केवल लोट्‌ भाव के साथ नहीं आताहै वरन जहां क-हीं अङ्गीकार का निश्चय नहीं है जहां

μὴ का प्रयोग होता है। यथा εἰ μὴ ἦλθον यदि मैं न आता ἵνα μὴ ἄκαρπος γένεται जिससे निष्फल न होवे।

सत्रहवां अध्याय — कितने विशेषणों का वर्णन।

३०२। Αὐτο जब समास में आता है तब उसका अर्थ आप है यथा αὐτοχειρ अपने हाथ से करने वाला αὐτοπτα अपनी आंख से देखने वाला। जब अलग आता है तब विशेष करके उसके कर्ता कारक में आप वही अर्थ है यथा αὐτὸς ἐγὼ मैं आप αὐτοὶ ὑμεῖς तुम आप αυτὸς ᾔδει τί ἤμελλε ποιεῖν वह

पहिले आताहै जहां नाम अकेला होता है परन्तु उसके पीछे जहां कहीं आवे जहां यह विशेषण उसके साथ आवेगा। फिर जब तात्पर्य है कि कोई पदार्थ एक ही है अथवा बहुतों में विशिष्ट है तब यह विशेषण उसके साथ आता है यथा ὁ ἥλιος सूर्य क्योंकि सूर्य एकही है θεός कोई देव परन्तु ὁ θεός मुख्य देव अर्थात ईश्वर। और जब विशेषण या क्रिया के विशेषणभाव के साथ आता है तब उस का अनुवाद हिन्दी में जो से होना आवश्यक है यथा ὁ ἐλεήμων यह जो दयावान है οἱ εὖ πράξαντες वे जिन्हों ने अच्छा काम किया।

१०७। इस विशेषण के अन्त में जब

δε आता है तब उस का अर्थ है यह। यथा τάδε ये बातें।

परिशिष्ट धातु।

KTIΔ बना।
ΛΕΠ छिलका निकाल। इसी से λεπτο पतला λεπρο´ कोढ़ी।
ΠΕΝ श्रमकर। इस से πονο श्रम πενητ श्रमी वा दरिद्र।

॥ समाप्तम् ॥

लिखितं पंडितजनार्दनजोषीशिः